उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XI

हिंदी

ऐच्छिक

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
© Department of Education, Government of Kerala

मित्रो,

संसार के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत की सबसे बड़ी भाषा है हिंदी। बोलनेवालों की संख्या में हिंदी को विश्व भाषाओं में तृतीय स्थान प्राप्त है। बदलते वक्त की नब्ज़ पकड़नेवाली यह भाषा रोज़गारी की पिपासा को शांत करती है, साथ ही विभिन्नता भरे देश को एकता के सूत्र में पिरो देने में मददगार साबित होती है। ग्यारहवीं कक्षा का हिंदी ऐच्छिक पाठ्यक्रम आठ सालों के बाद बदल रहा है। इसका हर पन्ना आपके किशोर वय के रंगीले सपनों को साकार करने में काम आएगा। विधाओं की गहनतम अभिव्यक्ति के लिए परिशिष्ट का भी सहारा लें। शिक्षा के क्षेत्र की नई-नई उपलब्धियों को समाहित करके हिंदी के साहित्यिक एवं व्यावहारिक रूपों की नितांत नूतन दृष्टि यह आपके सामने खड़ा करेगी। आशा करता हूँ, ये नए मुकुल आपके हाथों पल्लवित हो जाएँ।

डॉ पि. ए. फातिमा,

निदेशक,

राज्य शैक्षिक अनुसंधान

एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

Textbook Development Team

Members

Dr. Sasidharan Kuniyal
GHSS Palayad, Kannur

Dr. Pramod P
DB HSS Thakazhy, Alappuzha

Sreekumaran B
GHSS Parambil, Kozhikode

Dr. N I Sudheesh Kumar
BNV V&HSS Thiruvallam,
Thiruvananthapuram

Ullas Raj
HDPS HSS Edathirinji, Thrissur

Daniel V Mathew
MSM HSS, Chathinamkulam, Kollam

Dr. Binu D
GHSS Mangad, Kollam

Vidhu V L
GVGHSS Chittoor, Palakkad

Dr. Manju Vijayan
GHSS Kallachi, Kozhikode

Lalu Thomas
St. Xaviers HSS chemmannar, Idukki

Experts

Dr.V P Muhammed Kunju Mether
Prof. (Rtd) Institute of Distance Education, University of Kerala
Thiruvananthapuram.

Prof. M.S Jayamohan
Prof. (Rtd) University College,
Thiruvananthapuram.

Dr. H Parameswaran
Principal. (Rtd) University College,
Thiruvananthapuram.

Dr. B Asok
Head of the Department, Govt. Brennen College Thallassery.

Dr. K.G Chandra Babu
Prof. (Rtd) University College
Thiruvananthapuram.

Artist

Rajendran C.
AVGVHS, Thazhava, Kollam

Layout

Haridas M A
Irinjalakuda

Academic Co-ordinator

Dr. Rekha R Nair
Research Officer, SCERT

State Council of Educational Research and Training(SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram - 695 012.

पन्ने पलटने पर...

इकाई एक
उदय की दुंदुभि

- **कविता**

  एकलव्य — कीर्ति चौधरी — 8 - 10
- **कहानी**

  ईदगाह — प्रेमचंद — 11 - 34
- **निबंध**

  बुढ़ापा — पांडेय बेचनशर्मा उग्र — 35 - 44
- **संज्ञा** — 45
- **आदिकाल** — 46 - 48
- **शब्दार्थ** — 49

इकाई दो
नीति की वाणी

- **कविता**

  दोहे — कबीरदास — 51 - 53
- **कहानी**

  चीफ की दावत — भीष्म साहनी — 54 - 68
- **संस्मरण**

  महात्मा गाँधी — रामकुमार वर्मा — 69 - 77
- **सर्वनाम** — 78
- **निर्गुण भक्तिकाव्य** — 79 - 85
- **शब्दार्थ** — 86 - 87

इकाई तीन

आसरा की आशा

❍	**कविता**		
	पद	सूरदास	89 - 91
❍	**कविता**		
	तितली	सुमित्रानंदन पंत	92 - 94
❍	**एकांकी**		
	यहाँ रोना मना है	ममता कालिया	95 - 108
❍	**विशेषण**		109
❍	**सगुण भक्तिकाव्य**		110 - 112
❍	**शब्दार्थ**		113

इकाई चार

अलंकार की आभा

❍	**कविता**		
	दोहा	बिहारीलाल	115 - 116
❍	**कहानी**		
	एम. डॉट. कॉम	एस. आर. हरनोट	117 - 129
❍	**कविता**		
	नए इलाके में	अरुण कमल	130 - 133
❍	**क्रिया**		134
❍	**रीति काल**		135 - 136
❍	**शब्दार्थ**		137
❍	**परिशिष्ट**		138 - 150

इकाई एक

उदय की दुंदुभि

एकलव्य
ईदगाह
बुढ़ापा
संज्ञा
आदिकाल

अधिगम उपलब्धियाँ

- स्वातंत्र्योत्तर कविता की शैली एवं प्रवृत्तियाँ पहचानकर कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखता है।
- कविता का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।
- कविता का भावानुकूल आलाप करता है।
- प्रेमचंद की कहानी की विशेषताएँ समझकर भाषा प्रयोगों का वर्गीकरण करता है।
- कहानी का आस्वादन करके पात्रों का चरित्र-चित्रण करता है।
- कहानी का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- निबंध का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- अपना दृष्टिकोण तर्कसंगत प्रकट करके आलेख तैयार करता है और संगोष्ठी में प्रस्तुत करता है।
- बूढ़ों के प्रति हमदर्दी का भाव जाग उठता है।
- संज्ञा की प्रयोग संबंधी अवधारणा पाकर उनका वर्गीकरण करता है।
- आदिकालीन साहित्य पर चर्चा द्वारा अवधारणा पाकर टिप्पणी तैयार करता है।

कीर्ति चौधरी

जन्म	:	01 जनवरी 1934, नईमपुरगाँव (उत्तरप्रदेश)		
मृत्यु	:	13 जून 2008		
प्रमुख रचनाएँ	:	कविताएँ	:	क्यों, विगत, आगत का स्वागत, वक़्त, फूल झर गए, ऐसा क्यों होता है, प्यार की बातें, प्रतीक्षा, जीवन
		काव्य-संकलन	:	खुले हुए आसमान के नीचे, कीर्ति चौधरी की कविताएँ,
		कहानी-संग्रह	:	झुमझुमी
विशेषताएँ	:	* अभिव्यक्ति और शैली की सादगी		
		* तीसरा सप्तक में शामिल कवयित्री		
देन	:	जीवन के प्रति समन्वयात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण		

'तीसरा सप्तक' की कवयित्री कीर्ति चौधरी भारत की महान गुरु शिष्य परंपरा के कलंकित अध्याय 'एकलव्य की कथा' का पुनर्पाठ कर रही है। ***'एकलव्य'*** *कविता छोटी है, पर भाव तीखे हैं।*

एकलव्य

चाहा बस तुमने है!
दाहिना अंगूठा यह!
यह तो समर्पित था,
मेरा हर लक्ष्य-उपलक्ष्य,
उपकरण, साध्य-
चरणों में पहले से अर्पित था।
बाण यह किसीका,
प्रत्यंचा भी उसीकी थी।
हाथ ये किसीके,
इन हाथों की चंचल गति—यह भी उसीकी थी!
मैंने तो इनको निर्माल्य-सा चढ़ाया था।
लक्ष्य अगर बेधे थे,
बाण अगर साधे थे,
मानो उन चरणों पर चढ़े हुए पुष्पों को
बार-बार माथे से लगाया, सिर नवाया था।
सब था 'तुम्हारा'-
अरे, सब कुछ तुम्हारा।
तुम्हीं उससे अभिज्ञ रहे।
अथवा वह मेरा समर्पण सब झूठा था।
मेरी वह निष्ठा,
वह प्राणों की आकुल प्रतिष्ठा
जिसे अर्पित थी–
तुम थे नहीं!
सिर्फ माटी की मूरत
क्या माटी की मूरत थी!

'अथवा वह मेरा समर्पण सब झूठा था।' एकलव्य के मन में ऐसा संदेह क्यों उत्पन्न होता है?

अनुवर्ती कार्य

➤ **अपने अंतर्मन के संघर्ष को प्रकट करने के लिए एकलव्य सर्वनाम का ज़्यादा प्रयोग करते हैं। ऐसे प्रयोगों को छाँटकर लिखें।**

जैसेः तुमने, ...

➤ **समान भाववाला कवितांश चुनकर लिखें।**

* मेरा हर लक्ष्य और प्रयत्न पहले से ही तुम्हारे चरणों पर अर्पित था।
* आज मुझे लगता है कि मेरा सब समर्पण झूठा था।
* समर्पण केवल एक मिट्टी की मूर्ति के सामने था।
* बाण और प्रत्यंचा भी उसकी है।

➤ **गुरु के प्रति एकलव्य का समर्पण दिखानेवाले दो प्रसंग कविता से चुनकर लिखें।**

➤ **निम्नांकित सूचनाओं के आधार पर विश्लेषणात्मक टिप्पणी तैयार करें।**

* दाहिने अंगूठे का समर्पण।
* सारी क्षमताओं का गुरु-चरणों पर अर्पण।
* सारा समर्पण बेकार।

विश्लेषणात्मक टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *पंक्तियों का विश्लेषण किया है।*
- *अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है।*
- *पंक्तियों के विचार से अपने विचार की तुलना की है।*

प्रेमचंद

जन्म	:	31 जुलाई, 1880 वाराणसी, उत्तरप्रदेश		
मृत्यु	:	8 अक्तूबर 1936		
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास	-	गोदान, सेवासदन, गबन, कायाकल्प, प्रेमाश्रम, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, वरदान, प्रतिज्ञा
		कहानी-संग्रह	-	सप्तसरोज, नमक का दारोगा, प्रेम पचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम पूर्णिमा, सोजे वतन, समर यात्रा
		लेख	-	साहित्य का उद्‌देश्य, कहानी कला, हिंदी-उर्दु की एकता
विशेषताएँ	:	* हिंदी साहित्य का कहानी सम्राट * उपन्यास सम्राट * प्रगतिशील लेखक * संवेदनशील रचनाकार		
देन	:	रचनाओं में जनसाधारण की परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का चित्रण। भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की आवाज़।		

*प्रेमचंद कहानी को मानवसंस्कार का एक सशक्त माध्यम मानते थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में जहाँ एक ओर समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं विषमताओं पर करारा प्रहार किया है वहीं दूसरी ओर भारतीय जनजीवन की खोज भी की है। **ईदगाह** में भोले-भाले बालक-मन के चित्रण द्‌वारा प्रेमचंद ने मानवता को मुखरित किया है।*

ईदगाह

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है, मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसीके कुरते में बटन नहीं है। पड़ोस के घर से सुई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है। किसीके जूते कड़े हो गए हैं। उनमें तेल डालने के लिए तेली के घर भागा जाता है। जल्दी-जल्दी बैलों को सानी-पानी दे दें। ईदगाह से लौटते-लौटते दोपहर हो जाएगी। तीन कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। दोपहर के पहले लौटना असंभव है। लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। किसीने एक रोज़ा रखा है, वह भी दोपहर तक, किसीने वह भी नहीं; लेकिन ईदगाह जाने की खुशी उनके हिस्से की चीज़ है। रोज़े बड़े-बूढ़ों के लिए होंगे। उनके लिए तो ईद है। रोज़ ईद का नाम रटते थे। आज वह आ गई। जब जल्दी पड़ी है कि लोग ईदगाह क्यों नहीं चलते। इन्हें गृहस्थी की चिंताओं से क्या प्रयोजन! सेवैयों के लिए दूध और शक्कर घर में है या नहीं, इनकी बला से, वे तो सेवैयाँ खाएँगे। वह क्या जाने कि अब्बाजान क्यों बदहवास चौधरी कायमअली के घर दौड़े जा रहे हैं। उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए। उनकी अपनी जेबों में तो कुबेर का धन भरा हुआ है। बार बार

'सारी ईद मुहर्रम हो जाए' इससे क्या तात्पर्य है?

जेब से अपना खज़ाना निकालकर गिनते हैं और खुश होकर फिर रख लेते हैं। महमूद गिनता है – एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास एक, दो, तीन, आठ, नौ, पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनती पैसों में अनगिनती चीज़ें लाएँगे – खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या क्या। और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गई। किसीको पता न चला, क्या बीमारी है। कहती भी तो कौन सुननेवाला था। दिल पर जो कुछ बीतती थी, वह दिल में ही सहती थी और जब न सहा गया तो संसार से विदा हो गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है। उसके अब्बाजान रुपए कमाने गए हैं। बहुत-सी थैलियाँ लेकर आएँगे। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीज़ें लाने गई हैं; इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है, और फिर बच्चों की आशा! उनकी कल्पना तो राई को पर्वत बना लेती है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी-धुरानी टोपी है, जिसका गोट काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है। जब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आएँगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा। तब देखेगा महमूद, मोहसिन, नूरे और सम्मी कहाँ से उतने पैसे निकालेंगे। अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं! आज आबिद होता

हामिद के पाँव में जूते नहीं है, फिर भी हामीद प्रसन्न क्यों है?

तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती! इस अंधकार और निराशा में वह डूबी जा रही थी। किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को। इस घर में उसका काम नहीं है, लेकिन हामिद! उसे किसीके मरने-जीने से क्या मतलब? उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दल-बल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है–तुम डरना नहीं अम्माँ, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना!

अमीना का दिल कचोट रहा है, क्यों?

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद के बाप अमीना के सिवा और कौन है? उसे कैसे अकेले मेले जाने दे। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाए तो क्या हो। नहीं, अमीना उसे यों न जाने देगी। नन्ही-सी जान! तीन कोस चलेगा कैसे? पैर में छाले पड़ जाएँगे! जूते भी तो नहीं है। वह थोड़ी थोड़ी दूर पर उसे गोद ले लेगी; लेकिन यहाँ सेवैयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सब सामग्री जमा करके चटपट बना लेती। यहाँ तो घंटों चीज़ें जमा करते लगेंगे। माँगे ही का तो भरोसा ठहरा। उस दिन फहीमन के कपड़े सिए थे। आठ आने पैसे मिले थे। उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती। हामिद के लिए कुछ नहीं है तो दो पैसे का दूध तो चाहिए ही। अब तो कुल दो आने पैसे बच रहे हैं। तीन पैसे हामिद की जेब में, पाँच अमीना के बटुए में। यही तो बिसात है और ईद का त्योहार! अल्लाह ही बेड़ा पार लगावे। धोबन और

नाइन और मेहतरानी और चुड़िहारिन सभी तो आएँगी। सभी को सेवैयाँ चाहिए और थोड़ा किसीकी आँखों नहीं लगता। किस-किससे मुँह चुराएगी। और मुँह क्या चुराए? साल-भर का त्योहार है। ज़िंदगी खैरियत से रहे, उनकी तक़दीर भी तो उसीके साथ है। बच्चे को खुदा सलामत रखे, ये दिन भी कट जाएँगे।

अमीना के दिल की बेबसी क्या होगी?

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथवालों का इंतज़ार करते। ये लोग क्यों इतना धीरे-धीरे चल रहे हैं। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है! शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। पक्की चारदीवारी बनी हुई है। पेड़ों में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगता है। माली अंदर से गाली देता हुआ निकलता है। लड़के वहाँ से एक फर्लांग पर है। खुद हँस रहे हैं। माली को कैसे उल्लू बनाया है।

बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं; यह अदालत है, यह कॉलेज है, यह क्लब-घर है। इतने बड़े कॉलेज में कितने लड़के पढ़ते होंगे? सब लड़के नहीं हैं जी! बड़े बड़े आदमी हैं, सच उनकी बड़ी बड़ी मूँछें हैं। इतने बड़े हो गए, अभी तक पढ़ने जाते हैं। न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर। हामिद के मदरसे में दो-तीन बड़े बड़े लड़के हैं बिलकुल तीन कौड़ी के, रोज़ मार खाते हैं, काम से जी चुरानेवाले। इस जगह भी उसी तरह के लोग होंगे और क्या? क्लब-घर में जादू होता

हामिद ने रास्ते में क्या क्या दृश्य देखा?

है। सुना है, वहाँ मुरदे की खोपड़ियाँ दौड़ती हैं। और बड़े बड़े तमाशे होते हैं, पर किसीको अंदर नहीं जाने देते। और यहाँ शाम को साहब लोग खेलते हैं। बड़े बड़े आदमी खेलते हैं, मूँछों-दाढ़ीवाले और मेमें खेलती हैं, सच! हमारी अम्माँ को वह दे दो, क्या नाम है, बैट तो उसे पकड़ ही न सकें। घुमाते ही लुढ़क न जाएँ।

महमूद ने कहा–हमारी अम्मीजान का तो हाथ काँपने लगे, अल्ला कसम।

मोहसिन बोला –अम्मी मनों आटा पीस डालती हैं। ज़रा-सा बैट पकड़ लेंगी, तो हाथ काँपने लगे। सैकड़ों घड़े-पानी रोज़ निकालती हैं। पाँच घड़े तो मेरी भैंस पी जाती है। किसी मेम को एक घड़ा पानी भरना पड़े तो आँखों तले अँधेरा आ जाए।

महमूद–लेकिन दौड़तीं तो नहीं, उछल-कूद तो नहीं सकतीं।

मोहसिन – हाँ, उछल कूद नहीं सकतीं; लेकिन उस दिन मेरी गाय खुल गई थी और चौधरी के खेत में जा पड़ी थी, तो अम्माँ इतनी तेज़ दौड़ीं कि मैं उन्हें न पा सका, सच?

आगे चले। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुईं। आज खूब सजी हुई थीं। इतनी मिठाइयाँ कौन खाता है! देखो न, एक एक दुकान पर मनों होंगी। सुना है, रात को जिन्नात आकर खरीद ले जाते हैं। अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक आदमी हर दुकान पर जाता है और जितना माल बचा होता है, वह तुलवा लेता है और सचमुच के रुपए देता है, बिलकुल ऐसे ही रुपये।

हामिद को यकीन न आया – ऐसे रुपये जिन्नात

को कहाँ से मिल जाएँगे?

मोहसिन ने कहा — जिन्नात को रुपए की क्या कमी? जिस खज़ाने में चाहें, चले जाएँ। लोहे के दरवाज़े तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में। हीरे-जवाहरात तक उनके पास रहते हैं, जिससे खुश हो गए, उसे टोकरों जवाहरात दे दिए। अभी यहीं बैठे हैं, पाँच मिनट में कहो कलकत्ता पहुँच जाएँ।

हामिद ने फिर पूछा — जिन्नात बहुत बड़े-बड़े होते होंगे?

मोहसिन — एक एक आसमान के बराबर होता है जी। ज़मीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाए।

हामिद— लोग उन्हें खुश करते होंगे? कोई मुझे वह मंतर बता दे, तो एक जिन्न को खुश कर लूँ।

मोहसिन — अब वह तो मैं नहीं जानता, लेकिन चौधरी साहब के काबू में बहुत-से जिन्नात हैं। कोई चीज़ चोरी चली जाए, चौधरी साहब उसका पता लगा देंगे और चोर का नाम भी बता देंगे। जुमराती का बछवा उस दिन खो गया था। तीस दिन हैरान हुए, कहीं न मिला। तब झख मारकर चौधरी के पास गए। चौधरी ने तुरंत बता दिया कि मवेशीखाने में है, और वहीं मिला। जिन्नात आकर उन्हें सारे जहान की खबरें दे जाते हैं।

अब उसकी समझ में आ गया कि चौधरी के पास क्यों इतना धन है, और क्यों उनका इतना सम्मान है।

पैसेवालों को ही सम्मान मिलता है। हामिद के मन में ऐसा विचार क्यों आया होगा?

आगे चले। यह पुलिस लाइन है। यहीं सब कानस्टिबिल कवायद करते हैं। रैटन! फाय फो! रात को बेचारे घूम-घूमकर पहरा देते हैं, नहीं चोरियाँ हो

जाएँ। मोहसिन ने प्रतिवाद किया – यह कानस्टिबिल पहरा देते हैं? तभी तुम बहुत जानते हो। अजी हज़रत, यही चोरी कराते हैं। शहर के जितने चोर-डाकू हैं, सब इनसे मिले रहते हैं। रात को ये लोग चोरों से तो कहते हैं, चोरी करो और आप दूसरे मुहल्ले में जाकर 'जागते रहो! जागते रहो!' पुकारते हैं। तभी इन लोगों के पास इतने रुपए आते हैं। मेरे मामूँ एक थाने में कानस्टिबिल हैं। बीस रुपया महीना पाते हैं; लेकिन पचास रुपए घर भेजते हैं। अल्ला कसम। मैंने एक बार पूछा था कि मामूँ, आप इतने रुपए कहाँ से पाते हैं? हँसकर कहने लगे, बेटा, अल्लाह देता है। फिर आप ही बोले, लोग चाहें तो एक दिन में लाखों मार लाएँ। हम तो इतना ही लेते हैं, जिसमें अपनी बदनामी न हो और नौकरी न चली जाए।

हामिद ने पूछा – ये लोग चोरी करवाते हैं तो कोई इन्हें पकड़ता नहीं?

मोहसिन उसकी नादानी पर दया दिखाकर बोला - अरे पागल, इन्हें कौन पकड़ेगा। पकड़नेवाला तो यह खुद है, लेकिन अल्लाह इन्हें सज़ा भी खूब देता है। हराम का माल हराम में जाता है। थोड़े ही दिन हुए, मामूँ के घर में आग लग गई। सारी लेई-पूँजी जल गई। एक बर्तन तक न बचा। कई दिन पेड़ के नीचे सोए, अल्ला कसम, पेड़ के नीचे। फिर न जाने कहाँ से एक सौ कर्ज़ लाए तो बरतन-भाँडे आए।

'हराम का माल हराम में जाता है'
इससे तात्पर्य क्या है?

हामिद – एक सौ तो पचास से ज़्यादा होते हैं?
- कहाँ पचास कहाँ एक सौ। पचास एक थैली भर होता है। सौ तो दो थैलियों में भी न आवे।

अब बस्ती घनी होने लगी थी। ईदगाह जाने-

वालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के-ताँगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे, सभी के दिलों में उमंग। ग्रामीणों का यह छोटा-सा दल अपनी विपन्नता से बेखबर, संतोष और धैर्य में मग्न चला जा रहा था। बच्चों के लिए नगर की सभी चीज़ें अनोखी थीं। जिस चीज़ की ओर ताकते, ताकते ही रह जाते। और पीछे से बार बार हॉन की आवाज़ होने पर भी न चेतते। हामिद तो मोटर के नीचे आते आते बचा।

सहसा ईदगाह नज़र आया। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया। नीचे पक्का फर्श है, जिसपर जाजिम बिछा हुआ है। और रोज़ेदारों की पंक्तियाँ एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गई हैं, पक्के जगत के नीचे तक, जहाँ जाजिम भी नहीं हैं। नए आनेवाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। इस्लाम की निगाह में सब बराबर हैं। इन ग्रामीणों ने भी वजू किया और पिछली पंक्ति में खड़े हो गए। कितना सुंदर संचालन है, कितनी सुंदर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सब के सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ, और यही क्रम चलता रहा। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को

यहाँ कोई धन और पद नहीं देखता। प्रेमचंद की कौन-सी भावना यहाँ व्यक्त होती है?

एक लड़ी में पिरोए हुए हैं। नमाज़ खत्म हो गई है। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। तब मिठाई और खिलौने की दुकानों पर धावा होता है। ग्रामीणों का यह दल इस विषय में बालकों से कम उत्साही नहीं है। यह देखो, हिंडोला है। एक पैसा देकर चढ़ जाओ। कभी आसमान पर जाते हुए मालूम होंगे, कभी ज़मीन पर गिरते हुए! यह चर्खी है, लकड़ी के हाथी, घोड़े, ऊँट छड़ों से लटके हुए हैं। एक पैसा देकर बैठ जाओ और पच्चीस चक्करों का मज़ा लो। महमूद और मोहसिन और नूरे और सम्मी इन घोड़ों और ऊँटों पर बैठते हैं। हामिद दूर खड़ा है। तीन ही पैसे तो उसके पास हैं। अपने कोष का तिहाई ज़रा सा चक्कर खाने के लिए नहीं दे सकता।

हामिद दूर खड़ा है। क्यों?

सब चर्खियों से उतरते हैं। अब खिलौने लेंगे। इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह-तरह के खिलौने हैं – सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिश्ती और धोबिन और साधु। वाह! कितने सुंदर खिलौने हैं। अब बोला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ीवाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया। कमर झुकी है, ऊपर मशक रखे हुए हैं। मशक का मुँह एक हाथ से पकड़े हुए हैं। कितना प्रसन्न है। शायद कोई गीत गा रहा है। बस, मशक से पानी उँडेला ही चाहता है। नूरे को वकील से प्रेम है। कैसी विद्वता है उसके मुख पर! काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानून का पोथा लिए हुए। मालूम होता हे, अभी

किसी अदालत से जिरह या बहस किए चला आ रहा है। यह सब दो दो पैसे के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं; इतने महँगे खिलौने वह कैसे ले? खिलौना कहीं हाथ से छूट पड़े, तो चूर चूर हो जाए। ज़रा पानी पड़े तो सारा रंग धुल जाए। ऐसे खिलौने लेकर वह क्या करेगा; किस काम के!

मोहसिन – मेरा भिश्ती रोज़ पानी दे जाएगा; साँझ-सवेरे।

महमूद – और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा। कोई चोर आवेगा, तो फौरन बंदूक से फैर कर देगा!

नूरे – और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी - और मेरी धोबिन रोज़ कपड़े धोएगी।

हामिद खिलौनों की निंदा करता है - मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ, लेकिन ललचाई हुई आँखों से खिलौनों को देख रहा है और चाहता है कि ज़रा देर के लिए उन्हें हाथ में ले सकता। उसके हाथ अनायास ही लपकते हैं, लेकिन लड़के इतने त्यागी नहीं होते, विशेषकर जब अभी नया शौक है। हामिद ललचता रह जाता है।

खिलौने के बाद मिठाइयाँ आती हैं। किसीने रेवड़ियाँ ली हैं, किसीने गुलाबजामुन, किसीने सोहनहलुआ। मज़े से खा रहे हैं। हामिद उनकी बिरादरी से पृथक है। अभागे के पास तीन पैसे हैं। क्यों नहीं कुछ लेकर खाता? ललचाई आँखों से सबकी ओर देखता है।

मोहसिन कहता है – हामिद, रेवड़ी ले जा, कितनी खुशबूदार है।

हामिद को संदेह हुआ, यह केवल क्रूर विनोद

मिट्टी ही के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ– हामिद ऐसा क्यों कहता है?

है, मोहसिन इतना उदार नहीं है, लेकिन यह जानकर भी वह उसके पास जाता है। मोहसिन दोने से एक रेवड़ी निकालकर हामिद की ओर बढ़ाता है। हामिद हाथ फैलाता है। मोहसिन रेवड़ी अपने मुँह में रख लेता है। महमूद, नूरे और सम्मी खूब तालियाँ बजा बजाकर हँसते हैं। हामिद खिसिया जाता है।

मोहसिन – अच्छा, अबकी ज़रूर देंगे हामिद, अल्ला कसम, ले जाव।

हामिद – रखे रहो। क्या मेरे पास पैसे नहीं है?

सम्मी – तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसे में क्या क्या लोगे?

महमूद – हमसे गुलाबजामुन ले जाव हामिद। मोहसिन बदमाश है।

हामिद – मिठाई कौन बड़ी नेमत है। किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।

मोहसिन – लेकिन दिल में कह रहे होंगे कि मिले तो खा लें। अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

महमूद – हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे सारे पैसे खर्च हो जाएँगे, तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा।

तो हमें ललचा-ललचाकर खाएगा–बच्चों ने ऐसा क्यों कहा होगा?

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। कुछ गिल्ट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे खयाल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता

है; अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी? फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। घर में एक काम की चीज़ हो जाएगी। खिलौने से क्या फायदा? व्यर्थ में पैसे खराब होते हैं। ज़रा देर ही तो खुशी होती है। फिर तो खिलौनों को कोई आँख उठाकर नहीं देखता। या तो घर पहुँचते-पहुँचते टूट-फूट बरबाद हो जाएँगे, या छोटे बच्चे जो मेले में नहीं आए हैं, ज़िद करके ले लेंगे और तोड़ डालेंगे। चिमटा कितने काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग माँगने आवे तो चटपट चूल्हे से आग निकालकर उसे दे दो। अम्माँ बेचारी को कहाँ फुर्सत है कि बाज़ार आएँ, और इतने पैसे ही कहाँ मिलते हैं। रोज़ हाथ जला लेती हैं। हामिद के साथी आगे बढ़ गए हैं। सबील पर सब के सब शर्बत पी रहे हैं। देखो, सब कितने लालची हैं। इतनी मिठाइयाँ लीं, मुझे किसीने एक भी न दी। उसपर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। मेरा यह काम करो। अब अगर किसीने कोई काम करने को कहा, तो पूछूँगा। खाएँ मिठाइयाँ, आप मुँह सड़ेगा, फोड़े-फुसियाँ निकलेंगी, आप ही ज़बान चटोरी हो जाएगी। तब घर के पैसे चुराएँगे और मार खाएँगे। किताब में झूठी बातें थोड़े ही लिखी हैं। मेरी ज़बान क्यों खराब होगी? अम्माँ चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी – मेरा बच्चा अम्माँ के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी, हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआएँ

हामिद लोहे की दुकान पर क्यों रुक गया?

देगा। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, और तुरंत सुनी जाती हैं। मेरे पास पैसे नहीं हैं। तभी तो मोहसिन और महमूद यों मिज़ाज दिखाते हैं। मैं भी इनसे मिज़ाज दिखाऊँगा। खेलें खिलौने और खाएँ मिठाइयाँ। मैं नहीं खेलता खिलौने, किसीका मिज़ाज क्यों सहूँ। मैं गरीब सही, किसीसे कुछ माँगने तो नहीं जाता। आखिर अब्बाजान कभी न कभी आएँगे। अम्माँ भी आएँगी ही। फिर इन लोगों से पूछूँगा कितने खिलौने लोगे? एक एक को टोकरियों खिलौने दूँ और दिखा दूँ कि दोस्तों के साथ इस तरह सलूक किया जाता है। यह नहीं कि एक पैसे की रेवड़ियाँ लीं तो चिढ़ा-चिढ़ाकर खाने लगे। सब के सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है। हँसें। मेरी बला से। उसने दुकानदार से पूछा — यह चिमटा कितने का है?

बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं, इसका मतलब क्या है?

दुकानदार ने उसकी ओर देखा और कोई आदमी साथ न देखकर कहा —यह तुम्हारे काम का नहीं है जी।

- बिकाऊ क्यों नहीं है? और यहाँ क्यों लाद लाए हैं?
- बिकाऊ है, क्यों नहीं?
- तो बताते क्यों नहीं, कै पैसे का है?
- छै पैसे लगेंगे।

हामिद का दिल बैठ गया।

- ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे, लेना हो लो, नहीं चलते बनो।

हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा - तीन पैसे लोगे?

वह कहता हुआ आगे बढ़ गया कि दुकानदार

की घुड़कियाँ न सुने। लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दीं। बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक है और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। ज़रा सुनें, सब के सब क्या क्या आलोचनाएँ करते हैं।

मोहसिन ने हँसकर कहा — यह चिमटा क्यों लाया पगले; इसे क्या करेगा?

हामिद ने चिमटे को ज़मीन पर पटककर कहा — ज़रा अपना भिश्ती ज़मीन परे गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर-चूर हो जाएँ बच्चू की।

महमूद बोला — तो यह चिमटा कोई खिलौना है?

हामिद — खिलौना क्यों नहीं? अभी कंधे पर रखा, बंदूक हो गई। हाथ में लिया, फकीरों का चिमटा हो गया। चाहूँ तो इससे मजीरे का काम ले सकता हूँ। एक चिमटा जमा दूँ तो तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाए। तुम्हारे खिलौने कितना ही ज़ोर लगावें, वे मेरे चिमटे का बाल भी बाँका नहीं कर सकते। मेरा बहादुर शेर है - चिमटा।

हामिद ने चिमटे को खिलौना कैसे साबित किया?

सम्मी ने खँजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला - मेरी खँजरी से बदलेंगे? दो आने की है।

हामिद ने खँजरी की ओर उपेक्षा से देखा — मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खँजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी, ढब-ढब बोलने लगी। ज़रा-सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, तूफान में बराबर डटा खड़ा रहेगा।

चिमटे ने सभी को मोहित कर लिया; लेकिन अब

पैसे किसके पास धरे हैं; फिर मेले से दूर निकल आए हैं, नौ कब के बज गए, धूप तेज़ हो रही है। घर पहुँचने की जल्दी हो रही है। बाप से ज़िद भी करें, तो चिमटा नहीं मिल सकता है। हामिद है बड़ा चालाक। इसीलिए बदमाश ने अपने पैसे बचा रखे थे।

हामिद है बड़ा चालाक- दूसरे बच्चों ने क्यों ऐसा सोचा?

अब बालकों के दो दल हो गए हैं। मोहसिन, महमूद, सम्मी और नूरे एक तरफ हैं, हामिद अकेला दूसरी तरफ। शास्त्रार्थ हो रहा है। सम्मी तो विधर्मी हो गया। दूसरे पक्ष से जा मिला; लेकिन मोहसिन, महमूद और नूरे भी, हामिद से एक एक, दो दो साल बड़े होने पर भी हामिद के आघातों से आतंकित हो उठे हैं। उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति। एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लोहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है। वह अजेय है, घातक है। अगर कोई शेर आ जाए, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बंदूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चोगे में मुँह छिपाकर ज़मीन पर लेट जाएँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे हिंद लपककर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा।

मोहसिन ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाकर कहा - अच्छा, पानी तो नहीं भर सकता।

हामिद ने चिमटे को सीधा खड़ा करके कहा - भिश्ती को एक डाँट बताएगा, तो दौड़ा हुआ पानी लाकर उसके द्वार पर छिड़कने लगेगा।

मोहसिन परास्त हो गया; पर महमूद ने कुमक पहुँचाई – अगर बच्चा पकड़ा जाए तो अदालत में बँधे

- बँधे फिरेंगे। तब तो वकील साहब के ही पैरों पड़ेंगे।

हामिद इस प्रबल तर्क का जवाब न दे सका। उसने पूछा – हमें पकड़ने कौन आएगा?

नूरे ने अकड़कर कहा – यह सिपाही बंदूक वाला।

हामिद ने मुँह चिढ़ाकर कहा - यह बेचारे हम बहादुर रुस्तमे-हिंद को पकड़ेंगे! अच्छा लाओ, अभी ज़रा कुश्ती हो जाए। इसकी सूरत देखकर दूर से भागेंगे। पकड़ेंगे क्या बेचारे!

मोहसिन को एक नई चोट सूझ गई – तुम्हारे चिमटे का मुँहे रोज़ आग में जलेगा।

उसने समझा था कि हामिद लाजवाब हो जाएगा; लेकिन यह बात न हुई। हामिद ने तुरंत जवाब दिया - आग में बहादुर ही कूदते हैं जनाब, तुम्हारे यह वकील, सिपाही और भिश्ती लौंड़ियों की तरह घर में घुस जाएँगे। आग में कूदना वह काम है, जो रुस्तमे-हिंद ही कर सकता है।

आग में कूदना वह काम है, जो रुस्तमे-हिंद ही कर सकता है - हामिद ने ऐसा क्यों कहा?

महमूद ने एक ज़ोर लगाया – वकील साहब कुरसी-मेज़ पर बैठेंगे, तुम्हारा चिमटा तो बावरचीखाने में ज़मीन पर पड़ा रहेगा।

इस तर्क ने सम्मी और नूरे को भी सजीव कर दिया। कितने ठिकाने की बात कही है पट्टे ने। चिमटा बावरचीखाने में पड़े रहने के सिवा और क्या कर सकता है?

हामिद को कोई फड़कता हुआ जवाब न सूझा तो उसने धाँधली शुरू की - मेरा चिमटा बावरचीखाने में नहीं रहेगा। वकील साहब कुरसी पर बैठेंगे तो जाकर

उन्हें ज़मीन पर पटक देगा और उनका कानून उनके पेट में डाल देगा।

बात कुछ बनी नहीं। खासी गाली गलौच थी; कानून को पेट में डालनेवाली बात छा गई। ऐसी छा गई थी कि तीनों सूरमा मुँह ताकते रह गए, मानो कोई धेलचा कनकौआ किसी गंडेवाले कनकौए को काट गया हो। कानून मुँह से बाहर निकलनेवाली चीज़ है। उसको पेट के अंदर डाल दिया जावे, बेतुकी-सी बात होने पर भी कुछ नयापन रखती है। हामिद ने मैदान मार लिया। उसका चिमटा रुस्तमे-हिंद है। अब इसमें मोहसिन, महमूद, नूरे, सम्मी किसीको भी आपत्ति नहीं हो सकती।

'विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। इससे क्या तात्पर्य है?

विजेता को हारनेवालों से जो सत्कार मिलना स्वाभाविक है, वह हामिद को भी मिला। औरों ने तीन-तीन, चार-चार आने पैसे खर्च किए; पर कोई काम की चीज़ न ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा लिया। सच ही तो है, खिलौनों का क्या भरोसा? टूट-फूट जाएँगे। हामिद का चिमटा बना रहेगा बरसों।

संधि की शर्त तय होने लगी। मोहसिन ने कहा – ज़रा अपना चिमटा दो, हम भी देखें, तुम हमारा भिश्ती लेकर देखो।

महमूद और नूरे ने भी अपने-अपने खिलौने पेश किए।

हामिद को इन शर्तों के मानने में कोई आपत्ति न थी। चिमटा बारी-बारी से सबके हाथ में गया, और उनके खिलौने बारी-बारी से हामिद के हाथ में आए। कितने खूबसूरत खिलौने हैं?

हामिद ने हारनेवाले के आँसू पोंछे – मैं तुम्हें

चिढ़ा रहा था, सच। यह लोहे का चिमटा भला इन खिलौनों की क्या बराबरी करेगा; मालूम होता है, अब बोले, अब बोले।

लेकिन मोहसिन की पार्टी को इस दिलासे से संतोष नहीं होता। चिमटे का सिक्का खूब बैठ गया है। चिपका हुआ टिकट अब पानी से नहीं छूट रहा है।

मोहसिन – लेकिन इन खिलौनों के लिए कोई हमें दुआ तो न देगा।

महमूद – दुआ को लिए फिरते हो। उलटे मार न पड़े। अम्माँ, ज़रूर कहेंगी कि मेले में मिट्टी के खिलौने तुम्हें मिले?

हामिद को स्वीकार करना पड़ा कि खिलौनों को देखकर किसीकी माँ इतनी खुश न होंगी, जितनी दादी चिमटे को देखकर होंगी। तीन पैसों ही में तो उसे सब कुछ करना था, और उन पैसों के इस उपयोग पर पछतावे की बिलकुल ज़रूरत न थी। फिर अब तो चिमटा रुस्तमे-हिंद है और सभी खिलौनों का बादशाह।

रास्ते में महमूद को भूख लगी। उसके बाप ने केले खाने को दिए। महमूद ने केवल हामिद को साझी बनाया। उसके अन्य मित्र मुँह ताकते रह गए। यह उस चिमटे का प्रसाद था।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गई। मेलेवाले आ गए। मोहसिन की छोटी बहन ने दौड़कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली, तो मियाँ भिश्ती नीचे आ गिरे और सुरलोक सिधारे। इसपर भाई-बहन में मार-पीट हुई। दोनों खूब रोए। उनकी अम्माँ यह शोर सुनकर बिगड़ीं और दोनों को ऊपर से दो दो चोटें और लगाए।

मोहसिन की पार्टि को इस दिलासे से संतोष नहीं होता-क्यों?

मियाँ नूरे के वकील का अंत उसकी प्रतिष्ठानुकूल इससे ज़्यादा गौरवमय हुआ। वकील ज़मीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो रखना ही होगा। दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं। उनपर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज़ का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो। कानून की गर्मी दिमाग पर चढ़ जाएगी कि नहीं। बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े ज़ोर-ज़ोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूर पर डाल दी गई।

'वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर विराजे' - प्रेमचंद ने ऐसा क्यों कहा होगा?

अब रहा महमूद का सिपाही। उसे चटपट गाँव का पहरा देने का चार्ज मिल गया, लेकिन पुलिस का सिपाही कोई साधारण व्यक्ति तो था नहीं, जो अपने पैरों चले। वह पालकी पर चलेगा। एक टोकरी आई, उसमें कुछ लाल रंग के फटे पुराने चिथड़े बिछाए गए, जिसमें सिपाही साहब आराम से लेटे। नूरे ने यह टोकरी उठाई और अपने द्वार का चक्कर लगाने लगे। उनके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ से 'छोने वाले जागते लहो' पुकारते चलते हैं। मगर रात तो अँधेरी ही होनी चाहिए। महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है और मियाँ सिपाही अपनी बंदूक लिए ज़मीन पर आ जाते हैं, और उनकी एक टाँग

में विकार आ जाता है। महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह अच्छा डॉक्टर है। उसको ऐसा मरहम मिल गया है, जिससे वह टूटी टाँग को आनन-फानन जोड़ सकता है। केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है। टाँग जोड़ दी जाती है, लेकिन सिपाही को ज्यों ही खड़ा किया जाता है, टाँग जवाब दे जाती है। शल्यक्रिया असफल हुई, तब उसकी दूसरी टाँग भी तोड़ दी जाती है। अब कम से कम एक जगह आराम से बैठ तो सकता है। एक टाँग से तो न चल सकता था, न बैठ सकता था। अब वह सिपाही संन्यासी हो गया है। अपनी जगह पर बैठा-बैठा पहरा देता है। कभी कभी देवता भी बन जाता है। उसके सिर का झालरदार साफा खुरच दिया गया है। अब उसका जितना रूपांतर चाहो, कर सकते हो। कभी कभी तो उससे बाट का काम भी लिया जाता है।

महमूद को कैसे ज्ञान हुआ कि वह अच्छा डॉक्टर है?

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिए। अमीना उसकी आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

- यह चिमटा कहाँ था?
- मैंने मोल लिया है।
- कै पैसे में?
- तीन पैसे दिए।

अमीना ने छाती पीट ली। वह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया। लाया क्या वह चिमटा। सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा – तुम्हारी

उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया, और स्नेह भी वह नहीं, जो प्रगल्भ होता है और अपनी सारी कसक शब्दों में बिखेर देता है। यह मूक स्नेह था, खूब ठोस, रस और स्वाद से भरा हुआ। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर उसका मन कितना ललचाया होगा। इतना जब्त इससे हुआ कैसे? वहाँ भी उसे अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गद्‌गद हो गया।

और अब एक बड़ी विचित्र बात हुई। हामिद के इस चिमटे से भी विचित्र। बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई। वह रोने लगी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

'बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया'- क्यों?

अनुवर्ती कार्य

➤ **कहानी से मुहावरे और लोकोक्तियाँ चुनकर नए संदर्भ में उनका प्रयोग करें।**

➤ **कहानी से बीस विदेशी शब्द छाँटकर उनका समानार्थी हिंदी शब्द लिखें।**

➤ **निम्नांकित कथन कहानी के किस पात्र का है?**

(हामिद, अमीना, मोहसिन, महमूद, सम्मी, नूरे)

* उसे कैसे अकेले मेले जाने दें।
* न जाने कब तक पढ़ेंगे और क्या करेंगे इतना पढ़कर?
* ऐसे रुपए जिन्नात को कहाँ से मिल जाएँगे?
* ज़मीन पर खड़ा हो जाए तो उसका सिर आसमान से जा लगे।
* एक सौ तो पचास से ज़्यादा होते हैं?
* कोई चोर आवेगा, तो फौरन बंदूक से फैर कर देगा!
* मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।
* तीन ही पैसे तो हैं। तीन पैसों में क्या क्या लोगे?
* तो यह चिमटा कोई खिलौना है?
* सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली?
* तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।

➤ **निम्नांकित संकेतों को विकसित करके हामिद के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।**

- * क्षणिक सुख न चाहनेवाला
- * दृढ़चित्त
- * सहानुभूतिवाला
- * परिपक्व व्यवहार

टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- ◆ *चरित्र पर प्रकाश डालनेवाले संवादों का विश्लेषण किया है।*
- ◆ *चरित्र की विशेषता समझी है।*
- ◆ *विशेषताओं के आधार पर टिप्पणी लिखी है।*
- ◆ *चरित्र की विशेषताओं का समर्थन अपने दृष्टिकोण से किया है।*

➤ *'बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई।'*- माँ और बेटे का संभावित वार्तालाप तैयार करें।

वार्तालाप की परख, मेरी ओर से

- ◆ *प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति है।*
- ◆ *स्वाभाविक शुरुआत है।*
- ◆ *प्रश्नोत्तर शैली है।*
- ◆ *प्रवाहमयता है।*
- ◆ *कल्पना है।*
- ◆ *स्वाभाविक अंत है।*

पांडेय बेचनशर्मा उग्र

जन्म	:	सन् 1900 ई. मिर्ज़ापुर, उत्तरप्रदेश		
मृत्यु	:	सन् 23 मार्च 1967		
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास	-	चंद हसीनों के खतूत, दिल्ली का दलाल, शराबी, बुधुवा की बेटी, सरकार तुम्हारी आँखों में, कढ़ी में कोयला
		नाटक	-	महात्मा ईसा, चुंबन, गंगा का बेटा
		काव्य	-	ध्रुवचरित
		आलोचना	-	तुलसीदास
		निबंध	-	क्या यह सच है, कसौटी, चाकलेट आंदोलन, चाबुक, उग्र को फाँसी दी जाए, विप्लव-गान
		कहानियाँ	-	जल्लाद, भ्रम, विकास, मुक्ता, सुधारक
विशेषताएँ	:	* क्रांतिकारी एवं राष्ट्रवादी कवि। * मतवाला, स्वदेश आदि पत्रिकाओं के संपादक मंडल में सदस्य।		
देन	:	साहित्य द्वारा तत्कालीन परिस्थितियों को बदलने का आह्वान।		

बुढ़ापा *में लेखक ने व्यंग्यात्मक चुटीली भाषा में मनुष्य जीवन को समझने की कोशिश की है। जीवन को एक आध्यात्मिक प्रश्न मानकर भारतीय दर्शन में अत्यंत ही गूढ़ विवेचन-विश्लेषणों के साथ उपस्थित किया है।*

बुढ़ापा

लेखक जीवन को क्यों सफेद झूठ मानते हैं ?

लड़कपन के खो जाने पर उन्मत जवानी फूल-फूलकर हँस रही थी, बुढ़ापे के पाने पर फूट-फूटकर रो रही है। उस 'खोने' में दुःख नहीं, सुख था; सुख ही नहीं, स्वर्ग भी था। इस 'पाने' में सुख नहीं है; दुःख ही नहीं, नरक भी है! लड़कपन का खोना – वाह! वाह! बुढ़ापे का पाना – हाय! हाय!

लड़कपन स्वर्ग सरलता से कहता था - 'मैया, मैं तो चंद्र-खिलौना लैहौं।'

कौन कहता है कि जीवन का अर्थ उत्थान है, सुख है, 'हा-हा-हा-हा' है? यह सब सफ़ेद झूठ है, कोरी कल्पना है, धोखा है, प्रवंचना है। मुझसे पूछो। मेरे तीन सौ पैंसठ लंबे-लंबे दिनों और लंबी-लंबी रातोंवाले - एक, दो, दस, बीस नहीं – साठ वर्षों से पूछो। वे तुम्हें दुनिया के बालकों और जवानों को, बतलाएँगे कि जीवन का अर्थ 'वाह' नहीं, 'आह' है, हँसी नहीं, रुदन है, स्वर्ग नहीं, नरक है!

लड़कपन ने पंद्रह वर्षों तक घोर तपस्या कर पाया – जवानी के रूप में सर्वनाश, पतन! जवानी ने बीस वर्षों तक कभी धन के पीछे, कभी रूप के पीछे, कभी यश के पीछे, कभी मान के पीछे दौड़ लगाकर क्या हासिल किया – वार्धक्य के लिफाफे में सर्वनाश, पतन और...,और..., अब वह बुढ़ापा घंटों नाक दबाकर, ईश्वर भजन कर, सिद्धियों की साधना में दत्तचित्त होकर, खनन का खज़ाना इकट्ठा कर, बेटों की 'बटालियन'

और बेटियों की 'बैटरी' तैयार कर कौन-सी बड़ी विभूति अपनी मुट्ठी में कर लेगा? वही सर्वनाश, वही पतन? मुझसे पूछो, मैं कहता हूँ — और छाती ठोककर कहता हूँ — जीवन का अर्थ है — 'प...त...न!'

रोज़ की बात है। तुम भी देखते हो, मैं भी देखता हूँ, दुनिया भी देखती है। प्रातः काल उदयाचल के मस्तक पर शोभित दिनमणि कैसा प्रसन्न रहता है। सुंदरी उषा से होली खेल-खेलकर गंगा की बेला को, तरंगों को, मंद मलयानिल को, नीलांबर को, दसों दिशाओं को और भगवती प्राची के अंचल को उन्माद से, प्रेम से और गुलाबी रंग से भर देता है। अपने आगे दुनिया का नाच देखते-देखते मूर्ख दिवाकर भी उसी रंग से रंगकर वहीं नाच नाचने लगता है। जीवन का अर्थ सुख और प्रसन्नता में देखने लगता है। मगर...मगर...?

जीवन का अर्थ सुख और प्रसन्नता में है। क्यों ऐसा कहा गया है?

रोज़ की बात है। तुम भी देखते हो, मैं भी देखता हूँ, दुनिया भी देखती है। सायंकाल अस्ताचल की छाती पर पतित मूर्छित दिनमणि कैसा अप्रसन्न, निर्जीव रहता है वह गुलाबी लड़कपन नहीं, वह चमकती-दमकती गरम जवानी नहीं, वह ढलता हुआ — कंपित करोंवाला व्यक्ति बुढ़ापा भी नहीं। श्री नहीं, तेज नहीं, ताप, शक्ति नहीं! उस समय सूर्य को उसकी दिनभर की घोर तपस्या, रसदान, प्रकाशदान का क्या फल मिलता है? सर्वनाश, पतन! उस पार-क्षितिज के चरणों के निकट, समुद्र की हाहामयी तरंगों के पास—पतित सूर्य की रक्त-चिता जलती है। माथे पर सायंकाल-रूपी काला चंडाल खड़ा रहता है। प्राची की अभागिनी बहिन पश्चिमी 'आग' देती है। दिशाएँ व्यथित रहती हैं, खून

के आँसू बहाती रहती हैं। प्रकृति में भयानक गंभीरता भरी रहती है। पतित सूर्य की चिंता की लाली से अनंत ओतप्रोत रहता है।

उस समय देखनेवाले देखते हैं, ज्ञानियों को ज्ञान होता है कि जीवन का असली अर्थ और कुछ नहीं, केवल सर्वनाश है।

कोरी बातों में दार्शनिक विचार रखनेवालों की कमी नहीं। कमी होती कर्मियों की, बातों के दायरे से आगे बढ़नेवालों की।

जीवन का अर्थ सर्वनाश या पतन है, यह कह देना सरल है। दो-चार उदाहरण देकर अपनी बात की पुष्टि कर देना भी कोई बड़ी बात नहीं; पर पतन या सर्वनाश को आखों के सामने रखकर जीवन-यात्रा में अग्रसर होना केवल दुरूह ही नहीं, असंभव भी है।

लड़कों ने बूढ़े लेखक को क्यों किष्किंधावासी पुकारा?

उस दिन गली पार कर रहा था कि कुछ दुष्ट लड़कों की नज़र मुझपर पड़ी। उनमें से एक ने कहा - – 'हट जाओ, हट जाओ! हनुमानगढ़ी से भागकर यह जानवर इस शहर में आया है। क्या अजीब शक्ल पाई है? पूरा किष्किंधावासी मालूम पड़ता है।'

बस बात लग गई। बूढ़े हो जाने से ही इंसान बंदर हो जाता है? इतना अपमान? बूढ़ों की ऐसी अप्रतिष्ठा झुकी हुई कमर को कुबड़ी के सहारे सीधी कर मैंने उन लड़कों से कहा – 'नालायको! आज कमर झुक गई है। आज आँखें कम देखने और कान कम सुनने के आदी हो गए हैं। आज दुनिया की तस्वीरें भूले हुए स्वप्न की तरह झिलमिल दिखाई दे रही हैं। आज विश्व की रागिनी अतीत की प्रतिध्वनि की तरह

अस्पष्ट सुनाई पड़ रही है; मगर हमेशा यही हालत नहीं थी।

अभी छोकरे हो, लौंडे हो, बच्चे हो, नादान हो, उल्लू हो। तुम क्या जानो कि संसार परिवर्तनशील है। तुम क्या जानो कि प्रत्येक बालक अगर जीवित रहा तो जवान होता है, और प्रत्येक जवान अगर जल्द न हो गया, तो एक न एक दिन 'हनुमानगढ़ी का जानवर' होता है। लड़कपन और जवानी के हाथों बुढ़ापे पर जैसे अत्याचार होते हैं, यदि वैसे ही अत्याचार बुढ़ापा भी उन पर करने लगे तो ईश्वर की सृष्टि की इति हो जाए; बच्चे जन्म से ही मार डाले जाएँ, लड़के होश संभालते ही अपना पेट पालने के लिए घर से बाहर निकाल दिए जाएँ। संसार से दादा के माल पर फ़ातिहा पढ़ने की प्रथा ही उठ जाए।

आज भी सौ में से निन्यानबे धनी अपने बापों की कृपा से गद्दीदार बने हुए हैं। अब भी हज़ार में नौ साढ़े निन्यानबे शौकीन जवानों के भड़कीले कपड़ों के दाम, कंघी शीशे, आटो, लवेंडर, सोप, पालिश और शराब की बोतलों के पैसे बूढ़ों की गाढ़ी कमाई की थैली से निकलते हैं। अब भी संसार में दया, प्रेम, करुणा और मनुष्यता की खेती में पानी देनेवाला, कमज़ोर हृदयवाला बुढ़ापा ही है, बेवकूफ़ लड़कपन नहीं, मतवाली जवानी नहीं...। फिर बूढ़ों का इतना अपमान क्यों? बुढ़ापे के प्रति ऐसी अश्रद्धा क्यों?'

मगर उन लड़कों के कान तक मेरी दुहाई की पहुँच न हो सकी। सबने एक स्वर में ताली से ताली बज़ा-बजाकर, मेरी बातों की चिड़ियों को हवा में उड़ा दिया।

बूढ़े हो जाने से इंसान बंदर हो जाता है– तात्पर्य क्या है?

'भागो! भागो! हनुमानजी खाँव-खाँव कर रहे हैं। ठहरोगे तो किट किटाकर टूट पड़ेंगे, नोच खाने पर उतारू हो जाएँगे।'

लड़के 'हू-हू', 'हो-हो' करते भाग खड़े हुए। मैं मुग्ध की तरह उनके अल्हड़पन और अज्ञान की ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखता ही रह गया। उस समय एकाध मुझे उस सुंदर स्वप्न की याद आई, तो मैंने आज से युगों पूर्व लड़कपन और यौवन के सम्मेलन के समय देखा था। कैसा मधुर था वह स्वप्न!

लेखक क्यों जुआ खेलने को तैयार होता है?

एक बार जुआ खेलने को जी चाहता है। संसार बुरा कहे या भला परवाह नहीं। दुनिया मेरी हालत पर हँसे या चाहे जो करे – कोई चिंता नहीं। कोई खिलाड़ी हो तो सामने आए। मैं जुआ खेलूँगा।

एक बार जुआ खेलने को जी चाहता है। जी चाहता है – एक ओर मेरा साठ वर्षों का अनुभव हो, मेरे सफेद बाल हों, झुर्रीदार चेहरा हो, काँपते हाथ हों, झुकी कमर हो, मुर्दा दिल हो, निराश हृदय हो, मेरी जीवनभर की गाढ़ी कमाई हो। सैकड़ों वर्षों के प्रत्येक सन् के हज़ार-हज़ार रुपए, लाख-लाख गिन्नियाँ और गड्ड़ियों नोट एक ओर हों, मैं पासे फेंकने को तैयार हूँ। सब कुछ देकर जवानी लेने को राजी हूँ। कोई हकीम हो सामने आए, उसे निहालन कर दूँगा। मैं बुढ़ापे के रोग से परेशान हूँ – जवानी की दवा चाहता हूँ। कोई डॉक्टर हो तो आगे बढ़े, मुँहमाँगा दूँगा!

हर साल वसंत आता है। बूढ़ा रसाल माथे पर और धारणकर ऋतुराज के दरबार में खड़ा होकर झूमता है। सौरभ-संपन्न शीतल समीर मंदगति से प्रकृति

के कोने-कोने में उन्माद भरता है। कोयल मस्त होकर 'कुहू-कुहू' करने लगती है। मुहल्ले-टोले के हँसते हुए गुलाब – नवयुवक – उन्माद की सरिता में सब कुछ भूलकर, विहार करने लगते हैं, खिलखिलाते हैं, धमा - चौकड़ी मचाते हैं, चूमते हैं, चुंबित होते हैं, लिपटते हैं, लिपटाते हैं – दुनिया के पतन को, उत्थान को और सर्वनाश को मंगल का जामा पहनाते हैं। और मैं – टका-सा मुँह लिए, कोरी आँखों तथा निर्जीव हृदय से इस लीला को टुकुर-टुकुर देखा करता हूँ।

उस समय मालूम पड़ता है, बुढ़ापा ही नरक है!

इस नरक से कोई मुझे बाहर कर दे, युवा बना दे। मैं आजन्म गुलामी करने को तैयार हूँ। बुढ़ापे की बादशाही से जवानी की गुलामी करोड़ दर्जा अच्छी है – हाँ-हाँ करोड़ दर्जा अच्छी है। मुझसे पूछो, मैं जानता हूँ, मैं भुक्तभोगी हूँ, मुझपर बीत रही है।

लेखक आजन्म गुलामी भोगने को क्यों तैयार होता है?

कोई यदि हो, तो इस बूढ़े की सहायता करें मैं मरने के पहले एक बार फिर उन आँखों को चाहता हूँ, जिन्हें बात-बात में उलझने, लगने, चार होने और फँसने का स्वर्गीय रोग होता है। इच्छा है, एक बार फिर किसी के प्रेम में फँसकर गाऊँ। एक बार फिर किसी मनमोहन को हृदय-दान देकर, बैठे-बिठाए दुनिया की दृष्टि में व्यर्थ, परंतु स्वर्गीय पागलपन को सिर चढ़ाकर प्रार्थना करूँ।

मगर नहीं। वार्धक्य वह रोग नहीं, जिसकी दवा की जा सके। यह मर्ज़ लाइलाज है। यह सरदर्द ऐसा है, कि सर जाए तो जाए, पर दर्द न जाए।

लड़कपन के स्वर्ग का विस्मृतिमय अद्वितीय मुख देख चुका। जवानी की अमरावती में विविध भोगविलास कर चुका। अब बुढ़ापे के नरक में आया हूँ। भोगना ही पड़ेगा। इस नरक से मनुष्य की तो हस्ती ही क्या है, ईश्वर भी छुटकारा नहीं दिला सकता। बुढ़ापा वह पतन है, जिसका उत्थान केवल एक बार होता है, और वह होता है – दहकती हुई चिता पर। हमारे रोग की अगर दवा है, तो एक 'जाह्नवीतोप।' यदि वैद्य है तो एक – 'नारायणोहरिः'

अब देर काहे की, प्रभो? दया करो, 'समन' भेजो, जीवन की रस्सी काट डालो। अब यह नरक भोगा नहीं जाता। भवसागर में हाथ मारते-मारते थक गया हूँ। मेरा जीवन-दीपक स्नेहशून्य है, गुणरहित है, प्रकाशहीन है इसका शीघ्र ही नाश करो, पंचतत्व में लय करो। नए सिरे से शैशव हो; फिर से, नए सिरे से यौवन हो; फिर से, नए सिरे से मोद हो, विलास हो, सुख हो, आमोद हो; कविता हो, प्रेम हो, पागलपन हो, मान में अपमान और अपमान में मान हो! फिर से नए सिरे से, यौवन की मतवाली अंगूरी सुरा ऐसी छने - ऐसी छने कि लोक भूल जाए, परलोक भूल जाए, भय भूल जाए, शोक भूल जाए, वह भूल जाए और तुम – ईश्वर भूल जाओ! तब जीवन का सुख मिले, तब पृथ्वी का स्वर्ग दिखाई पड़े।

फिर, अब देर काहे की प्रभो? दया करो, 'समन' भेजो - लेखक ऐसा क्यों चाहते हैं?

फिर, अब देर काहे की प्रभो? दया करो, 'समन' भेजो, जीवन की रस्सी काट डालो।

अनुवर्ती कार्य

➤ **निबंध से समस्त पद (शब्द-युग्म) छाँटकर लिखें और उसका विग्रह करें।**

शब्द-युग्म	विग्रहार्थ
हृदय-दान	हृदय का दान
चमकती-दमकती	चमकती और दमकती
....	....
....	....

➤ **बचपन, जवानी और बुढ़ापा ज़िंदगी के तीन सोपान हैं। निम्नांकित वाक्यांशों से तालिका भरें।**

गरम जवानी
अमरावती
घंटों नाक दबाना
चंद्र-खिलौना लेना
ईश्वर-भजन करना
सिद्धियों की साधना
चमकती-दमकती
लड़कपन के स्वर्ग
गुलाबी लड़कपन

बचपन	जवानी	बुढ़ापा
चंद्र-खिलौना लेना	अमरावती	ईश्वर-भजन करना
....	....	....
....	....	....

➤ ICT द्‌वारा बुढ़ापा संबंधी वृत्तचित्र दिखाएँ।

संगोष्ठी चलाएँ

विषय : बूढ़ों का संरक्षण हमारा कर्तव्य है-

- *कोई छात्रा संचालिका बने।*
- *संचालिका विषय प्रस्तुत करे।*
- *चर्चा करके विषय को उपविषयों में बाँटे।*
- *उपविषयों के आधार पर दलों में बँटें।*
- *हर दल अपने उपविषय पर प्रालेख तैयार करे।*
- *हरेक दल अपना प्रालेख प्रस्तुत करे।*
- *प्रालेख की प्रस्तुति पर अन्य दल चर्चा करें जिससे प्रालेख की पुष्टि हो।*
- *प्रत्येक दल की प्रस्तुति और चर्चा के बाद संचालिका संक्षिप्तीकरण करे।*
- *दलों द्‌वारा प्रस्तुत विचारों को समेकित करके* ***वैयक्तिक आलेख*** *तैयार करे।*
- *दो-चार छात्र आलेख प्रस्तुत करें।*

आलेख की परख, मेरी ओर से

- *उपक्रम है।*
- *विभिन्न उपविषयों को अनुच्छेदों में लिखा है।*
- *सभी बिंदुओं को समेकित करके अपना मत प्रकट किया है।*
- *अपने मत का समर्थन किया है।*
- *उपसंहार है।*

संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का सूचक शब्द	किसी जाति या समूह के नाम का सूचक शब्द	किसी भाव के नाम का सूचक शब्द

➤ 'ईदगाह' से शब्द चुनकर तालिका भरें।

व्यक्ति वाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
हामिद	लड़का	प्रसन्नता
....	....	....
....	....	....
....	....	....

व्यक्ति वस्तु, स्थान, जाति, समूह या
भाव के नाम का सूचक शब्द।

हिंदी साहित्य का काल विभाजन

किसी भी विषयवस्तु का अध्ययन सुचारू ढंग से करने के लिए उन्हें वर्गों या खंडों में विभाजित करता है। साहित्य के इतिहास को भी विद्वानों ने विभिन्न कालखंडों में विभाजित करने का प्रयास किया है। आरंभिक साहित्य के इतिहासकार गासा द तासी एवं शिवसिंह सैंगर ने काल-विभाजन की ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया। इस दिशा में ध्यान देनेवालों में जार्ज ग्रियर्सन का नाम पहले आता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने साहित्य के इतिहास में जो काल-विभाजन किया है वही बाद में प्रचुर प्रचलित हो गया। हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन इसप्रकार है-

आदिकाल (वीरगाथाकाल)
संवत् 1050 से 1375 तक

पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल)
सं 1375 से 1700 तक

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)
सं 1700 से 1900 तक

आधुनिक काल (गद्यकाल)
सं 1901 से ....

आदिकाल

प्रमुख प्रवृत्तियाँ

- ★ भाषा, इतिहास और साहित्य तीनों ही दृष्टिकोणों से वीरगाथाकाल बहुत महत्वपूर्ण है।
- ★ यह हिंदी भाषा का प्रारंभिक काल है जिसमें राष्ट्रभाषा का निर्माण और

वीरतापूर्ण काव्य का सृजन हुआ है।

- ✶ इस काल की प्रमुख रचनाएँ शृंगार और वीररस प्रधान हैं।
- ✶ इस काल के प्रायः सभी कवि दरबारी थे और अपने-अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसामात्र ही उनके काव्यों के विषय थे। सभी ग्रंथ ऐतिहासिक प्रतीत होते हुए भी काल्पनिक हैं। काव्यों में युद्धों का सुंदर चित्रण है।
- ✶ राष्ट्रीयता की भावना का इस काल में सर्वथा अभाव है।
- ✶ इस काल के कवियों ने छप्पय, दोहा और कवित्त छंदों में ओजपूर्ण कविता लिखी है।
- ✶ प्रबंध तथा मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य लिखे गए।
- ✶ भारत की तत्कालीन शासन-व्यवस्था अव्यवस्थित होने के कारण इतिहास में सुसंगठन का आभास नहीं मिलता था।
- ✶ इस काल की भाषा परिमार्जित है, उसमें कई भाषाओं के शब्द हैं।

वीरगाथा काल के प्रमुख कवि और उनके ग्रंथ

चंदबरदाई	-	पृथ्वीराज रासो
दलपति विजय	-	खुमान रासो
नरपति नाल्ह	-	बीसलदेव रासो
जगनिक	-	आल्हाखंड

पृथ्वीराज रासो

वीरगाथा काल का सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है, 'पृथ्वीराज रासो'। यह ग्रंथ हिंदी का सर्वप्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसमें वीर भावों की बड़ी सुंदर अभिव्यंजना है। इसके रचयिता चंदबरदाई माने जाते हैं। ये दिल्ली के सम्राट महाराज पृथ्वीराज के सखा, सामंत और राजकवि थे। कहा जाता है कि पृथ्वीराज और चंद का जन्म एक ही तिथि को हुआ और मृत्यु भी एक ही तिथि को हुई।

अनुवर्ती कार्य

- ➤ ICT **की सहायता से वीरगाथाकालीन रचनाओं पर आधारित धारावाहिकों के चुने हुए अंश दिखाएँ।**

दृश्यों के आधार पर रचनाओं की विशेषताओं पर चर्चा चलाएँ।

चर्चा बिंदु :

* रचना का कथ्यपक्ष
* इतिहास सत्य
* तत्कालीन समाज
* युद्धवर्णन
* प्रेमवर्णन

- ➤ **चर्चा के आधार पर टिप्पणी लिखें।**

टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- ◆ *बिंदुओं पर चर्चा की है।*
- ◆ *अपने दृष्टिकोण का समर्थन किया है।*
- ◆ *क्रमबद्धता है।*
- ◆ *निर्णय पर पहुँचा है।*

शब्दार्थ

एकलव्य

अंगूठा	-	हाथ की पहली और सबसे मोटी ऊँगली
उपलक्ष्य	-	उद्देश्य
साध्य	-	लक्ष्य
प्रत्यंचा	-	धनुष की डोरी
अभिज्ञ	-	जाननेवाला
सिर नवाना	-	सिर झुकाना
माटी	-	मिट्टी
मूरत	-	मूर्ति

ईदगाह

ईदगाह	-	ईद के दिन नमाज़ पढ़ने की जगह
सुहावना	-	सुंदर और सुखद
रौनक	-	चमक-दमक
सानी-पानी	-	दाना पानी
रोज़ा	-	उपवास
बला से	-	कुछ परवा नहीं
बिगुल	-	तुरही
नियामत	-	प्रसाद
निगोडी	-	दुर्भाग्यशाली
कचोट	-	चुभन
लीची	-	एक प्रसिद्ध पेड़ और उसका फल
लुढ़कना	-	गिरना
हज़रत	-	पैंगबर
नादानी	-	मूर्खता
भड़कीला	-	अत्यलंकृत
भिश्ती	-	जलवाहक
मश्क	-	अभ्यास
नेमत	-	वरदान
छुड़कियाँ	-	डाँट
खंजरी	-	डफली
फौलाद	-	सुदृढ़
कुमक	-	अनुपूर्ति
बावरचीखाना	-	रसोईघर
बेतुकी-सी	-	अंसगत बात

बुढ़ापा

प्रवंचना	-	दुष्प्रचार
अस्ताचल	-	पश्चिम दिशा
मूर्छित	-	अचेत
ओतप्रोत	-	तल्लीन
कुबड़ी	-	कुब्जा
नादान	-	अज्ञानी
दुगाई	-	अपील
अल्हड़पन	-	अलमस्ती
फ़ातिहा	-	प्रार्थना
शौकीन	-	विलासप्रिय
मुहल्ले-टोले	-	छोटी बस्ती
धमा	-	चौकड़ी अगंभीर नाटक
प्रांगण	-	आँगन

इकाई दो

नीति की वाणी

कबीर के दोहे
चीफ की दावत
महात्मागाँधी
सर्वनाम
निर्गुण भक्तिकाव्य

अधिगम उपलब्धियाँ

- कबीर के दोहों का विश्लेषण करके उनका वर्गीकरण करता है।
- दोहों का आस्वादन करके टिप्पणी लिखता है।
- कहानी का आस्वादन करके पात्रों का चरित्र-चित्रण करता है।
- कहानी का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- माँ की ममता और त्याग पहचानता है।
- संस्मरण की शैली पहचानकर घटनाओं को क्रमबद्ध करता है।
- संस्मरण का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।
- आदर्श देशप्रेमी बनता है।
- सर्वनाम का प्रयोग संबंधी अवधारणा पाकर उनका वर्गीकरण करता है।
- निर्गुण भक्तिकाव्य की अवधारणा पाकर टिप्पणी लिखता है।
- कबीर की रचनाओं की प्रासंगिकता पहचानकर वाद-विवाद में अपने मतों का समर्थन करके आलेख तैयार करता है।

कबीरदास

जन्म	:	1398 ई, काशी
मृत्यु	:	1518 ई. मगहर में
प्रमुख रचना	:	बीजक - साखी, सबद, रमैनी
विशेषताएँ	:	* भक्तिकाल के निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि।
		* एकेश्वरवादी कवि।
		* संत एवं समाज सुधारक।
		* प्रेम के महत्व को पहचाननेवाले।
		* सच्चाई को सबसे श्रेष्ठ हथियार माननेवाले।
देन	:	ऊँच-नीच तथा सामाजिक रूढ़ियों का विरोध।
		मानवता का प्रवर्तक।
		धार्मिक भेदभाव को दूर करने का आह्वान।

चार चरणवाला छंद। दो-दो चरण जोड़कर दल के रूप में प्रस्तुति। हर ***दोहा*** *अपने में पूर्ण। कबीरदास कवि बनने के लिए कविता नहीं लिखते थे। वे अनपढ़ थे। तत्कालीन जर्जरताओं से जनता को सचेत करने के लिए कबीर* ***दोहों*** *का गायन करते थे।*

कबीरदास

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोइ।
एकै आखिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।।

'निदंक नेड़ा राखिए' कबीर ने क्यों इस प्रकार कहा?

निंदक नेड़ा राखिए, अंगणि कुटी बंधाइ।
बिन सांवण पांणी बिन निरमल करै सुभाइ।।

माली आवत देख करि, कलियाँ करैं पुकार।
फूली फूली चुनि गई, कालि हमारी बार।।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

'प्रेम न खेती नीपजे' इस से क्या तात्पर्य है?

प्रेम न खेती नीपजे, प्रेम न हाटि बिकाइ।
राजा परजा जिस रुचै, सिर दे सो ले जाइ।।

कबिरा खड़ा बज़ार में, माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोसती, ना काहू से बैर।।

अनुवर्ती कार्य

➤ **समानार्थी शब्द ढूँढकर लिखें -**

पास, मोटे ग्रंथ, कुटिया, मूल्य, कल, प्रजा, उपजता,किसीसे

➤ **निम्नलिखित भाववाले दोहों को चुनकर लिखें -**

- निदंक को निकट रखना चाहिए क्योंकि कमज़ोरियाँ अवगत होती हैं।
- जीवन नश्वर एवं क्षणिक है।
- जो प्रेम का महत्व जानता है वही पंडित है।
- संसाररूपी बाज़ार में शत्रु और मित्र समान है।
- जिसके मन में अहंकार नहीं है वही प्रेम पा सकता है।
- सज्जनों की जाति न पूछो, उनसे ज्ञान के बारे में पूछो।

➤ **सही मिलान करे -**

प्रेम किसी खेत में उपजता नहीं	माँगे सबकी खैर
प्रेम का महत्व जाननेवाला सच्चा पंडित है	प्रेम न खेती नीपजे
निदंक को पास ही रखें	कालि हमारी बार
सबकी भलाई चाहता है	मोल करो तरवार का
जीवन क्षणभंगुर है	एकै आखिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ।
तलवार का मूल्य होता है	निदंक नेड़ा रखिए

भीष्म साहनी

जन्म	:	08 अगस्त 1915, रावलपिंडी
मृत्यु	:	11 जुलाई 2003, दिल्ली
प्रमुख रचनाएँ	:	उपन्यास - तमस, झरोखे, बसंती, मय्यादास की माड़ी, कड़ियाँ, नीलू नीलिमा निलोफर
		कहानी-संग्रह - मेरी प्रिय कहानियाँ, भाग्यरेखा, निशाचर
		नाटक - हानूश, माधवी, मुआवज़े, कबिरा खड़ा बाज़ार में, रंग दे बसंती चोला, आलमगीर
पुरस्कार	:	पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार राष्ट्रीय मैथिली शरण गुप्त सम्मान
विशेषताएँ	:	* अत्यंत सहज भाषा * सामान्य लोगों के हृदय को छू लेनेवाली अभिव्यक्ति
देन	:	जीवन के सहज प्रवाह से वास्तविकताओं को चुनकर चित्रित करने में सफलता।

चीफ की दावत में भीष्य साहनी ने मध्यवर्गीय नौकरीपेशे लोगों के चारित्रिक रवैए का पर्दाफाश किया है। नौकरी में तरक्की के लिए यह वर्ग किस तरह मानवीय संबंधों के प्रति निर्मम और चरित्रहीन हो सकता है - यही इस कहानी की रचना का उद्देश्य है।

चीफ की दावत

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ की दावत थी।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुर्सत न थी। पत्नी ड्रैसिंग गाउन पहिने, उलझे हुए बालों का जूड़ा बनाए, मुँह पर फैली हुई सुर्खी और पाउडर को मले, और मिस्टर शामनाथ सिगरेट-पर-सिगरेट फूँकते हुए, चीज़ों की फ़ेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे।

आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी मुकम्मल होने लगी। कुर्सियाँ, मेज़, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल सब बरामदे में पहुँच गए। ड्रिंक का इंतज़ाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फ़ालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा?

शामनाथ क्यों चिंतित है?

इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ, श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेज़ी में बोले - 'माँ का क्या होगा?'

श्रीमती काम करते-करते ठहर गई, और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं, 'इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो। रात भर बेशक वहीं रहें। कल आ जाएँ।'

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले – 'नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले

ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खाके शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ। मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे, इससे पहले ही अपने काम से निबट लें।'

सुझाव ठीक था। दोनों को पसंद आया। मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं - 'जो वह सो गईं और नींद से खर्राटे लेने लगीं, तो? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे।'

'तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाज़ा बंद कर लें। मैं बाहर से ताला लगा दूँगा। या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जाकर सोएँ नहीं, बैठी रहें, और क्या?'

'और जो सो गईं, तो? डिनर का क्या मालूम कब तक चले। ग्यारह-ग्यारह बजे तक तो तुम ड्रिंक ही करते रहते हो।'

शामनाथ कुछ खीज उठे, हाथ झटकते हुए बोले– 'अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं। तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी।'

तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी- शामनाथ पत्नी से क्यों ऐसा कहता है?

'वाह! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ? तुम जानो और वह जानें।

मिस्टर शामनाथ चुप रहे। यह मौका बहस का न था, समस्या का हल ढूँढ़ने का था। उन्होंने घूमकर माँ की कोठरी को ओर देखा। कोठरी का दरवाज़ा बरामदे में खुलता था। बरामदे की ओर देखते हुए झट से बोले — मैंने सोच लिया है—और उन्हीं कदमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं। सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क

रहा था। बेटे के दफ़्तर का बड़ा साहब घर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाय।

'माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना। मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे।'

माँ ने धीरे से मुँह पर से दुपट्टा हटाया और बेटे को देखते हुए कहा, 'आज मुझे खाना नहीं खाना है, बेटा, तुम तो जानते हो, माँस-मछली बने, तो मैं कुछ नहीं खाती।'

आज मुझे खाना नहीं खाना है– माँ ऐसा क्यों कहती हैं?

'जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना।'

'अच्छा, बेटा।'

'और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना, फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना।'

माँ अवाक् बेटे का चेहरा देखने लगीं। फिर धीरे से बोलीं– 'अच्छा बेटा।'

'और माँ आज जल्दी सो नहीं जाना। तुम्हारे खर्राटों की आवाज़ दूर तक जाती है।'

माँ लज्जित-सी आवाज़ में बोलीं - 'क्या करूँ बेटा, मेरे बस की बात नहीं है। जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले सकती।'

मिस्टर शामनाथ ने इंतज़ाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं। जो चीफ़ अचानक उधर आ निकला, तो? आठ-दस मेहमान होंगे, देसी अफ़सर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की

तरफ़ जा सकता है। क्षोभ और क्रोध में वह झुँझलाने लगा। एक कुरसी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोला - 'आओ माँ, इसपर ज़रा बैठो तो।'

माँ माला संभालती, पल्ला ठीक करती उठीं, और धीरे से कुरसी पर आकर बैठ गईं।

'यूँ नहीं, माँ, टाँगें ऊपर चढ़ाकर नहीं बैठते। यह खाट नहीं है।'

माँ ने टाँगें नीचे उतार लीं।

'और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना। न ही वह खड़ाऊँ पहन कर सामने आना। किसी दिन तुम्हारी वह खड़ाऊँ उठाकर मैं बाहर फेंक दूँगा।'

माँ चुप रहीं।

'कपड़े कौन से पहनोगी, माँ?'

'जो है, वही पहनूँगी, बेटा! जो कहो, पहन लूँ।'

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछें, किस रंग के पर्दे लगाए जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज़ किस साइज़ की हो... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ़ का साक्षात् माँ से हो गया; तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले – 'तुम सफेद कमीज़ और सफेद सलवार पहल लो, माँ! पहन के आओ तो, ज़रा देखूँ।'

माँ धीरे से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े पहनने चली गईं।

शामनाथ की चिंता क्या थी?

यह माँ का झमेला ही रहेगा, उन्होंने फिर अंग्रेज़ी में अपनी स्त्री से कहा – 'कोई ढंग की बात हो, तो भी कोई कहे। अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गई, चीफ़ को बुरा लगा, तो सारा मज़ा जाता रहेगा।'

शामनाथ अपनी स्त्री से अग्रेज़ी में बात करता है - क्यों?

माँ सफेद कमीज़ और सफेद सलवार पहनकर बाहर निकलीं। छोटा-सा कद, सफ़ेद कपड़ों में लिपटा, छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिप पाए थे। पहले से कुछ ही कम कुरूप नज़र आ रही थीं।

'चलो, ठीक है। कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों, तो वह भी पहन लो। कोई हर्ज़ नहीं।'

'चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा? तुम तो जानते हो, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए।'

यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा। कौन-सा वाक्य? क्यों?

यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा। तिनक कर बोले - 'यह कौन-सा राग छेड़ दिया, माँ! सीधा कह दो, नहीं है जेवर, बस! उससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या तअल्लुक है। जो जेवर बिका, तो कुछ बनकर ही आया हूँ, निरा लंडूरा तो नहीं लौट आया। जितना दिया था, उससे दुगुना ले लेना।'

'मेरी जीभ जल जाय, बेटा, तुमसे जेवर लूँगी? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया। जो होते, तो लाख बार पहनती।'

साढ़े पाँच बज चुके थे। अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धोकर तैयार होना था। श्रीमती कब की अपने कमरे में जा चुकी थीं। शामनाथ जाते हुए एक बार फिर माँ को हिदायत करते गए — 'माँ, रोज़ की तरह गुमसुम बनके नहीं बैठी रहना। अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें, तो ठीक तरह से बात का जवाब देना।'

'मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करूँगी, तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं ! वह नहीं पूछेगा।'

सात बजते-बजते माँ का दिल धक्-धक् करने लगा। अगर चीफ़ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज़ को तो दूर से ही देखकर घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएँ। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाए वहीं बैठी रहीं।

'माँ का दिल धक्-धक् करने लगा, क्यों?

एक कामयाब पार्टी वह है, जिसमें ड्रिंक कामयाबी से चल जाएँ। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था, जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी कोई अड़चन न थी। साहब को ह्विस्की पसंद आई थी। मेमसाहब को पर्दे पसंद आए थे, सोफा-कवर का डिज़ाइन पसंद आया था; कमरे की सज़ावट पसंद आई थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए? साहब तो ड्रिंक के दूसरे दौर में ही चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गए थे। दफ़्तर में जितना रोब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्त परवर हो रहे थे और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पाउडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देसी स्त्रियों की आराधना का केंद्र बनी हुई थीं। बात बात पर हँसतीं, बात बात पर सिर हिलातीं और शामनाथ की स्त्री से ऐसे बातें कर रही थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हों।

और इसी रौ में पीते-पिलाते साढ़े दस बज गए। वक्त गुज़रते पता ही न चला।

आखिर सब लोग अपने-अपने गिलासों में से आखिरी घूँट पीकर खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे आगे शामनाथ, रास्ता दिखाते हुए, पीछे चीफ़ और दूसरे मेहमान।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं और क्षण भर में सारा नशा हिरन होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुरसी पर ज्यों की त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुरसी की सीट पर रखे हुए, और सिर दायें से बायें और बायें से दायें झूल रहा था और मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाज़ें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते। और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ क्रुद्‌ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें, और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही शामनाथ क्रुद्‌ध हो उठा। क्यों ?

माँ को देखते ही देसी अफ़सरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ़ ने धीरे से कहा — पूअर डियर!

माँ हड़बड़ा के उठ बैठीं। सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबराई कि कुछ कहते न बना। झट से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गईं और ज़मीन को देखने लगीं। उनके पाँव लड़खड़ाने लगे और हाथों की उँगलियाँ थर-थर काँपने लगीं।

माँ, तुम जाके सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर

तक जाग रही थीं? - और खिसियाई हुई नज़रों से शामनाथ चीफ़ के मुँह की ओर देखने लगे।

चीफ़ के चेहरे पर मुस्कराहट थी। वह वहीं खड़े-खड़े बोले, 'नमस्ते'!

माँ ने झिझकते हुए, अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े, मगर एक हाथ दुपट्टे के अंदर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर, ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पाईं। शामनाथ इसपर भी खिन्न हो उठे।

इतने में चीफ़ ने अपना दायाँ हाथ, हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया। माँ और भी घबरा उठीं।

'माँ, हाथ मिलाओ।'

पर हाथ कैसे मिलाती? दायें हाथ में तो माला थी। घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दायें हाथ में रख दिया। शामनाथ दिल ही दिल में जल उठे। देसी अफ़सरों की स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।

'यूँ नहीं, माँ! तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है। दायाँ हाथ मिलाओ।'

मगर तब तक चीफ़ माँ का बायाँ हाथ ही बार बार हिलाकर कह रहे थे — 'हौ डू यू डू?'

'कहो माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ।'

माँ कुछ बड़बड़ाईं।

'माँ कहती है, मैं ठीक हूँ। कहो माँ, हौ डू यू डू।'

एक बार फिर कहकहा उठा। क्यों?

माँ धीरे से सकुचाते हुए बोलीं - 'हो डू डू ...'

एक बार फिर कहकहा उठा।

वातावरण हल्का होने लगा। साहब ने स्थिति संभाल ली थी। लोग हँसने-चहकने लगे थे। शामनाथ के मन का क्षोभ भी कुछ कुछ कम होने लगा था।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे, और माँ सिकुड़ी जा रही थीं। साहब के मुँह से शराब की बू आ रही थी।

शामनाथ अंग्रेज़ी में बोले — 'मेरी माँ गाँव की रहनेवाली हैं। उमर भर गाँव में रही हैं। इसलिए आपसे लजाती हैं।'

साहब इसपर खुश नज़र आए। बोले — 'सच? मुझे गाँव के लोग बहुत पसंद हैं, तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होंगी?' चीफ खुशी से सिर हिलाते हुए माँ को टिकटिकी बाँधे देखने लगे।

गाँव के बारे में शामनाथ एवं चीफ का दृष्टिकोण क्या है?

'माँ, साहब कहते हैं, कोई गाना सुनाओ। कोई पुराना गीत तुम्हें तो कितने ही याद होंगे।'

माँ धीरे से बोलीं - 'मैं क्या गाऊँगी, बेटा। मैंने कब गाया है?'

'वाह, माँ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है?'

'साहब ने इतनी रीझ से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।'

'मैं क्या गाऊँ, बेटा। मुझे क्या आता है?'

'वाह! कोई बढ़िया ठप्पे सुना दो। दो पत्तर अनारां दे...'

देसी अफ़सर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखतीं, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गंभीर आदेश-भरे लहजे में कहा — 'माँ!'

इसके बाद हाँ या ना का सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गईं और क्षीण, दुर्बल, लरजती आवाज़ में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं-

शामनाथ की खीज प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी । क्यों ?

हरिया नी माये, हरिया नी भैणे
हरिया ते भागी भरिया है!

देसी स्त्रियाँ खिलखिला हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गाके माँ चुप हो गईं।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बंद ही न करते थे। शामनाथ की खीज प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले — 'पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है?'

शामनाथ खुशी में झूम रहे थे। बोले — 'ओ, बहुत कुछ साहब। मैं आपको एक सेट उन चीज़ों का भेट करूँगा। आप उन्हें देखकर खुश होंगे।'

मगर साहब ने सिल हिलाकर अंग्रेज़ी में फिर पूछा - 'नहीं, मैं दुकानों की चीज़ नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं?'

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले — 'लड़कियाँ गुड़ियाँ बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं।'

'फुलकारी क्या?'

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ को बोले - 'क्यों, माँ, कोई पुरानी फुलकारी घर में हैं?'

माँ चुपचाप अंदर गईं और अपनी फुलकारी उठा लाईं।

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे। पुरानी फुलकारी थी, जगह जगह से उसके तागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था। साहब की रुचि को देखकर शामनाथ बोले — 'यह फटी हुई है साहब, मैं आपको नई बनवा दूँगा। माँ बना देंगी। क्यों, माँ साहब को

फुलकारी बहुत पसंद है, इन्हें ऐसी ही एक फुलकारी बना दोगी न?'

माँ चुप रहीं। फिर डरते-डरते धीरे से बोलीं– 'अब मेरी नज़र कहाँ है, बेटा! बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी?'

मगर माँ का वाक्य बीच ही में तोड़ते हुए शामनाथ साहब से बोले — 'वह ज़रूर बना देंगी। आप उसे देखकर खुश होंगे।'

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद किया और हल्के-हल्के झूमते हुए खाने की मेज़ की ओर बढ़ गए। बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिए।

जब मेहमान बैठ गए और माँ पर से सबकी आँखें हट गईं, तो माँ धीरे से कुर्सी पर से उठीं, और सबसे नज़रें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गईं।

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार बार उन्हें पोंछतीं, पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बंद कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

माँ की आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। क्यों?

आधी रात का वक्त होगा। मेहमान खाना खाकर एक एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई से प्लेटों के खनकने की आवाज़ आ रही थी। तभी सहसा

माँ की कोठरी का दरवाज़ा जोर से खटकने लगा।

'माँ, दरवाज़ा खोलो।'

माँ का दिल बैठ गया। हड़बड़ाकर उठ बैठीं। क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गई? माँ कितनी देर से अपने आपको कोस रही थीं कि क्यों उन्हें नींद आ गई, क्यों वह ऊँघने लगीं। क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया? माँ उठीं और काँपते हाथों से दरवाज़ा खोल दिया।

दरवाज़ा खुलते ही शामनाथ झूमते हुए आगे बढ़ आए और माँ को आलिंगन में भर लिया।

'ओ अम्मी! तुमने तो आज रंग ला दिया!... साहब तुमसे इतना खुश हुआ कि...' छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गई। माँ की आँखों में फिर आँसू आ गए। उन्हें पोंछती हुई धीरे से बोलीं — 'बेटा, तुम मुझे हरिद्वार भेज दो। मैं कब से कह रही हूँ।'

शामनाथ की परेशानी पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे । कब?

शामनाथ का झूमना सहसा बंद हो गया और उनकी परेशानी पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे। उनकी बाँहें माँ के शरीर पर से हट आईं।

'क्या कहा, माँ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया?'

शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गए - 'तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो; ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता।'

'नहीं, बेटा अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो। मैंने अपना खा-पहन लिया। अब यहाँ क्या करूँगी। जो थोड़े दिन ज़िंदगानी के बाकी हैं, भगवान का नाम लूँगी। तुम मुझे हरिद्वार भेज दो!'

'तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है।'

'मेरी आँखें अब नहीं हैं बेटा, जो फुलकारी बना सकूँ। तुम कहीं और से बनवा लो। बनी-बनाई ले लो।'

'माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा, तो मुझे तरक्की मिलेगी।'

माँ चुप हो गईं फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोलीं — 'क्या तेरी तरक्की होगी? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगा? क्या उसने कुछ कहा है?'

'कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश गया है। कहता था, जब तेरी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेगी, तो मैं देखने आऊँगा कि कैसे बनाती हैं? जो साहब खुश हो गया, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अफसर बन सकता हूँ।'

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उनका झुर्रियों-भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हल्की-हल्की चमक आने लगी।

'तो तेरी तरक्की होगी बेटा?'

'तरक्की यूँ ही हो जाएगी? साहब को खुश रखूँगा तो कुछ करेगा, वरना उसकी खिदमत करनेवाले क्या थोड़े हैं?'

'तो मैं बना दूँगी, बेटा, जैसे बन पड़ेगा, बना दूँगी।'

और माँ दिल ही दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ, 'अब सो जाओ, माँ', कहते हुए तनिक लड़खड़ाते हुए अपने कमरे की ओर घूम गए।

माँ फुलकारियाँ बनाने के लिए क्यों तैयार हुईं ?

अनुवर्ती कार्य

➤ **कहानी में प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्द चुनें और उनका प्रासंगिक हिंदी शब्द लिखें।**

जैसे :	चीफ	मुख्य अधिकारी
	पार्टी	दावत
	....	....

➤ **निम्नांकित मनोवृत्तियाँ सूचित करनेवाले वाक्य कहानी से लिखें :**

* उपेक्षा
* दिखावा
* वात्सल्य
* लोकपरंपरा के प्रति रुचि
* भोलापन

➤ **निम्नांकित सूचनाओं की सहायता से माँ का चरित्र-चित्रण लिखें।**

* ग्राम्य जीवन पर आस्था
* बेटे के प्रति वात्सल्य
* सादगीपन
* बेटे के उज्वल भविष्य की कामना

➤ **'अब सो जाओ, माँ'— कहते हुए शामनाथ अपने कमरे की ओर घूम गए। लेकिन माँ सो न सकी। उनके मन के विचार डायरी के रूप में लिखें।**

बेटे की उपेक्षा पर दुख।
बेटे की तरक्की पर खुशी।
माँ का ममता-भरा दिल।

डायरी की परख, मेरी ओर से

- *घटना की सूचना है।*
- *संवेदना की अनुभूति है।*
- *आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है।*
- *आत्मपरक शैली है।*

➤ **माँ के प्रति बेटे के व्यवहार पर अपना विचार प्रकट करें।**

रामकुमार वर्मा

जन्म	:	15 सितंबर 1905, सागर, मध्यप्रदेश
मृत्यु	:	1990
प्रमुख रचनाएँ	:	कविता-संग्रह - अंजलि, आकाश-गंगा, चित्ररेखा, एकलव्य, चितौड़ की चिंता।
		नाटक-संग्रह - पृथ्वीराज की आँखें, चारुमित्रा, ऋतुराज, जुही के फूल
पुरस्कार	:	पद्मभूषण, देव पुरस्कार
विशेषताएँ	:	* कवि और आलोचक
		* हिंदी एकांकी के जनक
देन	:	मानव-जीवन की विविध संवेदनाओं को नाटकीय स्वर।
		कविता में रहस्यमयी जगत् का चित्रण।

*उत्तर छायावादी साहित्य जगत् में रामकुमार वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य की विभिन्न विधाओं के सर्जक रामकुमार वर्मा का गांधीजी पर लिखा गया संस्मरण है **महात्मा गाँधी**। यह गाँधीजी की ज़िंदगी की बारीकियों पर प्रकाश डालता है।*

महात्मा गाँधी

आकाशमंडल के उत्तर में एक नक्षत्र राशि का नाम सप्तऋषि मंडल है और यह सप्तऋषि मंडल जिस नक्षत्र की परिक्रमा करता है, उसका नाम ध्रुव नक्षत्र है। मुझे ऐसा लगा कि इस देश के ही नहीं, समस्त संसार की राजनीतिक दृष्टियाँ जिसकी परिक्रमा करती हैं, उसका नाम महात्मा गाँधी है।

अपने बाल्य जीवन से ही मैं महात्मा गाँधी का नाम सुनता आ रहा था और अनेक समाचार पत्रों में उनका विविध मुद्राओं में चित्र भी देखा करता था और इस प्रकार अपने देश के स्वर्णिम भविष्य के निर्माता के रूप में महात्मा गाँधी को अपनी श्रद्धा के सुमन भी समर्पित करता रहता था। बात सन् 1921 की है, जब उन्होंने नागपुर में संपन्न हुए अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में विदेशी शासन के विरुद्ध असहयोग का प्रस्ताव स्वीकृत कराया और देशभर में असहयोग की लहर किसी समुद्री ज्वार का रूप लेकर सारे देश के विचारों को आंदोलित करने लगी।

गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन क्यों वापस लिया?

गोरखपुर उत्तर प्रदेश में चौरीचौरा कांड हुआ और महात्मा गाँधी ने अपना असहयोग आंदोलन वापस लिया – यह कहकर कि देश अभी पूरी तरह से असहयोग आंदोलन के लिए तैयार नहीं है। माँ के आदेश पर मैंने फिर अपना अध्ययन का क्रम आगे बढ़ाया। सन् 1929 में मैंने एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और मैं प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के

अंतर्गत प्रवक्ता नियुक्त हो गया। साथ ही हिंदी प्रेम के कारण मुझे अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन में स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास टंडन ने परीक्षा मंत्री बना दिया। उसी समय सन् 1937 में मुझे उत्तमा परीक्षा की मौखिक परीक्षा के लिए वर्धा जाने का सुयोग प्राप्त हुआ। यहाँ महात्मा गाँधी सेवाग्राम में निवास करते थे। परीक्षा संपन्न करने के बाद मैंने अपने आतिथेय स्वर्गीय श्रीमन्नारायण अग्रवाल (जो बाद में गुजरात के गवर्नर हुए) से अपनी इच्छा प्रकट की कि मैं गाँधीजी के दर्शन करना चाहता हूँ। उन्होंने गाँधीजी के प्राइवेट सेक्रेटरी से टेलीफोन कर दूसरे दिन प्रातः 8.30 समय निश्चित करा दिया। मैं प्रसन्नता से गद्‌गद हो गया कि सोलह वर्षों बाद मैं गाँधीजी के निकटतम संपर्क में आ सकूँगा। मैं दूसरे दिन स्नानादि से निवृत्त होकर गाँधीजी की सेवाग्राम कुटी पर श्रीमन्नारायण के साथ पहुँच गया। कुटी की दाहिनी ओर श्रीमती कस्तूरबा का निवास था। वे सामने ही दीख पड़ीं, मैंने उन्हें प्रणाम किया और उन्होंने मुझे अंदर बुला लिया। श्रीमन्नारायण ने मेरा परिचय दिया तो 'बा' ने कहा जब माँ के पास बेटा आता है तो माँ के मन में पहली बार यह आती है कि मेरे बेटे ने कुछ खाया या नहीं? मैंने निवेदन किया कि मैं सुबह नाश्ता करके आया, किंतु वे मानीं नहीं। उन्होंने कहा कि माँ को सुख मिलता है, जब वह बेटे को अपने सामने बिठाकर खिलाती है। ऐसा कहते हुए उन्होंने मेरे सामने अंजीर के बड़े पत्तों पर शहद, छुहारे तथा अन्य

माँ को कब सुख मिलता है?

कुछ मीठे फल रख दिए और कहा, 'मेरा बेटा मेरे सामने खाए।' मैंने और श्रीमन्नारायण ने उनकी आज्ञानुसार कुछ खाया, फिर आश्रम की अनेक बातें होने लगीं और फिर बातों-बातों में घड़ी की सुइयाँ 8:50 से आगे बढ़ गईं, गाँधीजी के प्राइवेट सेक्रेटरी हमारी राह देख रहे थे और हमें गाँधीजी से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

गाँधीजी समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक थे। उनका मिनट-मिनट पर कार्यक्रम निर्धारित होता था। हमें निर्धारित समय से दस मिनट का विलंब हो गया था और गाँधीजी ठीक नौ बजे अपना दूसरा कार्यक्रम करने लगे थे, अर्थात् एक आदमी उनके शरीर पर तेल की मालिश करने लगा। फिर भी उन्होंने हमें सामने बैठाया और श्रीमन्नारायण ने मेरा परिचय दिया कि मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हूँ और मैंने भी असहयोग आंदोलन में सन् 1921 में स्कूल छोड़ दिया था। आश्चर्य हुआ कि गाँधीजी को वह पुरानी स्मृति इस समय भी याद आ गई और मेरे प्रोफेसर होने पर बधाई दी। लेकिन अपनी धोती की पट्टी से घड़ी निकालकर कहा, 'प्रोफेसर को दस मिनट की देर हो गई।' बार-बार ज़ोर दिया 'दस मिनट', 'दस मिनट' की देर हो गई और इसी वाक्य के अंतिम स्वरों में उन्होंने जो बात कही, उससे मुझे जीवन भर की एक अभूतपूर्व प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्होंने कहा, जब प्रोफेसर को दस मिनट की देर होती है तो उसके विद्यार्थी को दस घंटे की देर होती है। जब विद्यार्थी को दस घंटे की देर होती है तो समाज को

गाँधीजी ने बार-बार ज़ोर दिया – दस मिनट, दस मिनट। क्यों ?

दस महीने की देर होती है। जब समाज को दस महीने की देर होती है, तब देश दस वर्ष पीछे चला जाता है। प्रोफेसर की दस मिनट की देरी देश को दस वर्ष पीछे ले जाती है। और मुझसे कहा, 'ये बात ठीक है न प्रोफेसर साहब?' मैं क्या उत्तर देता। मैंने कहा, 'बापू, देर के लिए क्षमा चाहता हूँ। माँ की ममता ने मुझसे देरी करवा दी।' उन्होंने तीव्र स्वर में कहा — 'माँ की ममता अपनी जगह है और समय की गति अपनी जगह है। दोनों को अलग-अलग रखना चाहिए। मेरी आँखों से जैसे मेरे कार्यकलापों के सारे व्यवधान दूर हो गए और समय की तीक्ष्ण नोक अपनी प्रखरता के साथ सर्वदा के लिए मेरे हृदय में चुभ गई। मैंने बापू से कहा, मैं अपने समय के एक एक क्षण का ध्यान रखूँगा। इस बार आप मुझे क्षमा कर दें।' उन्होंने कहा, 'विदेशों में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने समय की गति को पहचाना है। वे समय के एक-एक क्षण को रत्नकण की भाँति चयन करते रहे हैं। और उसे रचनात्मक कार्यों की कसौटी पर कसते हैं। हमारे देश में समय को धूल-कणों की भाँति फूँक मारकर उड़ा दिया जाता है। जब हमारा देश समय की कीमत करना जानेगा, तब हमारे देश को किसी बात की कमी नहीं रहेगी। मैंने विनम्रता से कहा कि 'नीति में कहा गया है कि जब किसी महापुरुष के पास दर्शनार्थ कोई व्यक्ति पहुँचता है तो उसे भेंट लेकर जाना चाहिए, मैं भी आपकी भेंट के लिए अपना कवि-धन लाया हूँ। वह है मेरा काव्य संग्रह 'चित्ररेखा'। ऐसा कहकर मैंने चित्ररेखा की प्रति खद्दर के वस्त्र में लपेटकर भेंट कर

प्रोफेसर की दस मिनट की देरी देश को दस वर्ष पीछे ले जाती है। गाँधीजी ने ऐसा क्यों कहा ?

दी। श्रीमन्नारायण ने कहा, 'इस ग्रंथ पर इन्हें हिंदी काव्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार दो हज़ार रुपया प्राप्त हुआ है। गाँधीजी ने घूरते हुए कहा, उस पुरस्कार में मेरा हिस्सा कहाँ है? मुझे हरिजनोद्धार के लिए रुपया चाहिए। मैं तो बनिया हूँ, पैसा इकट्ठा करना जानता हूँ। मैंने कहा, 'बापू, यह एक वर्ष पहले की बात है। तब से रुपया खर्च हो गया। इस समय जो पास है, वह समर्पित करता हूँ।' उन्होंने कहा, 'इसीलिए एक वर्ष बाद आए हो, ताकि बापू को रुपया न देना पड़े। कोई बात नहीं, अब जब भी पुरस्कार मिले तो बापू का ध्यान रखना।' मैंने कहा, 'बापू, इसमें आपके आशीर्वाद की ध्वनि है कि भविष्य में भी मुझे पुरस्कार मिलेगा।' बापू ने हँसते हुए मेरी पुस्तक 'चित्ररेखा' खोली और कहा, 'यह तो गीतों का संग्रह है, तुम गाना गाते हो?' मैंने कहा, 'बापू, मेरी माँ बहुत अच्छा गाती थी, मुझे भी गीतों के स्वर मालूम है। लेकिन शास्त्रीय ढंग से संगीत का अभ्यास नहीं कर पाया।' उन्होंने पूछा, 'तुम सुबह कितने बजे उठते हो?' मैंने कहा, 'सुबह पाँच बजे।' उन्होंने कहा, टहलने जाते हो?' तो उत्तर दिया, 'जाता हूँ।' उन्होंने प्रश्न किया, 'चिड़ियों का संगीत सुना है?' मैंने कहा, 'ऐसा कौन है जो सुबह टहलने के लिए जाए और चिड़ियों का संगीत न सुने।' उन्होंने हँसकर कहा, 'चिड़ियों ने किस शाला में संगीत सीखा है?' मैं निरुत्तर हो गया। मैंने कहा, बापू, उन्हें किस अध्ययनशाला की आवश्यकता है?' उन्होंने कहा, 'जो स्वर हृदय से निकलता है, आत्मा से प्रस्फुटित होता है, वही संगीत है और इस

लेखक निरुत्तर हो गया। क्यों?

दृष्टि से मैं भी अच्छा गायक हूँ। क्योंकि हर बात को मैं अपने अंतस्तल से कहता हूँ। तुम भी जो बात कहो वह कंठ से न कहो, हृदय से कहो।' फिर उन्होंने मेरी काव्य-पुस्तक लेकर एक गीत गुनगुनाना शुरू कर दिया और मुझसे पूछा, 'तुम्हें मेरा संगीत अच्छा लगा?' मैंने बापू से कहा, 'मेरी कविता धन्य हो गई, जो आज आपके कंठ से उच्चरित हो रही है।' मेरी प्रशंसा के स्वरों को रोककर उन्होंने घड़ी निकाली और कहा, 'तुम्हारे मिलने का समय समाप्त हो गया है।' मैंने उन्हें प्रणाम किया और श्रीमन्नारायण के साथ उनकी कुटी से बाहर चला आया।

गाँधीजी की राय में बात कैसे कहनी है?

अनुभव हुआ जैसे आनंद और प्रकाश के मानसरोवर में स्नान कर मैं बाहर निकला हूँ। इस महामानव के एक-एक वाक्य में जैसे जीवन हज़ार-हज़ार पंखुड़ियों में खिलकर आनंद और उत्साह की सुगंध संसार के कण-कण में व्याप्त कर रहे हैं। यह मानव शरीर से कितना दुर्बल है, लेकिन आत्मा से कितना शक्तिशाली है, जिसके एक एक वाक्य में हमारे देश की राजनीति, हमारे देश का दर्शन, हमारे देश का धर्म नई-नई परिभाषाएँ सीख रहा है। शताब्दियों में उत्पन्न होनेवाले ऐसे महामानव के जन्म से हमारे देश ने जिस स्वाधीनता का स्वप्न देखा था, वह साकार होकर भी स्थिर नहीं रह सका। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हमें आज फिर गाँधी-दिशा की ओर जाना पड़ेगा।

'हमें आज फिर गाँधी-दिशा की ओर जाना पड़ेगा' अपना विचार प्रकट करें।

अनुवर्ती कार्य

➤ **संस्मरण की घटनाओं को क्रम से लिखें।**

* लेखक गाँधीजी की सेवाग्राम कुटी पर श्रीमन्नारायण के साथ पहुँच गया।
* गाँधीजी ने गीत गुनगुनाया।
* कस्तूरबा ने लेखक को सामने बिठाकर खाना खिलाया।
* उत्तमा परीक्षा की मौखिकी के लिए लेखक वर्धा पहुँचा।
* बापू ने हँसते हुए पुस्तक चित्ररेखा खोली ।
* निर्धारित समय से दस मिनिट का विलंब हो गया।
* गाँधीजी ने समय के महत्व के बारे में समझाया।
* मेरी प्रशंसा के स्वरों को रोककर उन्होंने घड़ी निकाली।

➤ **संस्मरण के आधार पर रामकुमार वर्मा का आत्मकथांश तैयार करें।**

* गाँधीजी से भेंट होना।
* समय की पाबंदी रखना।
* हरिजनोद्धार के लिए पैसा माँगना।
* चित्ररेखा का गीत गुनगुनाना।

➤ **निबंध लिखें।**

विषय : समय की पाबंदी

सहायक बिंदुः

* समय का मूल्य
* समय की गति की पहचान
* व्यक्ति, समाज और देश की उन्नति में समय का महत्व
* समय का सटीक उपयोग

निबंध की परख, मेरी ओर से

- *उपक्रम है।*
- *उपविषयों को अनुच्छेदों में लिखा है।*
- *सभी बिंदुओं को विकसित करके अपना मत प्रकट किया है।*
- *अपने मत का समर्थन किया है।*
- *उपसंहार है।*

➤ **ICT की सहायता से गाँधीजी के जीवन की बारीकियों को दिखानेवाले वृत्तचित्र दिखाएँ।**

सर्वनाम

➤ **'चीफ की दावत' कहानी से सर्वनाम युक्त वाक्य चुनकर लिखें और सर्वनामों को रेखांकित करें।**

मैं बाहर से ताला लगा दूँगा।

जो दृश्य उन्होंने देखा उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं।

क्यों माँ कोई पुरानी फुलकारी घर में है?

यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड दिया?

....

....

वक्ता, श्रोता या किसी अन्य के लिए प्रयुक्त शब्द

मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, यह, वे, ये	—	पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चित वस्तु का बोध करानेवाला शब्द यह, वह, ये, वे	—	निश्चयवाचक सर्वनाम
प्रश्न का बोध करानेवाला शब्द क्या, कौन	—	प्रश्नवाचक सर्वनाम
अनिश्चित वस्तु का बोध करानेवाला शब्द कोई, कुछ	—	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
संबंध का बोध करानेवाला शब्द जो-वह	—	संबंधवाचक सर्वनाम
स्वयं का बोध करानेवाला शब्द आप	—	निजवाचक सर्वनाम

वाक्य में संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्द - सर्वनाम

➤ **'चीफ़ की दावत' कहानी से सर्वनाम चुनकर खंभे में भरें।**

पुरुषवाचक	**निश्चयवाचक**	**प्रश्नवाचक**	**अनिश्चयवाचक**	**संबंधवाचक**	**निजवाचक**

निर्गुण भक्तिकाव्य

भक्ति साहित्य

- **निर्गुण काव्यधारा**
  - **ज्ञानाश्रयी (संत काव्य)**
  - **प्रेमाश्रयी (सूफ़ी काव्य)**
- **सगुण काव्यधारा**
  - **रामभक्ति**
  - **कृष्णभक्ति**

भक्तिकाल

भक्ति शब्द से श्रद्धा का बोध होता है। काल का अर्थ हुआ समय। भक्तिकाल कहने से ऐसे किसी विशेष कालखंड का बोध होता है जिसमें ईश्वर की प्रार्थना, स्तुति,कीर्तन संबंधी साहित्य बड़ी मात्रा में लिखा गया हो।

राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियाँ

प्रस्तुत काल में भारतीय शासन की बागड़ोर विदेशी शासकों के हाथों में थी। एकता की भावना बिलकुल न थी। जाति एवं धर्म के नाम पर लोग आपस में झगड़ते रहे। ऐसे अशांत वातावरण में शांति की अपेक्षा थी और उसकी खातिर निर्गुण-सगुण कवियों ने अपनी लेखनी चलाई थी। सत्य, अहिंसा, विनय, समन्वय आदि की प्रतिष्ठा करके इस काल में जिस साहित्य का निर्माण हुआ उसकी विपुलता तथा विशिष्टता को देख

साहित्यालोचकों ने इसे हिंदी साहित्य का सुवर्णकाल कहा।

भक्तिकाव्य का विकास

भक्तिसाहित्य का प्रमुख रूप से दो धाराओं में विकास हुआ—निर्गुण भक्ति साहित्य और सगुण भक्ति साहित्य। इन दोनों के दो-दो उपभेद ज्ञानाश्रयी और प्रेमाश्रयी कहलाए। सगुण साहित्य के उपभेद राम तथा कृष्ण पर आधारित थे।

निर्गुण काव्यधारा

बिना आकार या रूप के भगवान के प्रति की जानेवाली भक्ति ही निर्गुणभक्ति है। इस श्रेणी में आनेवाले भक्तकवि ईश्वर के अवतार रूप को नहीं मानते। इनके अनुसार ईश्वर इंद्रियों के अनुभव की वस्तु नहीं है। ज्ञान या प्रेम के ज़रिए ये जाने जा सकते हैं। इस प्रकार निर्गुण काव्य के दो रूप प्रकट हुए — ज्ञानमार्गी शाखा और प्रेममार्गी शाखा।

ज्ञानाश्रयी काव्य अथवा संतकाव्य और कबीरदास

ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास थे। कबीर संत काव्य-परंपरा के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। इस धारा के कवि वास्तविक जीवन में संत थे। जनसाधारण की भाषा में सरल से सरल उदाहरणों को पेश करके जीवन के गंभीर लक्ष्यों का विश्लेषण करना वे अपना धर्म मानते थे। कबीरदास, रैदास आदि यही किया करते थे।

कबीरदास की विधिवत् शिक्षा-दीक्षा न हुई थी। फिर भी साधु–संतों की संगति में आकर उन्होंने जीवन के संबंध में बहुत कुछ जान लिया। देश–देशांतर का भ्रमण करके अन्य भाषाओं और संस्कृतियों से परिचित हुए। नाथपंथियों से प्रभावित होने के कारण गुरु महिमा, हठयोग आदि की ओर वे आकृष्ट दिखाई देते हैं। तभी तो उन्होंने गाया था-

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार।।

श्रेष्ठ गुरु की महिमा का कोई अंत नहीं। ऐसे गुरु हमें दृष्टि देते हैं। हममें अनंत नेत्रों को खोलकर तथ्यों को उनकी निज स्थिति में देखने की शक्ति वे हमें प्रदान करते हैं और आखिर ईश्वर के दर्शन भी करा देते हैं।

निर्गुण ब्रह्म की महिमा का बखान करते हुए कबीरदास यह भी बता देते हैं कि उस परम सत्ता की शक्ति सब कहीं फैली हुई है। जिधर भी दृष्टि दौड़ाएँ, उस लाल की लालिमा दिखाई देगी।

रहस्यवादी कवियों में कबीर अग्रणी हैं। परमात्मा के एक छोटे अंश के रूप में ही वे जीवात्मा को मानते हैं। जीवात्मा, परमात्मा की छवि को उजागर करनेवाला एक माध्यम मात्र है। दोनों में एक ही प्रकार का तत्व विद्यमान है। इस संसार से ही अपनाए गए पंचतत्वों से निर्मित अपने शरीर में कबीर खुद अधिकार स्थापित न करते। सबका श्रेय वे ईश्वर को ही देते हैं। आखिरी वक्त पंचभूतों को लौटा देने पर उनका अपना कुछ भी

शेष न रह जाता। रहस्यवाद की पुष्टि करनेवाला उनका और एक दोहा है-

जल में कुंभ, कुंभ में जल, बाहरि भीतरि पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समानां, यह तथ्य कह्यौ गियानी।

समाज में हम ऐसे कई लोगों को देखते हैं जो अपने को बड़े पंडित समझते हैं। कबीर की राय में बड़े-बड़े ग्रंथों के अध्ययन मात्र से कोई भी पंडित नहीं बनता। सच्चा पंडित बनने को इतने सारे ग्रंथों का अध्ययन भी आवश्यक नहीं है। प्रेम का अर्थ जो ठीक प्रकार से सीख लेता है वही सच्चा पंडित कहलाएगा ।

आधुनिक संदर्भ में भी कबीर की कविता अत्यधिक महत्व रखती है। हम बहुधा देखते हैं कि सब कोई प्रभुता के पीछे पागल बन फिरते हैं, लेकिन प्रभु का स्मरण थोड़े ही करते हैं। कबीरदास का कहना है कि प्रभुता प्राप्त करने को इतनी सारी मुसीबतें झेलने की कोई ज़रूरत नहीं। प्रभु का स्मरण करते रहो, स्वाभाविक रूप से प्रभु से जुड़कर प्रभुता भी एक सहेली की तरह निकट आ जाएगी।

हिंदु-मुसलमान संस्कृतियों के गुण-दोषों पर कबीर की दृष्टि पड़ी थी और दोनों धर्मों में प्रचलित अंधविश्वासों पर उन्होंने कड़ा आघात किया था। उनका विश्वास था कि मानव का उद्धार तभी संभव है जब उसकी अंतर्दृष्टि खुले। दिखावे और बाह्याडंबर पर उनका ज़रा भी विश्वास न था। इसलिए वे हास्य-व्यंग्य की शैली में कह उठे-

माला फेरत जग मुआ, फिरा न मन का फेर।
करका मनका डारि दे, मनका मनका फेर।

हम देखते हैं कि क्रांतिकारी कवि कबीर संकीर्ण भावनाओं से प्रेरित नहीं हैं। दूसरे भक्ति-संप्रदायों से उन्होंने कोई वैर न रखा। वैष्णवों की अहिंसा-भावना के वे हिमायती थे। हठयोग साधना पर भी उनका अटल विश्वास था। ये सब इस बात का प्रमाण देते हैं कि कबीर के विराट व्यक्तित्व पर अनेक संप्रदायों का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव पड़ा है और उन्हें एक क्रांतिकारी कृतिकार और समाज-सुधारक बना लेने में इन सबका बड़ा सहयोग रहा है।

प्रेमाश्रयी काव्य अथवा सूफ़ी-काव्यधारा

निर्गुण भक्ति के क्षेत्र में जहाँ संत साहित्य का प्रसार दिखाई देता है वहाँ तक उसीके साथ साथ विशुद्ध प्रेम की भावना से ओत-प्रोत साहित्य भी मिलता है। निर्गुण भक्ति धारा के दो प्रमुख रूप बन गए। पहले रूप का नाम ज्ञानाश्रयी शाखा और दूसरे का प्रेमाश्रयी शाखा।

प्रेमाश्रयी शाखा विशुद्ध सूफी सिद्धांतों के आधार पर हिंदी कवियों ने अपनाई जिसके फलस्वरूप हिंदी में प्रेम-आख्यानों का प्रादुर्भाव हुआ। इस शाखा के कवियों ने अपने प्रेममार्ग और उसके सिद्धांतों का प्रतिपादन कल्पित कहानियों द्वारा किया। प्रेममार्ग की इस शाखा का प्रतिनिधि कवि मालिक मुहम्मद जायसी है और 'पद्मावत' इस काल का सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ है।

- ✶ इस धारा के सभी कवि सूफ़ी थे जो स्वभाव और जीवन में बहुत सरल थे।
- ✶ ज्ञानाश्रयी कवियों की भाँति प्रेमाश्रयी शाखा के कवि भी गुरु को ईश्वर के समान मानते हैं।
- ✶ ये कवि सर्वेश्वरवाद की ओर अधिक झुके प्रतीत होते हैं।
- ✶ ये किसी भी धर्म के कट्टर अनुयायी नहीं थे और हिंदु-मुस्लिम एकता को अच्छा समझते थे।
- ✶ इस धारा के ग्रंथ विशेष रूप से विशुद्ध अवधी भाषा में मिलते हैं।
- ✶ देशज अवधी भाषा में इस धारा का साहित्य रचा गया।

सूफ़ी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ संक्षिप्त रूप में

- ✶ मसनवी पद्धति
- ✶ हिंदु संस्कृति का चित्रण
- ✶ समासोक्ति पद्धति
- ✶ अवधी भाषा
- ✶ प्रबंध काव्यशैली
- ✶ नायक का महत्व
- ✶ प्रेमभावना

अनुवर्ती कार्य

➤ **ICT की सहायता से निर्गुण भक्तिकालीन कविताओं पर आधारित गीत और दृश्य दिखाएँ।**

वाद-विवाद चलाएँ।

कबीरदास जैसे संत पंद्रहवीं सदी में भक्ति के नाम पर होनेवाले पाखंडों पर अपनी कविता द्‌वारा प्रहार करते थे। वर्तमान समय में भी ऐसे पाखंडों से समाज पूरी तरह मुक्त नहीं। इसपर एक वाद-विवाद चलाएँ।

विषय - भक्तिः अंतर्मन की बनाम बाह्‌याडंबर की।

ये गतिविधियाँ अपनाएँ

- *एक छात्र संचालक बने।*
- *फिर कक्षा के छात्र दो दलों में बँटें।*
- *वे दलों में चर्चा करें।*
- *पहला दल मशीनीकरण के अनुकूल चर्चा-बिंदु तैयार करे।*
- *दूसरा दल मशीनीकरण के प्रतिकूल चर्चा-बिंदु तैयार करे।*
- *दोनों दल आमने-सामने बैठें।*
- *संचालक विषय प्रस्तुत करे।*
- *पहला दल अपना वाद प्रस्तुत करे और अपने मत का समर्थन करे।*
- *दूसरा दल उसका प्रतिवाद प्रस्तुत करे और अपने मत का समर्थन करे।*
- *वाद-प्रतिवाद ज़ारी रखे।*
- *संचालक ज़रूरी जगहों पर हस्तक्षेप करे।*
- *अंत में संचालक द्‌वारा संक्षिप्तीकरण।*

शब्दार्थ

कबीरदास

पोथी	-	धर्मग्रंथ
जग	-	संसार
मुआ	-	मरा
अंगणि	-	आँगन
कुटी	-	कुटिया
सुभाइ	-	चरित्र
कालि	-	कल ही
मोल	-	मूल्य
म्यान	-	खड्गकोश
नीपजे	-	उपजना
बिकाइ	-	बिकना
परजा	-	प्रजा
काहू	-	किसीसे
बैर	-	वैर

चीफ की दावत

दावत	-	खाने का आयोजन
मले हुए	-	लगाए हुए
फेहरिस्त	-	सूची
मुकम्मल	-	पूरा
फालतू	-	बेकार
सहसा	-	अचानक
अड़चन	-	बाधा
गृहिणी	-	पत्नी
डिनर	-	रात का खाना
खीझना	-	नाराज़ होना
सुभीते से	-	अच्छे तरीके से
निबट लेना	-	पूरा कर लेना
गुसलखाना	-	स्नानघर
अवाक्	-	आश्चर्यचकित
उधेड़बुन	-	योजना, परेशानी
खाट	-	बिस्तर
तरतीब	-	बेहतरीन
झमेला	-	परेशानी
कोई हर्ज नहीं	-	कोई बात नहीं
जेवर	-	आभूषण
तिनक कर	-	नाराज़ होकर
तअल्लुक	-	संबंध
गुमसुम	-	चुपचाप
अनपढ़	-	बिना पढ़ी-लिखी
हुक्म	-	आदेश
कामयाब	-	सफल
रौ	-	लय
रोब	-	प्रभाव
नशा हिरन होना	-	नशा टूट जाना
ऐन	-	ठीक
थम जाना	-	रुक जाना
क्षोभ	-	आक्रोश
उमर भर	-	जीवन भर
ठप्पा	-	पंजाबी लोकगीत

बहुतेरा	-	बहुत बार
चिरायु	-	दीर्घ जीवन
निस्तब्धता	-	सन्नाटा
ऊँघना	-	सोना
काया	-	शरीर
इकरार	-	वायदा
तरक्की	-	पदोन्नति
खिदमत	-	सेवा-सत्कार।

महात्मा गाँधी

अधिवेशन	-	बैठक
धूमधाम	-	अत्यधिक उमंग
मेधावी	-	तीव्र बुद्धिवाला
तक़रीर	-	भाषण
बुलंद आवाज़	-	ऊँची आवाज़
तादाद	-	संख्या
ध्रुवनक्षत्र	-	उत्तर दिशा में सदा एक ही स्थान पर स्थिर रहनेवाला तारा
अस्त-व्यस्त	-	इधर-उधर बिखरा हुआ
रजताक्षर	-	चाँदी-सा अक्षर
प्रवक्ता	-	Lecturer
सर्वेक्षक	-	निरीक्षक
विलंब	-	देरी
नोक	-	आगे का नुकीला भाग
फूँक मारना	-	मुँह से तेज़ हवा फेंकना
घूरना	-	क्रोधपूर्वक देखना
बनिया	-	व्यापारी
पंखुडी	-	फूल की पत्ती

इकाई तीन

आसरा की आशा

सूरदास के पद
तितली
यहाँ रोना मना है
विशेषण
सगुण भक्तिकाव्य

अधिगम उपलब्धियाँ

- सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।
- छायावादी कविता की शैली एवं प्रवृत्तियाँ पहचानकर आस्वादन टिप्पणी लिखता है।
- सौंदर्यानुभूति पाता है।
- एकांकी की शैली एवं विशेषताएँ पहचानकर पात्रों का चरित्र-चित्रण करता है।
- एकांकी का आस्वादन करता है और मंच की अवधारणा पाकर मंचीकरण करता है।
- परिवार एवं समाज में नारी के प्रति स्वस्थ एवं महत्वपूर्ण दृष्टिकोण अपनाता है।
- विशेषण का प्रयोगसंबंधी अवधारणा पाकर उनका वर्गीकरण करता है।
- सगुण भक्तिकाव्य की विशेषताओं पर चर्चा करके आलेख तैयार करता है।

सूरदास

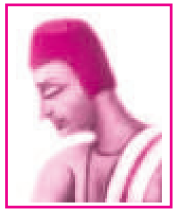

जन्म	:	सन् 1478, सीही गाँव
मृत्यु	:	सन् 1583, परासौली में
रचनाएँ	:	सूरसागर, साहित्यलहरी, सूरसारावली
विशेषताएँ	:	* अष्टछाप के प्रमुख कवि। कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वप्रमुख कवि। * रचनाओं में भक्ति, श्रृंगार, दर्शन, वात्सल्य आदि का सुंदर सामंजस्य।
देन	:	पदों में दास्यभाव एवं सख्यभाव की अभिव्यक्ति। वात्सल्य को रस कोटि तक पहुँचाने में अद्भुत सफलता।

*बालकृष्ण से उद्धृत **पद** में कृष्ण की बाललीला का अनूठा चित्र मिलता है। माता यशोदा से तुतली वाणी में बात करनेवाले बालक कृष्ण की छवि अतुलनीय है। इसमें बालसहज हठ, चपलता आदि के सहारे सूरदास ने माता यशोदा के हृदय में उठनेवाले पुत्र-प्रेम का अनूठा रूप दिखाया है।*

पद

मैया कबहि बढ़ेगी चोटी?
किती बार मोहि दूध पिबत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बलि की बेनी ज्यों, व्है, है लांबी मोटी।
काढ़त, गुहत, न्हवावत, ओंछत नागिन सी भुँइ लोटी।
काचो दूध पियावत पचि पचि, देत न माखन रोटी।
'सूर' स्याम चिरजिव दोऊ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

- माँ से कृष्ण की शिकायत क्या है?
- हरि-हलधर से क्या तात्पर्य है?

अनुवर्ती कार्य

➤ **पद से तुकांत शब्द ढूँढ़ें।**

जैसे : चोटी, ..., ...

➤ **रेखांकित शब्द के स्थान पर पद में प्रयुक्त शब्द लिखें।**

कितनी बार मोहि दूध पीते भई

यह आज भी है छोटी।।

कच्चा दूध पियावत बार-बार

➤ **निम्नलिखित आशयवाली पंक्तियाँ चुनें।**

- मेरी चोटी कब बढ़ेगी?
- यह आज भी छोटी है।
- यह बलराम की वेणी की भाँति लंबी और मोटी होगी।
- वेणी नागिन की तरह पृथ्वी पर लोटने लगेगी।
- तुम बार-बार मुझे कच्चा दूध पिलाती हो।
- दोनों भाइयों की जोड़ी चिरंजीवी हो।

➤ **कृष्ण की शिकायतें टिप्पणी के रूप में लिखें।**

➤ **मान लें, कृष्ण की हर शिकायत पर माँ यशोदा अपना तर्क प्रस्तुत करती है। पद के आधार पर माँ-बेटे के बीच का वार्तालाप विकसित करें।**

सुमित्रानंदन पंत

जन्म	:	20 मई 1900 कौसानी, उत्तराखंड
मृत्यु	:	28 दिसंबर, 1977, इलाहाबाद
प्रमुख रचनाएँ	:	वीणा, पल्लव, गुंजन, युगांत, युगवीणा, ग्राम्या, चिदंबरा
उपलब्धियाँ	:	पद्मभूषण ज्ञानपीठ पुरस्कार
विशेषताएँ	:	* हिंदी के युग निर्माता कवि * समय के साथ बदलती काव्य-कला * भाषा कोमल, मधुर और सरस
देन	:	कवि की भाषा स्वनिर्मित खड़ीबोली। गीतिशैली के हिमायती। कोमल-कांत-पदावलियों से युक्त शैली।

*आधुनिक हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है छायावाद। लाक्षणिकता, चित्रमयता, नूतन प्रतीक-विधान, कोमल-कांत-पदावलि, मधुरता, सरसता आदि छायावाद की पहचान है। पंत की **तितली** कविता में छायावाद की संपूर्ण विशेषताएँ समाहित हैं।*

तितली

नीली, पीली औ' चटकीली
पंखों की प्रिय पंखुड़ियाँ खोल,
प्रिय तितली! फूल-सी ही फूली
तुम किस सुख में हो रही डोल?

चाँदी-सा फैला है प्रकाश,
चंचल अंचल-सा मलयानिल,
है दमक रही दोपहरी में
गिरी घाटी सौ रंगों में खिल!

तुम मधु की कुसुमित अप्सरि-सी
उड़-उड़ फूलों को बरसाती,
शत इंद्रचाप रच-रच प्रतिपल
किस मधुर गीति-लय में गाती?

तुमने यह कुसुम-विहग लिवास
क्या अपने सुख से स्वयं बुना?
छाया-प्रकाश से या जग के
रेशमी परों का रंग चुना?

'कुसुम विहग लिबास' से क्या तात्पर्य है ?

क्या बाहर से आया, रंगिणी!
उर का यह आतप, यह हुलास?
या फूलों से ली अनिल-कुसुम!
तुमने मन के मधु की मिठास?

चाँदी का चमकीला आतप,
हिम-परिमल चंचल मलयानिल,
है दमक रही गिरि की घाटी
शत रत्न-छाय रंगों में खिल

चित्रणि! इस सुख का स्रोत कहाँ
जो करता निज सौंदर्य सृजन?
वह स्वर्ग छिपा उर के भीतर
क्या कहती यही, सुमन-चेतन?

कवि ने तितली को 'चित्रणि' क्यों पुकारा?

अनुवर्ती कार्य

➤ **कविता से प्रकृतिसौंदर्य को सूचित करनेवाले प्रयोग चुनकर लिखें।**

जैसे : फूल-सी ही फूली, ...

➤ **तितली की शोभा के लिए प्रयुक्त कल्पनाएँ कौन-कौन-सी हैं ?**

➤ *'वह स्वर्ग छिपा उर के भीतर क्या कहती रही, सुमन-चेतन ?'*

-भाव अपने शब्दों में लिखें।

➤ **छायावाद की निम्नलिखित विशेषतावाली सबसे श्रेष्ठ पंक्ति कविता से चुनें।**

- चित्रमयता
- मधुरता
- नूतन प्रतीकविधान
- अतिशय कल्पना

➤ **तितली कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।**

ममता कालिया

जन्म : 2 नवंबर 1940, वृंदावन, उत्तरप्रदेश

प्रमुख रचनाएँ : उपन्यास - दौड़, बेघर, नरक दर नरक, प्रेम कहानी, एक पत्नी के नोट्स

एकांकी-संग्रह - यहाँ रोना मना है, आप न बदलेंगे

कहानी-संग्रह - छुटकारा, उसका यौवन, प्रतिदिन

उपलब्धियाँ : कहानी पत्रिका सम्मान, यशपाल सम्मान

संप्रति : इलाहाबाद में प्राचार्या।

ई-मेल : Prabudhkalia@hotmail.com

विशेषताएँ :
* साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू बिखेरा।
* अपने लेखन में रोज़मर्रा के संघर्ष में युद्धरत स्त्री का व्यक्तित्व उभारा।
* अपनी रचनाओं में न केवल महिलाओं से जुड़े सवाल उठाती, बल्कि उनके उत्तर देने की कोशिश भी करती।

देन : नारी संवेदना के विविध पक्षों को गद्य के चित्रपट पर अंकित करती है।

शोषण का शिकार होनेवाली विवाहिता नारी की जीवन-व्यथा को रेखांकित करनेवाला एकांकी है - **यहाँ रोना मना है।**

यहाँ रोना मना है

पात्र

कालिंदी
कालिंदी की माँ
मोहन की माँ
मोहन के पिता
जेठ-जेठानी
सहेलियाँ, बच्चे और अन्य स्त्रियाँ

दृश्य एक

(लड़कियों का जमघट। हिलमिलकर हँस रही हैं। घर के कमरे में ही झूला डाला हुआ है। लड़कियाँ बारी-बारी से झूल रही हैं। सभी अठारह से बीस की उम्र के आसपास हैं। किसीने लहँगा ओढ़नी पहनी हुई है, किसीने सीधे पल्ले की धोती। एकाध लड़की ब्याही हुई है। उनकी माँग भरी है, टिकुली लगी है, साज-शृंगार अन्य लड़कियों से ज़्यादा। सब मिलकर गा रही हैं।

कालिंदी : 'नन्हीं नन्हीं बूँदियाँ रे सावन का मेरा झूलना
एक झूला डाला मैंने अम्मा के राज में
हाँ अम्मा के राज में
संग में सहेलियाँ रे हिल-मिलकर मेरा झूलना
नन्हीं नन्हीं बूँदियाँ रे सावन का मेरा झूलना।

सहेली : एक झूला डाला मैंने सासू के राज में
हाँ, सासू के राज में
आधी आधी रतियाँ रे चक्की का मेरा पीसना।

समवेत : नन्हीं-नन्हीं बुँदियाँ रे सावन का मेरा झूलना।

(सब लड़कियाँ खिलखिलाकर हँसती हैं। कालिंदी की माँ का प्रवेश। साड़ी का आँचल सीधा। कस्बाई किस्म की स्त्री। व्यक्तित्व में सादगी और वात्सल्य।)

माँ : हप्पो, आज बस झूलना ही झूलना है या कुछ खाना-पीना भी है। अजब लड़की है यह। नाचने-गाने के आगे कुछ भाता ही नहीं है।

सहेली : मौसी, यह बताओ तुम कालिंदी को हप्पो क्यों कहती हो? यह भी कोई नाम हुआ, न तुक न मेल।

माँ : अरे नाम की मत पूछ। जब यह पैदा हुई तो एकदम गुलगुली-सी थी। इसके भैया ने देखकर कहा, अम्माँ यह तो इत्ती मुलायम है, इसे तो मैं हप्प कर जाऊँ। बस तभी से इसका नाम हप्पो पड़ गया।

दूसरी सहेली : मौसी, जीजी को हप्पो न बुलाया करो। कल को ब्याह होगा तो यह नाम अच्छा लगेगा?

माँ : अब ब्याह हो जाए चाहे बच्चे। हमारी तो यह हप्पो बिटिया ही रहेगी, है न। चलो तुम सब, कुछ खा लो। मैंने पुए पकाए हैं। (सब जाती हैं)

दृश्य दो

(घर में चहल-पहल। नाइन दीवारों भर हाथ के छापे लगा रही है। कुछ लड़कियाँ आम के पत्तों की बंदनवार सजा रही हैं। कमरे के बीच दरी पर कुछ औरतें ढोलक बजाते हुए बन्नी गा रही है।

चाँद तारों से आएगी बारात
बन्नी ज़रा धीरे चलो
चाँद-तारों से आएगी बारात, बन्नी.....
बन्नी तेरा झूमर सवा लाख का
टीके पे छाई है बहार
बन्नी ज़रा धीरे चलो -

एक सहेली : ए चाची ढोलक ज़रा कायदे की बजाओ, ठनक नहीं रही है।

दूसरी सहेली : सबसे अच्छी ढोलक तो कालिंदी खुद बजाती है।

पहली सहेली : बस करो, अपने ब्याह में खुद थोड़े ही बजाएगी। लाओ मुझे दो।

(ढोलक टनकती है। बाहर चहल-पहल, फिर आवाज़ें 'बारात आ गई, बारात आ गई'। लड़कियाँ एक दूसरी पर गिरती-पड़ती बारात देख रही हैं।)

पहली सहेली : हाय! दूल्हा कितना अच्छा है।

दूसरी सहेली : अचकन देखो उसकी, एकदम चकाचक।

तीसरी सहेली : साफ़ा और कलगी तो उससे भी ज़्यादा चमक रही है।

पहली सहेली : अरी, बन्नी को भी दिखा दो खिड़की से। नहीं मन की मन में रह जाएगी। जाने मिलन में कितनी देर है अभी। (कालिंदी को लड़कियाँ खिड़की की ओर ठेलती हैं। वह हटती है। ब्याह की रस्में। फिर विदा। ताँगे के साथ साथ नेपथ्य में धीमा-धीमा बिदाई गीत। ताँगा आकर एक तंग गली के आखिरी मकान पर रुकता है।)

(एकदम पुराने ढंग का खस्ता हाल मकान। बाहर के हिस्से में गल्ले की दुकान। अंदर सीलन, अँधेरा और घुटन। जैसे ही वर-वधू अंदर पहुँचते हैं, लड़के के पिता हड़बड़ी में आते हैं।)

पिता : मोहन भई, पोशाक जल्दी से उतारकर दे दे, बेफिज़ूल किराया चढ़ रहा है।

(मोहन सिर पर से साफ़ा, कलगी, बदन पर से अचकन और तलवार उतार कर दे देता है। पिता यह काम इतनी फुर्ती से करते हैं कि दूल्हे के शरीर पर केवल जाँघिया-बनियान ही रह जाते हैं। मोहन की माँ जल्दी से उसे कुरता-पाजामा लाकर देती है)

(कालिंदी दूसरी कोठरी में औरतों के बीच घिरी बैठी है। मुँह दिखाई में औरतें एक-एक, दो-दो रुपया थमा रही हैं। सास बिलकुल पुलिस-मुद्रा में बैठी रकम बटोर रही है।)

एक स्त्री	:	बहू तो बड़ी सुंदर पाई है, मोहन की माँ। तुम्हारे घर में उजाला हो गया।
दूसरी स्त्री	:	और तो सब ठीक है, बस नाक कुछ टेढ़ी लग रही है।
तीसरी स्त्री	:	नाक कैसी भी हो, नकचढ़ी न हो, हमारी बहू की तरह।
पहली स्त्री	:	इसका नाम बड़ा मुश्किल है। कोई अच्छा-सा नाम रखो।
मोहन की माँ	:	मुझे तो अपनी बहू बड़ी पसंद आई। साच्छात लच्छमी।
दूसरी स्त्री	:	यही नाम अच्छा है, लक्ष्मी।

दृश्य तीन

मोहन	:	क्यों अम्मा गुमसुम क्यों बैठी हो?
		(माँ और भी मुँह फुलाकर बैठ जाती है।)
मोहन	:	(पैर दबाते हुए) अम्मा अब तुम्हें आराम करना चाहिए। काम-धाम लक्ष्मी को सौंपकर बस रामायण बाँचा करो।
माँ	:	उस राएवाली को कुछ आए तब न। मैं तो पहले ही सुन आई थी, राए की छोरी, कामकाज में कोरी।
मोहन	:	(हेकड़ी में) तुम कहो तो अभी ठीक कर दूँ।
माँ	:	सो तो मैं कर लूँगी। पर सौ बातों की एक बात, औरत को हमेशा दबाकर रखो।
		(मोहन कोठरी में जाता है। लालटेन के मंदिम प्रकाश में कालिंदी पुराने अखबार का एक फटा टुकड़ा पढ़ रही है। मोहन उसके हाथ से अखबार का टुकड़ा छीनता है।)

मोहन	:	बहुत हो चुकी पढ़ाई-लिखाई। पहले बर्तन माँजना तो सीख लो।
		(कालिंदी अबूझ-सी उसे देखती रह जाती है।)
मोहन	:	(बिगड़कर) क्या बात है घर में कोई भी तुमसे खुश क्यों नहीं है?
कालिंदी	:	(कुछ क्षण चुप, फिर शांत आवाज़ में) मैं भी तो खुश नहीं हूँ।
मोहन	:	(चिल्लाकर) तुम्हारी खुशी क्या होती है, बोलो तुम्हारी खुशी क्या चीज़ है। तुम क्या कोई लाट कलक्टर की औलाद हो।
कालिंदी	:	(शांत मुद्रा, शिकायती स्वर) लाट कलक्टर की औलाद तो वे भी नहीं हैं।
मोहन	:	(क्रोध में) क्या कहा, जुबान लड़ाती है। बदज़ात कहीं की। खबरदार! मेरी माँ के लिए कुछ भी कहा तो -
		(मोहन के चिल्लाने से घर के सब लोग कोठरी के दरवाज़े पर आ जाते हैं। मोहन की माँ कमर पर हाथ धरे अंदर आ जाती है। पिता दहलीज़ पर खड़े हैं। बड़ी बहू छमक-छमक चलकर सास के पास खड़ी हो जाती है। कोठरी के बीचोंबीच गुस्से से थरथराता मोहन खड़ा है। कालिंदी मेमने की तरह मुँह लटकाए बैठी है। बाकी सब के चेहरे पर हिंस्र भाव।)
माँ	:	आगरेवाली से बात पक्की हुई होती तो यह दिन न देखना पड़ता। रात दिन खटता है मेरा मोहन (रोने लगती है) कभी दिन त्योहार छुट्टी मिलती है तो यह चुड़ैल पीछे लग जाती है।

जेठानी : (हाथ मुँह पर रखकर) हाय मैं तो डर गई। मैं कहूँ, भैयाजी को तो कभी आज तक चिल्लाते नहीं सुना, आज क्या हो गया। इत्ते बरस हो गए हमारे बियाह को। हमने तो ऐसी लड़ाई न कभी देखी न सुनी।

माँ : ऐसी लुगाई की जीभ को कैंची से काटकर नाली में फेंक दे।

(सब के उकसाने पर मोहन, प्रदर्शन के अंदाज़ में कालिंदी की चोटी खींच उसका सिर दीवार से टकरा देता है। क्षण भर को पूर्ण अंधकार के बाद प्रकाश। सुबह का समय। घर का हर सदस्य किसी न किसी काम में संलग्न। माँ सब्जी काट रही है। जोठानी चूल्हा जला रही है। कालिंदी आँगन में नल के नीचे बर्तन माँज रही है। जेठानी के तीनों बच्चे आँगन के पार ड्योढ़ी में खेल रहे हैं। एक दूसरे का हाथ पकड़कर बच्चे बारी बदते हैं?)

'अक्कड़ भक्कड़ भम्भे भो
अस्सी नब्बे
पूरे सौ,
सौ में लागा तागा
चोर निकल कर भागा।'

(तभी डाकिया 'पोस्टमैन' कहता हुआ, एक पोस्टकार्ड खुले दरवाज़े के अंदर डाल जाता है। बच्चे झपट्टा मारकर चिट्ठी उठा लेते हैं। उलट-पुलट कर देखते हैं। चिट्ठी का एक कोना फटा हुआ है।

चंद्रभान : चाची की है, राए से आई है।

सूरजभान : चल चाची को दे आएँ।

चंद्रभान : हम तो अम्मा को देंगे।

त्रिलोकी : पहले बाँच तो लो। बाँच लोने में कौन हर्ज है।

(सूरजभान चिट्ठी पढ़ता है। पोस्टकार्ड पर टेढ़ी-मेढ़ी लाइनें खींचकर, बिना किसी विराम-चिह्न के लिखा है।)

सूरजभान : प्रिय बेटी हप्पो, राजी रहो आगे यहाँ का समाचार ठीक नहीं तुम्हारी मैया सोमवार रात सात बजे पेट के फोड़े में चीरा लगते ही स्वर्गवास कर गई। बड़ी तकलीफ़ पाई मछली की तरह तड़प-तड़प के पिरान निकले लल्ला बाबू तब से रोते हैं चिट्ठी को तार समझ कर फौरन से पेश्तर पहुँचो तुम्हारे बाबू। (चिट्ठी पढ़कर सूरजभान का सकपकाना। सब बच्चे डर जाते हैं।)

त्रिलोकी : यह तो ज़रूरी चिट्ठी है।

चंद्रभान : ऐसा करें, चिट्ठी चुपके से राएवाली चाची के पास धर दें।

(बच्चे अंदर जाते हैं। आँगन में राएवाली बैठी बर्तन माँज रही है। बच्चे उसके पास पोस्टकार्ड फेंककर भाग निकलते हैं, राएवाली चिट्ठी बड़े चाव से, राख भरे हाथों से ही उठा लेती है। चिट्ठी पढ़ती है। कुछ समझ न आता। फिर पढ़ती है। पलटकर डाकघर की मोहर देखती है। बाप की लिखावट चीन्हती है। सुन्न बैठी रह जाती है। सास का आँगन में प्रवेश। मुँह में पान की गिलोरी दबी है। कमर में चाबियों का गुच्छा।)

मोहन की माँ : तभी मैं कहूँ बरतन माँजते-माँजते संझा हो गई, आज क्या बात है। देखा तो यहाँ हाथ पर हाथ धरे बैठी सपने देख रही है।

(पैर से एक बरतन टनकाती है। राएवाली चेतना में लौटती है। 'हाय मैया' कहकर वह एक हृदय विदारक चीख मारती है और बेहोश लुढ़क जाती है। घर भर के लोग इकट्ठे हो जाते हैं। माँ का हाथ नचा-नचाकर बोलना 'हाय मैं तो इससे बोली भी नहीं! मुझे देखते ही ऐसी चिल्ला मारी है जैसे रेल का इंजन हो।' जेठ की नज़र पोस्टकार्ड पर पड़ती है। वे उठाकर पोस्टकार्ड पढ़ते हैं। संकेत से बताते हैं 'राएवाली की महतारी सरग सिधार गई।')

(सबका सोच मग्न होना। मोहन के छोटे भाई का ब्याह आठ दिन बाद है।)

माँ : अब ये चली जाएगी पीहर, यहाँ काम कौन सँभालेगा। अभी कुछ भी नहीं किया। कल रामचंद्र का तिलक है।

चेठ : नहीं जी घर की बहू है। बहन-बेटियाँ लाख आएँ, ज़िम्मेदारी तो बहुओं की होती है।

मोहन : पर उसकी मैया मरी है। कायदे से जाना तो चाहिए उसे।

माँ : छोटे भैया के बियाह का कोई चाव नहीं है रे। और जो चली गई तो सूतक नहीं लग जाएगा। सूतक-पातक ये दो पाप कभी न करो। लौट कर काम छूने के काबिल न रहेगी। ब्याह के घर में काम ही काम।

पिता : और अब रोने से माँ तो वापस आ न जाएगी।

जेठ : और क्या? सूरजभान की माँ तो वैसे ही काम करने के काबिल नहीं है। उसके पैर में मोच आ गई है।

माँ : सीधी बात समझा दो उसे। घर के इतने बड़े काम में बहू न हुई तो कितनी जगहँसाई होगी हमारी।

मोहन : ठीक है (अंदर जाता है। अंदर कोठरी में कालिंदी आँचल मुँह में दबाए सिसक रही है। उसे देखकर आँखें पोंछती है, फिर सुबकते हुए कहती है।)

कालिंदी : हमें इसी वक्त राए पहुँचा दो। हमारा जी उड़ा-उड़ा जा रहा है।

मोहन : तो मैं क्या करूँ। जब तक वहाँ से कोई लिवाने नहीं आएगा, हम नहीं भेजेंगे।

कालिंदी : यह कोई न्योतनी तो है नहीं, अम्माँ उठ गई, हम बैठे रह जाएँ।

मोहन : कल रामचंद्र का तिलक है, तुम नहीं जा सकती।

कालिंदी : मैं तो ज़रूर जाऊँगी, चाहे कुछ हो जाए। सब कहेंगे, माँ के मरने में भी नहीं आई।

मोहन : सोच लो। यह घर या वह घर। मेरे भाई का ब्याह है। इस मौके पर चली गई तो वापस घुसने न दूँगा। पड़ी रहना सारी उमर बाप के द्‌वारे।

कालिंदी : हटो यह क्या मज़ाक है, ऐसे में भी कोई रोकता है क्या?

मोहन : मज़ाक करते होंगे तेरे यार। हम तो साफ बात करते हैं। रहना है तो जैसे हम रखें वैसे रहना होगा।

(कालिंदी गाल पर ऐसे हाथ रखती है मानो उसे तमाचा पड़ा हो। उसके होंठ फड़फड़ाते हैं, बोल नहीं पाती। मोहन पीठ फेरकर सो जाता है। कालिंदी की आँखों के आगे माँ के दृश्य-चित्र आते-जाते हैं, तरकारी काटती, पराठे सेंकती, हँसती, बैठती, कालिंदी के माथे का पसीना पोंछती अम्माँ।)

दृश्य चार

(अगला दिन। मेहमानों की चहल-पहल। कालिंदी दौड़-दौड़कर काम कर रही है। कभी किसीके पैर छू रही है। कभी किसीको हाथ जोड़ रही है, कभी पत्तल परोस रही है, कभी दरियाँ बिछा रही है।)

एक मेहमान : मोहन की अम्माँ, बहू कुछ सुस्त लग रही है।

मोहन की माँ : (तपाक से) कल से बुखार चढ़ा है। पर देवर के तिलक का चाव तो देखो, जुटी हुई है काम में। सबेरे से मुँह में दाना नहीं डाला है।

जेठानी : नई साड़ी मिलने का चाव जो करा ले।

दूसरी मेहमान : अरे तो उसे कुछ खिलाओ।

मोहन की माँ : राएवाली आ, एक बालूशाही खा ले। देख कैसी भुरभुरी बनी है।

(कालिंदी वहाँ आसपास कहीं नहीं। 'राएवाली, राएवाली' कहती हुई मोहन की माँ उसकी कोठरी की ओर चल देती है। इस बीच कई लड़कियाँ, औरतें ढोलक लेकर दरी पर बैठ जाती हैं। ढोलक बजाई जाती है। एक औरत बन्ना का स्वर उठाती है। दूसरी स्त्रियाँ स्वर पकड़ती हैं। तभी एक स्त्री 'राएवाली कहाँ है, उसे बुलाओ, उसका गला बड़ा अच्छा है। वह गाएगी' कह उठती है।)

दूसरी स्त्री : जाने दो थकी होगी। कमर सीधी कर लेगी।

तीसरी स्त्री : वाह देवर के ब्याह में नहीं गाएगी तो कब गाएगी? बुलाओ राएवाली को।

(कोठरी में राएवाली बिस्तर पर आँखों पर बाँह रखे निढ़ाल पड़ी है। सास एक क्षण नरमी से देखती है फिर उसकी मुद्रा कठोर हो जाती है।

मोहन की माँ : राएवाली, मेरे घर में आज के दिन असगुन न मना। कल अपने घर जाकर जी भर रोइयो। खबरदार ! जो यहाँ आँसू गिराए। (तभी दो चपल लड़कियाँ ओढ़नी संभालती दौड़ी-दौड़ी आती हैं – 'मौसी राएवाली भाभी कहाँ है उन्हें बुलाओ, गीत गाएँगे।')

मोहन की माँ : (बनावटी दुलार से) ..... उठ बहू, देख कितने प्यार से बुला रही है।

(कालिंदी उठकर लटपटाते कदमों से जाकर गानेवालियों में बैठ जाती है। बन्ने के स्वर हवा में तेज़ हो जाते हैं, लड़कियाँ उसे कोंचती हैं, 'गाओ न भाभी वह बन्ना तो तुम्हें आता है।')

कालिंदी : (भर्राए गले से) नहीं, तुम गाओ, मैं संग बैठी तो हूँ।

(कुछ औरतें उसकी ओर ढोलक सरका देती हैं। वह हाथ उठाती है, पर हाथ नहीं उठते। सास बनैली आँखों से घूरती है। आँखों ही आँखों में गुर्राहट। कालिंदी आँख मूँदकर ढोलक पर थाप लगाती है।)

(इस दृश्य में एक ओर उमंग भरा बन्ना का स्वर है दूसरी ओर ढोलक पर थाप पड़ने से नेपथ्य में मात्र एक शब्द भर्राई आवाज़ में, अम्माँ, अम्माँ, अम्माँ निकल रहा है।)

(अचानक राएवाली ढोलक छोड़कर नाचनेवालियों में जा मिलती है। ढोलक एक अन्य स्त्री संभाल लेती है। राएवाली नाचना शुरू करती है। नाचती जाती है। नाचती जाती है। अंत में चक्कर पर चक्कर काटती हुई नाचती है। साथ नाचनेवाली लड़कियाँ थककर बैठ

जाती हैं। अकेली राएवाली चक्करदार नाचती-नाचती चली जाती है। उसकी आँखों के आगे पूरा दृश्य उल्टा सीधा होकर तेज़ी से दौड़ता है। नाचते-नाचते राएवाली भरी महफिल में धड़ाम से गिर जाती है। बन्ना के बोल तेज़ी से उभरते हैं।)

अनुवर्ती कार्य

➤ **निम्नलिखित घटनाओं को क्रमबद्ध करें।**

* सास का पुलीस मुद्रा में बैठकर रक़म बटोर करना।
* कालिंदी की शादी की तैयारियाँ होना।
* मोहन के छोटे भाई का विवाह हो जाना।
* डाकिया द्वारा चिट्ठी लाना।
* नाच-गाकर कालिंदी का भरी महफिल में गिर पड़ना।
* बारात का आना।

➤ **एकांकी के पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ चुनकर तालिका भरें।**

(सीधी-सादी, सहनशील, स्वार्थी, वत्सल, क्रूर, भोली-भाली, लोभी, गँवारी)

कालिंदी	सास	माँ
भोली-भाली	स्वार्थी	गँवारी
....	....	....
....	....	....

► **सूचनाओं के आधार पर लेख लिखें।**

* स्त्री सुरक्षा के विभिन्न आयाम
* 'मार्च - 8 महिला दिवस' का आयोजन
* स्त्री के प्रति अत्याचारों पर रोक
* स्त्री की मान्यता बनाए रखने की शिक्षा

एकांकी का मंचन करें।

मंचन की गतिविधियाँ

नाटक-वाचन

यह वैयक्तिक/दलीय हो सकता है। वाचन के द्‌वारा पूरे नाट्‌यदल कथा से तादात्म्य स्थापित करता है।

मंचन पूर्व चर्चा

नाटक की पृष्ठभूमि, तकनीकी क्षेत्र, पात्र आदि में सही अवधारणा उत्पन्न करने में यह चर्चा काम आती है। इससे कथापात्र के अनुरूप अभिनेता के चयन में ठीक दिशा मिल जाती है।

मंच की अवधारणा

प्रकाश, शब्द-विन्यास, मेक-अप, मंच-निर्माण आदि मंच के अनिवार्य अंग हैं, हालांकि कक्षा-प्रस्तुति के समय स्कूल में उपलब्ध सामग्रियों से काम चला सकते हैं।

सृजनपरता

नाटक की पटकथा, मंचन के लिए एक रूपरेखा मात्र है। निदेशक तथा अभिनेता को अपनी-अपनी भावना तथा क्षमता के अनुरूप प्रसंगानुसार हेर-फेर तथा बलीकरण के साथ मंचन को सृजनपरक बनाना चाहिए।

विशेषण

➤ **'ईदगाह' कहानी में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को रेखांकित करें।**

जैसे : सुहावना प्रभात, अजीब हरियाली, अपनी कोठरी, दो आने पैसे, बड़ी मूँछें

➤ **रेखांकित शब्दों को सही खंभे में भरें।**

गुण/दोष को सूचित करनेवाले शब्द	संख्या को सूचित करनेवाले शब्द	परिमाण को सूचित करनेवाले शब्द	जो शब्द सर्वनाम जैसा हो
....	....	....	....
गुणवाचक	**संख्यावाचक**	**परिमाणवाचक**	**सार्वनामिक**

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाला।

सगुण भक्तिकाव्य

15 वीं शताब्दी के अंत से लेकर 17 वीं शताब्दी के अंत तक सगुण भक्तिशाखा तथा कृष्णभक्तिशाखा दोनों आती हैं। सगुणोपासना में प्रमुख रूप से श्रीराम और श्रीकृष्ण की उपासना को महत्व दिया गया।

सगुण में इन सिद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है–

* सगुण भक्ति के महत्व का प्रतिपादन और निर्गुणोपासना का बहिष्कार।
* अवतार की कल्पना।
* लीला-माधुरी का वर्णन।
* भक्ति ही भक्त और भगवान के मिलन में साधक।

कृष्णभक्तिधारा

* इस धारा के सूत्रधार वल्लभाचार्य हैं और पुष्टिमार्ग का प्रतिपादन करने के लिए अष्टछाप के कवियों ने उल्लेखनीय कार्य किया है।
* लोकरंजकता से दूर भगवान् के वात्सल्य और श्रृंगारिक रूप को ही लिया है।
* अपने मत-प्रतिपादन के लिए काव्य में गीत प्रणाली को अपनाया है। प्रबंधात्मकता इस धारा के कवियों में नहीं मिलती।
* इनके साहित्य में वात्सल्य और श्रृंगारिक भावना प्रधान है और रागात्मक वृत्ति पर विशेष बल दिया गया है।
* इस धारा के कवियों ने अनूठे पद गाए हैं, जिनका प्रचार भक्तों पर बहुत हुआ है।
* कृष्ण भक्तिशाखा का साहित्य मुख्यतः ब्रजभाषा में रचा गया है।

पुष्टिमार्ग संप्रदाय के महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य सूरदास इस संप्रदाय के प्रमुख महाकवि हैं। सूरसागर, सूरसारावली और साहित्यलहरी उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

* सूरसागर में कृष्ण के जन्म से लेकर मथुरा जाने तक का वर्णन है। वात्सल्य और शृंगार का वर्णन इसमें है। इसका स्रोत भागवत का दशम स्कंध है।
* भ्रमरगीत भागवत के दशम स्कंध के 47 वाँ अध्याय है जिसमें गोपियाँ कृष्ण के प्रिय सखा-दूत उद्धव के समक्ष कृष्ण-चर्चा सुनने में मग्न हैं। उद्धव गोपियों को ज्ञान का संदेश देते हैं। गोपियों की तीव्र विरहानुभूति भ्रमरगीत में है।

रामभक्तिकाव्य

राम भक्तिकाव्य में लोक धर्म और भक्ति भावना का मेल कराया है उसके साथ कर्म, ज्ञान और उपासना में सामंजस्य स्थापित किया है।

* इस धारा के विचार रामानंद के सिद्धांतों पर आश्रित हैं।
* रामभक्तिशाखा में दशरथ पुत्र राम को इष्टदेव मानकर सगुण भक्ति का प्रतिपादन किया है।
* भक्ति-क्षेत्र में सभी जातियों को तुलसीदास ने समान स्थान दिया है।
* भक्त को कवि ने दास के रूप में देखा है।
* शान और भक्ति दोनों का प्रतिपादन किया है।
* राम-नाम के जप में जीवन की मुक्ति।
* कार्य क्षेत्र में वर्णाश्रम धर्म को मान्य माना है।
* साहित्यिक दृष्टि से छंदों और रसों का प्रयोग है।
* भगवान को लोक-रंजक स्वरूप दिया है।
* रामभक्तिशाखा का विशेष साहित्य अवधी भाषा में रचा गया है।

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में राम महिमा का गान करनेवाला सर्वप्रथम कवि तुलसीदास हैं। जीवन के सभी पक्षों पर कवि ने पूरी सहृदयता के साथ प्रकाश डाला है।

* मर्यादा पुरुषोत्तम राम में शक्ति, शील और सौंदर्य का समन्वय किया।

अनुवर्ती कार्य

- **ICT की मदद से सगुण भक्तिकालीन कवियों के गीत सुनें।**
- **चर्चा चलाएँः**

विषयः 'सूर सूर तुलसी ससि'

* कृष्णभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि सूर
* सूर की कविताओं की विशेषताएँ
* रामभक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि तुलसी
* तुलसी की रचनाओं की विशेषताएँ

- **चर्चा के आधार पर आलेख तैयार करें।**

आलेख की परख, मेरी ओर से

- *उपक्रम है।*
- *उपविषयों को अनुच्छेदों में लिखा है।*
- *सभी बिंदुओं को विकसित करके अपना मत प्रकट किया है।*
- *अपने मत का समर्थन किया है।*
- *उपसंहार है।*

शब्दार्थ

सूरदास

मैया - माता
कबहि - कब
किती - कितनी
मोहि - मुझे
पिवत भई - पीते हो गया
अजहूँ - आज भी
बल की - बलराम की
बेनी - वेणी
ह्वै है - हो जाएगी
न्हवावत - स्नान करते समय
भुँइ - भूमि
काचो - कच्चा
पचि पचि - बार-बार
दोऊ - दोनों
हलधर - बलराम
जोटी - जोड़ी

तितली

चटकीला - चमकीला और तेज़
पंखुड़ी - फूल की पत्ती
दमक - शोभा
अप्सरि - अप्सरा
लिबास - वस्त्र
आतप - गर्मी
हुलास - उत्साह
चित्रणी - अनेक कलाओं में प्रवीण नारी।

यहाँ रोना मना है

झूला - हिंडोला
लहँगा ओढ़नी - कपड़े से बदन ढकना
टिंकुली - बिंदी
कसबाई - ग्रामीण
टेढ़ी-मेढ़ी - घुमाव-फिराववाला
मोहर - मुहर
बरतन माँजना - मिट्टी से बने पात्र का धोना
विदारख - विस्तार से
सूतक - जन्म के समय होने वाला पारिवारिक अशौच
तमाचा - थप्पड़
सेंकना - गरम करना
पत्तल परोना - खाना परोसना
बेफिज़ूल - अनावश्यक
कोरी - रहित
औलाद - संतान

इकाई चार

अलंकार की आभा

बिहारी के दोहे
एम. डॉट. कॉम
नए इलाके में
क्रिया
रीतिकाल

अधिगम उपलब्धियाँ

- बिहारी की काव्य-शैली से परिचय पाकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- आंचलिक कहानी (हिमांचल) की शैली से परिचय पाकर शब्दों का वर्गीकरण करता है।
- कहानी का आस्वादन करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- प्रौद्योगिकी संस्कार पर चर्चा करके भाषण के द्‌वारा अपना विचार प्रकट करता है।
- शहरीकरण के दोषों की अवधारणा पाता है।
- इक्कीसवीं सदी की कविताओं की भाषा और शैली पहचानकर कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- शहरीकरण के दोषों की अवधारणा पाता है।
- क्रिया की प्रयोगसंबंधी अवधारणा पाकर उनका वर्गीकरण करता है।
- रीतिकालीन साहित्य की विशेषताओं पर चर्चा करके टिप्पणी लिखता है।

बिहारीलाल

जन्म	:	सन् 1595 ई, ग्वालियर
मृत्यु	:	सन् 1650 ई
रचना	:	बिहारी सतसई
विशेषताएँ	:	* श्रृंगार, नीति और भक्ति भावों से संबंध दोहे। * दोहों में चमत्कारिक अलंकरण तथा शास्त्रीय तत्वों का गहन अनुशासन
देन	:	छोटे आकार के दोहा छंदों में भावों की बड़े सघन ढंग से प्रस्तुति-गागर में सागर भरना।

बिहारी राजाश्रित कवि थे। वे मूलतः श्रृंगारी कवि हैं। 'बिहारी सतसई' में रीति नीति भक्ति संबंधी **दोहे** हैं। सतसई का मतलब है सात सौ दोहों की रचना। यहाँ पहला दोहा नीतिपरक एवं दूसरे का विषय श्रृंगार।

दोहे

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय
इहि खाए बौराय जग, उहि पाए बौराय।

कागद पर लिखत न बनत, करतु संदेसु लजात
कहिहै सब तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात।

अनुवर्ती कार्य

➤ **सही मिलान करें ।**

सोना धतूरे से अधिक मादक है	-	उहि पाए बौराय
कागज़ पर लिखने में असमर्थ है	-	मेरे हिय की बात
पाने से पागल होता है	-	कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय
मेरे हृदय की बात है	-	कागद पर लिखत न बनत

➤ **'कनक' शब्द का प्रयोग दो बार किया है, क्यों ?**

➤ **'मेरे हिय की बात' से तात्पर्य क्या है ?**

➤ **आस्वादन टिप्पणी लिखें -**

कागद पर लिखत न बनत करतु संदेसु लजात
कहिहै सब तेरौ हियौ, मेरे हिय की बात

एस. आर. हरनोट

जन्म	:	1944 शिमला, हिमाचल प्रदेश
संप्रति	:	हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम में सूचना एवं प्रचार के महाप्रबंधक, अब सेवा निवृत्त
प्रमुख रचनाएँ	:	पंजा, आकाशबेल, पीठ पर पहाड़, मिट्‌टी के लोग (कहानी संग्रह), हिडिंब (उपन्यास)
उपलब्धियाँ	:	इंदुशर्मा कथा सम्मान, जे.पी जोशी सम्मान, हिमाचल राज्य आकादमी पुरस्कार, भारतेंदु हरिश्चंद्र अवार्ड, हिमाचल गौरव सम्मान।
विशेषताएँ	:	* हिंदी कथा साहित्य के लिए हिमाचल पहाड़ी ग्रामांचल का वरदान। * एक ओर हिमाचल संस्कृति के चितेरे। दूसरी ओर उत्तराधुनिक संस्कृति के आलोचक।
देन	:	कहानियों में पर्वतांचल के आवरण में संपूर्ण भारतीय जीवन के किसी न किसी विषय पर विचार।

पहाड़ी जीवन, पारिस्थितिकी, लोक संस्कार से लेकर वैश्विक समस्याएँ तक चित्रित। ***एम.डॉट. कॉम*** में पहाड़ी इलाकों में अपना झंडा फहरानेवाली उत्तराधुनिक मशीनी संस्कृति का पोल खोला गया है।

एम. डॉट. कॉम

माँ ने आज तड़के कोई काम नहीं किया । न चूल्हे में आग जलाई, न आटा-छलीरा घोलकर गाय के लिए खोरड़ ही बनाया। न बिल्ली की कटोरी में लस्सी उड़ेली, न बाहर आँगन के पेड़ पर लगाए पौ में चिड़ियों को पानी ही डाला। अपनी बैटरी ली और बाहर निकलते-निकलते बीड़ी सुलगा ली। दराट लेना माँ नहीं भूली थी। दरवाज़ा बंद किया और ताला लगाकर सीधी गोशाला के पास चली गई।

सुबह का समय माँ के लिए ज़्यादा व्यस्तताओं का हुआ करता था। जैसे ही उठती, आंगन में चिड़ियाँ चहचहाने लगतीं। बिल्ली दूध-लस्सी के लिए बावली हो जाती। गोशाला में पशु रंभाने लगते और माँ रसोई से ही उनसे बतियाती रहती। परंतु आज ऐसा कुछ नहीं था। खामोशी का सिलसिला दहलीज के भीतर से ही शुरू हो गया था।माँ इन दिनों नए भजनों के कैसेट कबीर अमृतवाणी अपने टेपरिकार्डर में खूब सुना करती, लेकिन आज वह भी चुप था। बिल्ली ने भी माँ को पहले जैसा तंग नहीं किया, चुपचाप एक कोने में दुबकी रही। आंगन के पेड़ों पर एक भी चिड़िया नहीं थी। सभी पौ के इर्द-गिर्द चुपचाप बैठी थीं।

परंतु आज ऐसा कुछ नहीं था। सबके चुप होने का कारण क्या होगा?

माँ ने गोशाला का दरवाज़ा खोला तो सिहर उठी, जैसे भीतर अंधेरे के सिवा कुछ भी न हो। बैटरी की रोशनी में इधर-उधर झाँका। पशु उदास-खामोश खड़े थे। उनकी आँखें भीगी हुई थीं। माँ के कोने में मरी पड़ी ताजा सुई भैंस पर रोशनी डाली तो कलेजा जैसे

मुँह को आ गया। आँखें छलछला आईं।अपने चादरू से आँखें पोंछती वह बाहर आ गई और दरवाज़ा ओट दिया।

आँगन से पूरब की तरफ़ देखा। धूरें हल्की रोशनी से भरने लगी थीं। सर्दियों की सुबह वैसे भी देर से होती है। माँ ने अंदाज़ा लगाया सात बज रहे होंगे। बैटरी की ज़रूरत नहीं समझी। उसे दरवाज़े के ऊपर खाली जगह में रख दिया।

गाँव में भैंस के अचानक मरने की खबर नहीं पहुँची थी, वरना इस वक्त तक गाँव की औरतें अफसोस करने पहुँच जातीं। माँ ने किसीको भी नहीं बताया। वह चाहती तो गाँव के किसी छोकरे को भी कहकर चमार को हांक लगवा लेती, लेकिन इस बार उसने खुद जाना बेहतर समझा। जानती थी कि यदि किसीको भेज भी दिया तो वह सामने कुछ नहीं बोलेगा, सिर्फ मन में सौ गालियाँ देता रहेगा। अब पहले जैसा समय कहाँ रहा गया है? गाँव में शरम-लिहाज तो नाम को बची है। जो कुछ है भी, वह दिखावे भर की। नई नस्ल के छोकरे-छल्ले तो मुँह पर ही बोल देते हैं। बड़े-बूढ़ों की लिहाज तक नहीं रखते। वैसे अब बुजुर्ग बचे ही कितने हैं? माँ अपने घर के भीतर ही झांकने लगती है ... वह खुद कितने बरसों से अकेली घर-बार चला रही है, इतना बड़ा बारदाना। खेती बिन बाही अच्छी नहीं लगती। फिर सरीकों का गाँव है, तरह-तरह की बातें बनाएँगे। भले ही उसने ब्वारी-मज़दूरी से ही चला रखी है पर मजाल कि कोई उंगली उठा सके। पाँच-सात पशु भी ओबरे में बंधे

माँ क्यों खुद चमार के पास चलने लगती है?

ही है। कोई बोल नहीं सकता कि फलाणी विधुआ के अब घर-बार खत्म होने लगा है।

दो बेटे हैं। खूब पढ़ाए-लिखाए। अब दोनों ने गाँव छोड़ दिया। दूर-पार नौकरी करते हैं। वहीं शादियाँ कर लीं। वहीं बाल-बच्चे भी हो गए। बहुएँ तो गाँव-घर की तरफ देखती तक नहीं। आकर करेंगी भी क्या, मिट्टी-गोबर की बास लगती है। बेटे साल में एक-आध बार खबर-सार ले लेते हैं । वैसे माँ के लिए उन्होंने सारी सुविधाएँ जुटा रखी हैं। टेलीफोन है। रंगीन टेलीविज़न है। गैस है। दूध बिलाने की मशीन है। टेपरिकार्डर है ... यह सोचती-सोचती माँ गाँव के बस अड्डे तक पहुँच गई थी। शुक्र है कि कोई मिला नहीं, नहीं तो सभी पूछते रहते कि आज तड़के-तड़के फलाणी कहाँ चली है।

माँ क्यों ऐसा सोचती है- शुक्र है कि कोई मिला नहीं।

अड्डे पर बस घरघरा रही थी। माँ ने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया, पर वहाँ का नज़ारा देखकर दंग रह गई। सब कुछ कितना जल्दी बदल गया था। माँ को याद है कि जहाँ आज बस अड्डा बना है, वहाँ कभी पानी की एक बड़ी कुफ़र (पोखर) हुआ करती थी। माँ ही क्यों, गाँव के दूसरे लोग भी अपने पशुओं को चराकर यहीं पानी पिलाते। स्कूल के बच्चे उसके चारों तरफ़ बैठकर तख्तियाँ धोया करते। जगह-जगह गाजणी के टुकड़े पड़े होते। दवात-कलम रखे होते। किसीकी कापी-किताब भूली रहती। नीली स्याही की कलमें गाद में कई जगह ठूंसी रहतीं। जितने स्कूल भी न देखा हो उसे भी पता चल जाता कि गाँव का स्कूल यहीं कहीं पास होगा। सामने पत्थरों की एक दीवार थी, जो

पश्चिम का पानी रोक देती थी। उसपर बणे के छोटे-छोटे पेड़ लगे थे। उनके बीच दीवाल में खाली जगह थी, जिसमें पाप देवताओं की पत्थर की प्रतिमाएँ रखी होतीं। माँ ने कितनी बार यहाँ आकर पूजा की होगी। पितरों की मूर्तियाँ बनाकर रखी होंगी। पर आज सब कुछ नदारद है, जैसे वक्त ने उसे लील लिया हो।

अब वहाँ एक बड़ा-सा मैदान है, जिसपर गाड़ियों के टायरों की अनगिनत रेखाएँ हैं। यहाँ न अब पानी है, न बच्चों की चहल-पहल। न कोई पशु ही भूला-भटका इस तरफ आता है। रेत, बजरी, सरिया और सीमेंट के कितने ही ट्रक यहाँ उतरे हैं, जिन्होंने इसे गर्द का अंबार बना दिया है।

माँ पहले बस से आगे निकल गई थी। अचानक ठिठक गई। परसा चमार के घर का रास्ता सड़क से भी तो जाता है । सोचा कि लोग क्या कहेंगे ... यही न कि फलाणी मुँह के पास बस होते हुए भी पैदल जा रही है.... या उसके बेटे उसको पैसे ही न देते होंगे? फिर समय भी तो बच जाएगा। जब तक मरी भैंस ओबरे से बाहर नहीं निकालेगी, न माँ खुद रोटी खाएगी, न पशुओं को ही घास-चारा डालेगी। चमार के हाथ से उसकी गति जितनी जल्दी हो उतना ही पुन्न। यह ख्याल आते वह मुड़ गई। फिर रुकी, कुरते की जेब में हाथ डाला, तीन-चार रुपए की चेंज थी। पीछे आकर बस में बैठ गई।

कुछ मिनटों बाद ही बस चल पड़ी थी।

रास्ते भर माँ क्या-क्या सोच रही थी?

पलक झपकते ही वह जगह आ गई जहाँ माँ को उतरना था। खेतों से नीचे उतरी तो घर दिख गया। सोचा कि यहीं से हाँक दे दे... पर क्या पता कोई हाँक सुने भी कि नहीं – यह ख्याल करते हुए वह नीचे उतर गई। कई बरसों पहले माँ का एक बैल मरा था। शायद तब खुद ही आई थी। माँ को अब यह भी याद नहीं कि परसा चमार उनके घर कब छमाही लेने आया था। पति जिंदा थे तो वह महीने में एक आध चक्कर लगा लिया करता, वहीं रह जाता। रात भर गप्पें चलती रहतीं। खूब बातें होतीं। वह माँ और पिता के जूते भी गाँठ कर ले जाता। पर अब तो पता नहीं कितने बरस हो गए, माँ ने कभी जूते नहीं गंठवाए। ज़रूरत भी नहीं पड़ी। अब तो प्लास्टिक का जमाना है। बीस-तीस रुपए में जूते मिल जाते हैं। आसान काम। इस मशीनी जमाने ने तो आदमी को आदमी से ही दूर कर दिया है। सोचती-विचारती माँ परसे के घर के आँगन में पहुँच गई थी। घर देखा तो हैरान रह गई। पहले तो कच्चा मकान था – मटकंधों का बना हुआ। छत पर बेढंगे से छवाए खपरे हुआ करते थे। खेतों-खलिहानों तक चमड़े की बास पसरी होती। आज तो यहाँ वैसा कुछ भी नहीं था। लगा कि वह कहीं गलत मकान में न आ गई हो? अभी सोच ही रही थी कि एक छोटी-सी लड़की बाहर निकली। माँ को देखकर ठिठक गई । माँ ने पूछ लिया, मुन्नी! परसे रा घर यई है?

उसने कोई जवाब नहीं दिया। शरमाकर उल्टे पाँव भीतर चली गई।

'इस मशीनी जमाने ने तो आदमी को आदमी से ही दूर कर दिया है।' क्या माँ के इस विचार से आप सहमत हैं? क्यों?

कुछ देर बाद एक बुजुर्ग ने दहलीज़ पर से गर्दन निकाली और बाहर झाँकने लगा। पट्टू की बुक्कल के बीच से उसका कूब निकल आया था चेहरे पर घनी झुर्रियाँ ... जैसे किसीने बिन बाच के सूखे खेत में हल की फाटें दे रखी हों। माँ को देखते ही पहचान गया, 'अरे भाभी तू?'

कितनी आत्मीयता थी इस संबोधन में। माँ का धीरज बढ़ गया था। मन भी पसीज गया।

खड़े-खड़े ही राजी-खुशी हुई। परसा कहने लगा, 'आ जा ... अंदर को चल, आज तो बड़ी ठंड है। म्हारे तो धूप बारह बजे से पैले नी आती।'

यह कहते-कहते परसा अभी पीछे मुड़ा ही था कि माँ ने रोक दिया, बैठणा नी है परसा। मेरी ताजी सुई हुई भैंस मर गई। पहला ही सू था।

गला भर आया था माँ का।आँखों से पानी टपकने लगा।

क्षण भर खड़ा रहा परसा। फिर भीतर चला गया। माँ को तसल्ली हुई कि वह भीतर जाएगा, छुरी निकाल किलटे में डालकर बाहर आएगा और चल पड़ेगा। लेकिन जब वह दोबारा बाहर आया तो उसके एक हाथ में पटड़ा और दूसरे में आग भरी अंगीठी थी। माँ को पटड़ा पकड़ाया और अंगीठी सामने रख दी। खुद भी उसीके पास बैठ गया। जेब से बीड़ी निकाली। एक माँ को दी, दूसरी अंगीठी की आग में ठूँस कर सुलगा ली। माँ ने भी ऐसा ही किया। दोनों पीने लग गए। कुछ देर गहरे कश लेते रहे। माँ ने ही चुप्पी तोड़ी, तेरा बी कदी गांव की तरफ चक्कर ही नी लगा?

परसा के भीतर चले जाने पर माँ ने तसल्ली का अनुभव किया, क्यों?

अब कहाँ चला जाता है भाभी। चढ़ाई में चलते दम फूलणे लगता है। फिर टाँगें बी जवाब देणे लगी हैं अब।

पर साल-फसल पर बी तो नी आया तू। म्हारे पास ही कितणे सालों की छमाही हो गई होगी।

परसे ने एक गहरी साँस ली। खाँसता भी गया। चेहरे पर दर्द उतर आया था।

'जाणे दे भाभी पुराणी गलां। तैने रखी होगी इतणी ल्याहज, पर दूसरे तो सब नाक चिढ़ाते हैं। तुम्हारे जैसे थोड़े ही हैं सब। बामणों-कनैतों का गाँव है...बड़ी साल पइले गया था। उस टेम जब भाई मरा था। लगे हाथ छमाही भी माँगणे चला गया। बामणों ने तो मना ही कर दिया। कहणे लगे कि परसा, अब जूते कौन बनाता-गाँठाता है। बणे-बणाये मिल जाते हैं दूकानों में। तू तो जाणती है भाभी, काम के साथ ही आदमी की गरज होती है। फिर मुए को नी पूछता कोई।'

माँ की बेचैनी क्यों बढ़ती चली गई?

यह कहते हुए उसने अंगीठी की आग को उँगलियों से ठीक किया। माँ की बेचैनी बढ़ती चली गई। वह इस जल्दी में थी कि परसा बात मुकाए और चल दे। पर वह बोलता गया, पैहले पुराणा वक्त था। दूकानें नहीं थीं। सड़क नी थी। तब परसा बड़ा आदमी था। शादी-ब्याह म्हारे कंधों पर। शादी की पटियारी और भात के लिए पतली म्हारे जिम्मे। बूट तो परसे के ही होणे चाहिए। अब तो न कहार, न चमार। टैम-टैम की बातें हैं भाभी।

चेहरे पर आक्रोश और खीज भर गई थीं। माँ चुपचाप देखती रही। पूछना चाहती थी कि इन बामणों-कनैतों के पशु कौन फेंकता है, पर पूछ ही न पाई। वह परसे से एक बार फिर चलने का अनुरोध करने को हुई कि

परसा फिर कहने लगा, 'माफ करिए भाभी, तू तो म्हारी आपणी घर की है। कोई बामण-कनैत आया होता तो आंगण में खड़े बी नी होणे देता... अब म्हारे घर में न कोई बूट-जोड़ा गाँठता है, न पशु फेंकता है। बच्चे नी मानते। बड़ा तो शिमला में अफसर बण गया है। छोटा बस टेशन पर दूक्वान करता है। तेरे को कैसे नी पता भाभी। मैं तो अब कहीं न आता न जाता।'

माँ सुनकर हैरान-परेशान हो गई। याद आया कि परसे का ठीया उधर कहीं होता था। वह आँगन के किनारे देखने लगी तो परसे ने बताया, 'वो देख उधर, मेरा ठीया होता था। लड़कों को बथेरा समझाया कि मुए इसको तो रैहणे दो। पर कहाँ माने। अपणे काम से इतणी नफ़रत, जैसे ये बामण म्हार से करते हैं। तोड़ दिया उसको। सारा सामान बी पता नहीं कहाँ फेंक दिया। वहाँ अब लैंटरींन बणा दी।'

कहते-कहते अंगीठी दोनों हाथों से ऊपर उठाकर हिला दी। अंगारे चमकने लगे। फिर उठकर भीतर चल दिया। माँ ने जब उसकी आँखों में देखा था तो वे गीली थीं। शायद अपनी विरासत के यूँ खो जाने से मन भर आया होगा। भीतर जाते उसने पट्‌टू के छोर से आँखें पोछीं।

परसा की आँखें क्यों गीली थीं?

दरवाज़े पर पाँव रखते ही कुछ याद आया, वहीं से बोला, 'तू मेरे लड़के से कहियो, वो कुछ कर देगा।'

माँ की हालत देखनेवाली थी। उसके न बैठे बनता था न वहाँ से आते। कोई माँ का चेहता देखता तो पसीज जाता। नज़र फिर ठीये की तरफ गई। याद करने लगी कि जब वह यहाँ आती तो भीतर बैठ जाती। गाँव

के और भी कितने लोग परसे के आसपास बैठे रहते। उनमें बामण, कनैत, कोली, चमार—सब होते। न किसी को छू और न छोत। उस समय तो परसा चमार नहीं, एक बड़ा कारीगर होता। मास्टर, उस्ताद होता।

वह छोटी-सी लड़की फिर बाहर आई और भागती हुई शौचालय में चली गई। तपाक् से दरवाज़ा बंद किया। शौच की बास का भभका, हवा के झोंके के साथ माँ की नाक में घुस गया। चादरू से मुँह-नाक ढंक लिया। उठी और चल दी। सोचते हुए कि क्या करे, कहाँ जाए। मन में एक आस बची थी कि परसे का लड़का कुछ करेगा।

सूरज काफी चढ़ आया था। घर अकेला था। पशु भूखे-प्यासे होंगे। माँ लंबे-लंबे कदम देने लगी। बस अड्डे पर पहुँची, तब तक दूकानें खुल गयी थीं। माँ देखने लगी ... चाय की दूकान, आटा-चावल की दूकान, कपड़े की दूकान, सिगरेट-बीड़ी की दूकान और नाई की दूकान। एक और दूकान पर नज़र गई, जिसमें एक-दो छोटी मशीनें रखी थीं। वहाँ बैठे लड़के को अम्मा नहीं जानती थी। बाकी सभी तो उसी गाँव-बेड़े के थे।

जिस दूकान में मशीनें रखी थीं वहाँ बैठे लड़के को अम्मा नहीं जानती थीं–इसका क्या कारण होगा?

उधर देख ही रही थी कि कानों में आवाज़ पड़ी, 'ताई कहाँ थी तड़के-तड़के ?'

मुड़कर देखा तो बुधराम नाई था। झाड़ू लगाते उसने फिर कहा, 'ताई! आ जा न बैठ, चाय का घूँट लगा ले।'

माँ बैठना नहीं चाहती थी, पर सोचा कि बुधराम ही परसे के लड़के से बोलकर भैंस फिंकवा दे। वह

अंदर जा कर बैठ गई और जल्दी-जल्दी सारी बात बता दी। माँ के चेहरे से काफी परेशानी झलक रही थी। बुधराम ने सारी बात सुनी तो हल्का-सा मुस्करा दिया, जैसे वह कोई समस्या ही न हो। उसने अपने बाएँ हाथ का इशारा किया और माँ को बताया कि बगल में ही उसकी दूकान है। झाडू बेंच के नीचे फेंका और बाहर निकल पड़ा। माँ उसके पीछे-पीछे चल दी। दोनों दूकान पर पहुँचे। परसे के लड़के का नाम महेंद्र था। माँ को कुछ तसल्ली हुई। बताने का प्रयास भी किया था कि वह उसीके घर से आ रही है, पर महेंद्र ने ध्यान ही न दिया। बुधराम ने ही माँ को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उसीने बताया कि ताई की भैंस मर गई है। महेंद्र ने माँ का नाम पूछा और फिर कंप्यूटर में कुछ ढूँढ़ने लग गया। माँ कुर्सी से उचक कर देखने लगी। स्क्रीन पर अक्षर भाग रहे थे। उसने अपनी घूमनेवाली कुर्सी जब पीछे घुमाई तो माँ बैठ गई। वह बताने लगा, माताजी ! आपका नाम हमारे पास नहीं है। न ही पशुओं की लिस्ट। पंडितों-ठाकुरों ने तो पहले ही अपना रजिस्ट्रेशन करवा दिया है। आप भी करवा लो।

माँ की समझ में कुछ नहीं आया। आश्चर्य से बुधराम को देखने लगी। उसीने माँ को समझाया। ताई ! देख उधर, गाँव के जितने भी आदमी हैं, उनके नाम पशुओं के साथ लिखे हैं। वो देख मेरा बी नाम है (उंगली से बताने लगा)। जब कोई पशु मरता है या पैदा होता है, इसमें दर्ज हो जाता है। फीस लगती है उसकी। अगर तेरा नाम होता, मिनट में ई-मेल करके महेंद्र शहर से दो-चार आदमियों को बुला देता और शाम तक तेरी भैंस ओबरे से बाहर।

माँ आश्चर्य से बुधराम को देखने लगीं। क्यों?

माँ की चिंता बढ़ गई। हैरान-परेशान होकर पूछने लगी, पर बुधराम, वो भैंस को कैसे फेंकेंगे?

ताई! वो लोग शहर से अपनी गाड़ी में आएँगे। तेरी भैंस को ओबरे से बाहर निकालेंगे। ले जाएँगे। उसे काटेंगे, पर फेंकेंगे नहीं। जैसा म्हारे चमार करते थे। माँस, हड्डियाँ, खाल सब अपने साथ लेते जाएँगे। न खेतों में गंदगी न गिद्धों और कुत्तों का हुड़दंग।

शहर से आनेवाले लोग मरे भैंस को ले जाकर क्या करते होंगे?

माँ का सिर चकरा गया। कछ पल्ले नहीं पड़ा। उठी और बाहर निकलते-निकलते एक नज़र बुधराम पर डाली, दूसरे महेंद्र और उसकी मशीन पर। अब क्या करे, कुछ समझ नहीं आया।

सड़क पर आकर माँ ने उस दूकान की तरफ़ फिर देखा। बड़े-बड़े अक्षरों में दूकान का नाम लिखा था—एम.डॉट.कॉम।

अनुवर्ती कार्य

- **कहानी से पच्चीस आँचलिक शब्द चुनकर उनके खड़ीबोली शब्द लिखें।**
- **भैंस के मर जाने के बाद जो परेशानियाँ झेलनी पडीं, उनका वर्णन करते हुए माँ बेटे के नाम एक पत्र भेजती है। वह पत्र लिखें।**
  - भैंस की मृत्यु।
  - माँ का परसा के पास जाना।
  - गाँव का परिवर्तन।

पत्र की परख, मेरी ओर से

- *स्वाभाविक शुरुआत है (परिवारवालों की तलाश/...)*
- *भैंस की मृत्यु और उससे उत्पन्न परेशानी को सूचित किया है।*
- *गाँव में हो रहे परिवर्तन का ज़िक्र किया है।*
- *बेटे के जवाबी पत्र की माँग भी है।*
- *पत्र की रूपरेखा है। (संबोधन/स्वनिर्देश/तारीख/स्थान/...)*

➤ **'प्रौद्योगिकी संस्कार एवं मानवीय मूल्य' विषय पर भाषण प्रस्तुत करें।**

* समाज क्या है?
* प्रौद्योगिकी-विकास से समाज का क्या हाल हुआ?
* विकास ने किन-किन मूल्यों को नष्ट किया?
* बिना मूल्यों का विकास कहाँ तक स्वीकार्य है?

भाषण की परख, मेरी ओर से

- *भूमिका है।*
- *बिंदुओं को विकसित किया है।*
- *अपना मत है।*
- *मत का समर्थन किया है।*
- *भाषण-शैली है।*
- *उपसंहार है।*

अरुण कमल

जन्म	:	15 *फरवरी* 1954 *नासरीगंज, रोहतास*
प्रमुख रचनाएँ	:	*कविता-संग्रह- अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके में, पुतली में संसार*
उपलब्धियाँ	:	*भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, सोवियत भूमि पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार*
विशेषताएँ	:	* *तीव्र अनुभूतियों और अनुभूत सच्चाइयों के कवि।* * *कविताओं का अंतर्पाठ व्यापक एवं सार्थक।* * *कविताओं में सार्वभौमिकता।*
देन	:	*नए बिंब और बोलचाल की भाषा का समावेश।* *बदली दुनिया के पग पग पर परिवर्तित परिवेश के अनेक आयामों की प्रस्तुति।*
संप्रति	:	*पाट्ना विश्वविद्यालय के अध्यापक*
ई-मेल	:	arunkamal@gmail.com

अरुण कमल की कविता में वर्तमान शोषण व्यवस्था के खिलाफ एक नई मानवीय व्यवस्था का निर्माण करने की आकुलता दिखाई देती है। विकास के नाम पर आई भूमंडलीकृत उत्तराधुनिक विसंगतियों का चित्रण ***'नए इलाके में'*** *कविता में कवि ने किया है।*

नए इलाके में

इन नए बसते इलाकों में
जहाँ रोज़ बन रहे हैं नए-नए मकान
मैं अक्सर रास्ता भूल जाता हूँ
धोखा दे जाते हैं पुराने निशान
खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़
खोजता हूँ ढहा हुआ घर
और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ
मुड़ना था मुझे
फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक
घर था इकमंजिला
और मैं हर बार एक घर पीछे
चल देता हूँ
या दो घर आगे ठकमकात
यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है
रोज़ कुछ घट रहा है
यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं
एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
जैसे बैशाख का गया भादों को लौटा हूँ
अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
और पूछो-
क्या यही है वो घर?
समय बहुत कम है तुम्हारे पास
आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देख।

अनुवर्ती कार्य

➤ **निम्नलिखित विशेष्यों के विशेषण कविता से चुनें।**

विशेषण	***विशेष्य***
नए	इलाके
....	मकान
....	निशान
....	पेड़
....	घर
....	टुकड़ा
....	फ़ाटक

➤ **विपरीतार्थक शब्द-जोड़ी कविता से ढूँढ़कर लिखें?**

जैसे :- नए - पुराने

➤ *'धोखा दे जाते हैं पुराने निशान'* – **पुराने निशानों को सूचीबद्ध करें।**

जैसे	:	ताकता पीपल का पेड़
	:	....
	:	....
	:	....

➤ **समान भाववाली पंक्तियाँ कविता से चुन लें।**

* रोज़ अनेक नए-नए मकान बन रहे हैं। इसलिए रास्ता भूल जाता है।
* रास्ते पर ज़मीन का खाली टुकड़ा है, वहाँ से मुझे बाईं ओर मुड़ना था।
* दुनिया इतनी जल्दी बदल जाती है कि वह एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है।

➤ **कविता पर आस्वादन-टिप्पणी लिखें।**

आस्वादन-टिप्पणी की परख, मेरी ओर से

- *कवि का परिचय है।*
- *कविता की काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है।*
- *कविता का सार है।*
- *अपने दृष्टिकोण में कविता का विश्लेषण किया है।*
  (काव्यधारा और रचनाकाल के अनुरूप भाषा, प्रतीक आदि।)

➤ **मान लें, सालों बाद आप अपनी प्राथमिक पाठशाला के सामने से गुज़रते हैं, जिसकी स्मृतियाँ कहीं खोई पड़ी थीं। अपने बीते स्कूली जीवन की किसी अविस्मरणीय स्मृति का संस्मरण एक अनुच्छेद में लिखें।**

संस्मरण की परख, मेरी ओर से

- *तथ्यों की प्रस्तुति है।*
- *स्मृति को क्रमबद्ध किया है।*
- *आत्मनिष्ठ भाषा है।*

क्रिया

➤ **एम.डॉट.कॉम कहानी से क्रिया शब्द (कार्य के होने/करने की सूचना देनेवाले) चुनकर तालिका भरें।**

कार्य हो/कर चुका है	**कार्य हो/कर रहा है**	**कार्य हो/किया जाएगा**
मैंने आज तड़के कोई काम नहीं किया।	दूर-पार नौकरी करते हैं।	वह भीतर जाएगा। ....
भूतकालीन क्रिया	**वर्तमानकालीन क्रिया**	**भविष्यतकालीन क्रिया**

रीतिकाल

हिंदी साहित्य के इतिहासज्ञों ने रीतिकाल का प्रारंभ संवत् 1700 से माना है। रीतिकालीन कवि काव्य में अलंकारों को प्रमुख स्थान देते थे। रीतियुग के प्रवर्तक के रूप में केशव और चिंतामणि त्रिपाठी को मानते हैं। इस काल में कवियों का झुकाव अलंकारों की अपेक्षा नायिका-भेद की ओर अधिक रहा है। इस काल में नख-शिख वर्णन पर बहुत ग्रंथ लिखे गए हैं।

* इस काल का प्रारंभ चिंतामणि त्रिपाठी से होता है।
* इस काल में श्रृंगार प्रधान मुक्तक कविताएँ लिखी गई हैं। प्रबंध काव्य भी लिखे गए, परंतु विशेष उल्लेखनीय नहीं है।
* इस काल में भी वीरगाथाकाल की भाँति कवि आश्रयदाताओं के यहाँ रहते थे।
* इसलिए उनमें भक्तिकालीन कवियों की स्वाभाविकता और स्वच्छता का सर्वथा अभाव हो गया था।
* श्रृंगार रस की प्रधानता है।
* अलंकरण की प्रधानता है।
* मुक्तक शैली की प्रधानता है।
* प्रकृति के उद्दीपन रूप की प्रधानता है।
* वीररस की अभिव्यक्ति है।
* रीति काव्यधारा में उन्मुक्त प्रेम भावना है।
* प्रेम के वियोग पक्ष का प्राधान्य है।
* रीति काव्य में एकांतवादी प्रेम का चित्रण हुआ है।

अनुवर्ती कार्य

- **ICT की मदद से रीतिकालीन कवि बिहारीलाल के दोहे (ओडियो) सुनें।**

- **रीतिकाल के प्रमुख पाँच कवियों की सूची तैयार करें और उनकी किसी एक-एक रचना का नाम लिखें।**

- **रीतिकालीन कवि बिहारीलाल ने राधा और कृष्ण के रूप-वर्णन के समय उसकी तुलना प्रकृति के साथ की है। बिहारी के दोहों में से ऐसी पाँच तुलना के प्रसंग गद्य रूप में लिखें।**

  जैसे : कृष्ण का श्याम शरीर-नीलमणि शिला

  (दोहा: सोहत ओढ़े................पड़्यो प्रभात)

शब्दार्थ

बिहारी

कनक	-	सोना, धतूरा
ते	-	से
सौ गुनी	-	शतगुनी
मादकता	-	नशा
अधिकाय	-	अधिक होता है
इहि	-	इसको
खाए	-	खाने पर
बौराए	-	पागल हो जाता है
जग	-	दुनिया
उहि	-	उसको
पाए	-	पाने पर

एम. डॉट. कॉम

पौ	-	पेड़ पर लगाए मिट्टी के छोटे बर्तन जिसमें पक्षियों के लिए पानी रखा जाता है।
बावली	-	पागल
इर्द-गिर्द	-	आसपास
छलछला	-	आँखों में आँसू भर आना
अफ़सोस	-	दुःख
तख्तियाँ	-	काठ की छोटी पटिया
अंबार	-	ढ़ेर
सतल्ली	-	ढाढ़स
मुए	-	मरे हुए
दुबकना	-	छिप जाना
अंदाज़ा	-	अनुमान
बतियाना	-	बात करना
हाँका	-	पुकार
लिहान	-	ध्यान
औबरा	-	छोटा कमरा

नए इलाके में

ताकना	-	देखना
ढहना	-	मकान आदि का गिरना
घटना	-	कम होना
आकास	-	आकाश

परिशिष्ट

रचनाकाल, रचनाकार और रचना की अधिक जानकारी रचना को अधिक निकट से समझने में सहायक होती है। इस दृष्टि से परिशिष्ट दिया गया है। परिशिष्ट एक दिशा-दर्शक मात्र है। अधिकतर जानकारी के लिए अध्यापिका, पुस्तकालय तथा अंतर्जाल (इंटरनेट) की मदद आप ले सकते हैं। इससे पाठभाग को अच्छीतरह समझने में तथा अनुवर्ती कार्यों को सही मायने में निपटाने में मदद मिलेगी।

कीर्ति चौधरी

कीर्ति चौधरी का नाम कीर्तिबाला सिनहा है परंतु लिखती हैं कीर्ति चौधरी के नाम से। कीर्ति चौधरी का कवि-व्यक्तित्व अपने सब समकालीन कवियों से अलग है। अभिव्यक्ति और शैली की सादगी उनकी निजी विशेषता है। कवि होने के साथ-साथ वे घरेलू जीवन को भी समान महत्व देती है। वस्तुतः जीवन के प्रति उनका यही समन्वयात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण उनकी कविता को एक सबल यथार्थ प्रदान करता है। कविताएँ और खुले हुए आसमान के नीचे उनके काव्य-संकलन हैं और झुमझुमी कहानी-संग्रह। अज्ञेय ने 'तीसरा सप्तक' में इन्हें भी स्थान दिया था।

एकलव्य कविता में कीर्ति चौधरी द्रोणाचार्य को कटघरे में खड़ा कर देती हैं। एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मूर्ति मिट्टी से बनाई थी। उस मूर्ति से प्रेरणा लेकर धनुष चलाना सीखा। लेकिन इस समर्पण का फल क्या निकला? उसे अंगूठा कटवाना पड़ा। अफ़सोस है कि वह मिट्टी की मूरत को द्रोणाचार्य क्यों समझ बैठा। लगता है वह मूरत गुरु की नहीं केवल मिट्टी की थी। कविता छोटी है, पर भाव तीखे हैं।

प्रेमचंद

हिंदी के अमर कथाकार प्रेमचंद की जीवन-राह फूलों से नहीं, बल्कि काँटों से भरी थी। अभाव-ग्रस्त जीवन और पारिवारिक उलझनों से लड़ते हुए प्रेमचंद ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और साहित्य-सर्जना की। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी को अपना वास्तविक स्वरूप प्रदान किया और मानव-जीवन को कथा का विषय बना दिया। राजा-राणी और ऐंद्रजालिक कहानियों से आहत हिंदी कथासाहित्य में प्रेमचंद ने किसान, मज़दूर जैसे साधारण पीड़ित

जन की वाणी बुलंद की। भारत की संपूर्ण समस्याओं को उन्होंने अपनी सर्जना में समावेश किया। इन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ रची हैं। कफ़न, पूस की रात, ठाकुर का कुआँ, शतरंज के खिलाड़ी आदि उनकी विश्वस्तरीय कहानियाँ हैं। सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, निर्मला, कर्मभूमि और गोदान उनके लोकप्रिय उपन्यास हैं। ग्रामीणजीवन की जितनी सहजता और असलियत उनकी रचनाओं में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भारतीय नारी की व्यथा-कथा हिंदी में सर्वप्रथम प्रेमचंद की लेखनी से निकली है। उनकी रचनाओं की सत्ता कालातीत है, उनकी प्रासंगिकता अजेय है। 'ईदगाह' प्रेमचंद की लोकप्रिय कहानी है। इसमें बच्चों को कथापात्र के रूप में लाकर प्रेमचंद ने बालमनोविज्ञान पर प्रकाश डाला है।

पांडेय बेचनशर्मा उग्र

पांडेय बेचनशर्मा उग्र का जन्म सन् 1900 को उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर ज़िले के चुनार नामक गाँव में हुआ। बाल्यावस्था में पिता की मृत्यु होने के कारण इनकी पढ़ाई अधिक नहीं हो पाई। छोटी उम्र में ही रामलीला मंडलियों के साथ देश के भिन्न भिन्न भागों की यात्रा करते हुए उनके जीवन की वास्तविक पाठशाला अनुभव से निकली। यात्रा में जीवन को निकट से देखा-परखा और वह भविष्य में उनकी रचनाओं की प्रेरणा बनी। स्वभाव से वे मस्तमौजी थे।

अपनी रचनाओं में उग्र ने समाज की बुराइयों की नंगी सच्चाई को बड़े साहस के साथ चित्रित किया। 1967 में उनकी मृत्यु दिल्ली में हुई। 'बुढ़ापा' उग्र का एक व्यंग्य निबंध है। इसमें ज़िंदगी भर की दौड़-धूप के बाद उपेक्षित बुढ़ापे को जीने के लिए विवश मनुष्य की बेबसी को बेहद संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। उनका तीखा व्यंग्य समाज की छाती चुभनेवाला है।

कबीरदास

कबीरदास के जीवन के संबंध में प्राप्त सामग्रियाँ अर्ध-प्रामाणिक हैं। वे हिंदी साहित्य के क्रांतिकारी भक्त कवि हैं। वे काशी में रहते थे और जुलाहे का काम करते थे। यह जुलाहा जाति नाथपंथी योगियों से प्रभावित थी। इसलिए कबीर में इस पंथ की मान्यताओं और संस्कारों का प्रभाव दिखाई देता है।

कबीर अनपढ़ थे। वैष्णव संप्रदाय के आचार्य रामानंद का शिष्यत्व ग्रहण करके भी कबीर जाति-पाँति के भेदभाव के निकट नहीं गए, बल्कि उसे दूर करने के प्रयत्न में लगे रहे। उन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी धर्मों की अच्छाइयों को ग्रहण किया और बुराइयों का खंडन किया।

कबीर की कविता साखी, सबद और रमैनी के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी कविता में गुरु-सेवा, राम-नाम, सत्संग, नीति, भक्ति, समाज-सुधार आदि कई विषयों के भाव समन्वित हैं। कबीर की भाषा को विद्वानों ने सधुक्कड़ी कहा है। कबीर घूम-घूमकर साधु-संतों का सत्संग करते थे। इस कारण उनकी भाषा में विभिन्न प्रदेशों की बोलियों के शब्द घुल-मिल गए। कबीर ने जनभाषा का प्रयोग किया है।

भीष्म साहनी

1915 ई. में पंजाब के एक छोटे से शहर रावलपिंडी में भीष्म साहनी का जन्म हुआ। देश के बंटवारे के समय रावलपिंडी में भयानक सांप्रदायिक दंगे हुए। भीष्मजी वहाँ से बंबई पहुँच गए और अपने बड़े भाई बलराज साहनी के साथ रहने लगे। लेखन, पत्रकारिता तथा रंगमंच के निकट संपर्क में आने का उन्हें यहीं अवसर मिला। मुंबई से आकर दिल्ली के एक कॉलेज में प्राध्यापक होने के बाद इनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास हुआ।

चीफ की दावत

मि. शामनाथ के घर में उनके चीफ की दावत है। तैयारियों के बीच सहसा इस बात पर ध्यान जाता है कि बूढ़ी माँ को मेहमानों की निगाह से कैसे बचाया जाए। पत्नी यह योजना भी बनाती है कि माँ को पड़ोसी के घर भेज दिया जाए। लेकिन अंततः उनकी कोठरी के सामने एक कुर्सी पर शामनाथ उन्हें चुप रहने की बात सिखाकर पार्टी में लग जाता है। माँ अपमान और उपेक्षा के इस भाव को खूब समझती है, पर वही करती है जो बेटे ने उसे समझा रखा है।

शराब का दौर समाप्त होने पर जब लोग भोजन के लिए अंदर आते हैं, माँ कुर्सी पर बैठे-बैठे सो चुकी होती है और उसकी नाक से खर्राटे की आवाज आती रहती है। शामनाथ बेहद लज्जित होकर माँ को जगाता है और अपनी माँ से चीफ को मिलाता है। उन्हें लोकगीत सुनाने के लिए बाध्य करता है। तभी साहब पंजाब की दस्तकारी की बात उठाता है और बूढ़ी माँ अपनी एक पुरानी फुलकारी दिखाती हैं। साहब उसकी तारीफ़ करता है। शामनाथ वादा करता है कि माँ उनके लिए फुलकारी बना देंगी।

दावत समाप्त होने पर शामनाथ माँ को जगाता है। वे बेहद डरी हुई हैं लेकिन शामनाथ से कहती हैं कि अब हरिद्वार चली जाऊँगी। शामनाथ बताता है कि माँ तुम फुलकारी नहीं बनाओगी तो मेरी तरक्की रुक जाएगी। माँ बेटे की तरक्की की बात सुनकर फुलकारी बनाने के लिए तैयार हो जाती है।

रामकुमार वर्मा

रामकुमार वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य के एकांकी सम्राट के रूप में समादृत हैं। उन्होंने नाट्य साहित्य को जन-जीवन के निकट पहुँचा दिया। नाटककार, कवि, समीक्षक, अध्यापक, हिंदी साहित्येतिहासकार आदि क्षेत्र में अपनी भूमिका निभा दी। उनका जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 25 सितंबर 1904 को हुआ। 'पृथ्वीराज की आँखें', चारुमित्रा विभूति, सप्तकिरण आदि उनके प्रमुख एकांकी-संग्रह हैं। कबीर का रहस्यवाद, इतिहास के स्वर, साहित्य समालोचना, अनुशीलन, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास आदि उनके गद्यसंग्रह हैं। 'बादल की मृत्यु' उनका पहला एकांकी है। कविता के क्षेत्र में वर्मा ने एक आध्यात्मिक साधक के रूप में प्रेम को साधना का माध्यम बनाया। उसके आधार पर रहस्यवादी शैली की प्रेमाभिव्यंजना की। भाषा की दृष्टि से वर्मा कुशल और सजग शब्द-शिल्पी हैं। नाटकों में चित्रधर्मिता के समावेश ने भाषा में गहन प्रभावान्विति पैदा की तो काव्यात्मक स्तर पर उनकी कल्पनाशील भाषा ने रमणीय और देशकाल की सीमाओं से परे काव्यानुभवों को रचा। लेकिन भाषा की अतिरिक्त साज-संवार के मोह में गढ़े गए दीर्घ संवादों ने प्रायः उनके नाटकों के स्वाभाविक प्रवाह को अवरुद्ध भी किया।

संस्मरण

संस्मरण वर्णनप्रधान कथेतर गद्य विधा है। संस्मरण का स्रोत स्मृतियाँ हैं। जीवन की कुछ बीती घटनाओं की सुखद या दुखद स्मृतियाँ अंतर्मन में रहा करती हैं। बाद में इन स्मृतियों को लिपिबद्ध किया जाता है जिसे संस्मरण कहा करते हैं। अतः संस्मरण लेखक की अपनी जीवनी के उल्लेखनीय क्षणों का लेखा होता है। संस्मरण जीवन के समूचे

अनुभवों पर आधारित नहीं, कुछ विशेष स्मृतियों पर आधारित है। संस्मरण वर्णन प्रधान है, लेकिन यह वर्णन स्मृति से संबद्ध है। इसमें सजीव पात्रों के बाहरी रूप के साथ साथ आंतरिक चरित्र का भी वर्णन है। अंग्रेज़ी में इसे 'मेम्मयर' कहा करते हैं।

* संस्मरण आपबीती या अनुभूत सत्य का कथन है।
* संस्मरण में स्मृतियों को शब्दबद्ध किया जाता है।
* संस्मरण में संवेदनात्मक चित्रण होता है।
* संस्मरण में संवादात्मक चित्रण आवश्यक है।

सूरदास

सूरदास का 'सूरसागर' हिंदी के कृष्ण भक्तिकाव्यों का सिरमौर ग्रंथ है। बालक कृष्ण को उन्होंने अपना इष्टदेव मानकर स्तुति की। 'सूरसागर' उनका विशाल काव्य ग्रंथ है। कहा जाता है कि सूरदास ने एक लाख पदों की रचना की है। मगर 'सूरसागर' में छः हज़ार के लगभग पद ही संकलित किए गए हैं। स्नेह, वात्सल्य, ममता और प्रेम के जितने भी रूप मानवीय जीवन के मिलते हैं लगभग सभी का सूर ने चित्रण किया है। सागर की तरह विस्तार और गहराई सूर के काव्य में है। वात्सल्य को रस कोटि तक पहुँचाने में उन्हें अद्‌भुत सफलता मिली।

'सूरसागर' के महत्वपूर्ण प्रसंग है 'विनय', 'बालकृष्ण' और 'भ्रमरगीत'। 'विनय' के पद में सूर की भक्ति भावना उमड़ पड़ी है। कवि कृष्ण को समदर्शी बताकर अपने उद्‌धार की विनती करते हैं। सच है सूरदास ने बालकृष्ण की क्रीड़ाओं का वर्णन करते हुए वात्सल्य रस की अमृतधारा ही बहाई।

सूरदास की भाषा ब्रज है। गीतप्रधान पदों में उपमा अलंकार की छटा दर्शनीय है। सूरदास हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कृष्णभक्त कवि हैं।

सुमित्रानंदन पंत

हिमालय के अंचल में अल्मोड़ा से पच्चीस मील उत्तर की ओर स्थित कौसानी नामक एक पर्वतीय गाँव में पंत का जन्म हुआ था। असहयोग आंदोलन से उनकी पढ़ाई छूट गई। फिर स्वतंत्र रूप से ही उन्होंने संस्कृत, अंग्रेज़ी, हिंदी आदि का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने रूपाभ नामक एक मासिक पत्र भी चलाया था। मद्रास में रहकर कल्पना नाम के चलचित्र में काम किया था। पांडिचेरी के श्री अरविंदाश्रम में भी रहे थे। रेडियो में भी कुछ वर्ष तक काम करते रहे।

पंत हिंदी के युग-निर्मता कवि हैं। उनकी काव्य-कला समय के साथ-साथ निरंतर बदलती रही है। उनकी प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति का सौंदर्य चित्रित हुआ है। इसीके साथ उन्होंने मानव-सौंदर्य का भी सुंदर वर्णन किया है। फिर वे अध्यात्मवाद या छायावाद की ओर प्रवृत्त हुए। इसमें उन्होंनें मानव-जीवन के सुख-दुःख के विविध चित्र अंकित किए। तत्पश्चात् वे मार्क्स और मानवतावाद को लेकर कविताएँ लिखते रहे। उसके बाद वे प्रयोगवाद की ओर झुके। इसप्रकार उनकी कविता में आधुनिक हिंदी कविता का पूरा युग चित्रित हो गया है।

ममता कालिया

ममता कालिया का जन्म 1940 ई में मथुरा (उ.प्र) में हुआ था। विभिन्न महानगरों में रहकर उन्होंने जीवन संघर्ष के विभिन्न पक्षों का गहरा अनुभव किया है। ममता ने कथा साहित्य, काव्य रचना, नाट्य लेखन तथा एकांकी लेखन में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का अच्छा परिचय दिया है। ममता नारी संवेदना के विविध पक्षों को अपनी रचनाओं में उजागार करती हैं। उनके एकाँकी की कथावस्तु जीवंत अनुभवों से ही निर्मित है।

'यहाँ रोना मना है' - एक नारी की तनावपूर्ण परिस्थितियों में पीड़ाबोध को मुखरित करनेवाला एकाँकी है। नारी स्वातंत्र्य के नारों और उद्‌घोषणाओं के बावजूद नारी अब भी पारिवारिक सीमाओं में परतंत्रता तथा यातना का जीवन जीने के लिए विवश है। नारी की यातना में पुरुष की अपेक्षा नारी की भूमिका कम नहीं है। इस एकाँकी में परिवार में नारी की स्थिति का मार्मिक चित्रण करुणा के माध्यम से किया गया है। कालिंदी जहाँ मैके में निश्चिंत एवं आज़ाद रहते हुए सहेलियों के बीच उल्लास एवं उमंग का गीत गाती है, वहाँ ससुराल आकर दबावों का जीवन जीती है। उसका पति भी उसपर हँकड़ी जमाता है और उसे प्रताड़ित करता है। परिवार के सभी सदस्य हिंस्त्र जानवर की तरह उसपर टूटते रहते हैं। वह अपनी माँ की मृत्यु का न तो शोक मना पाती है और न मायके जा पाती है। उल्टे देवर के विवाह में उसे गाने और नाचने के लिए विवश किया जाता है। वह अंततः आवेश में नाचती है और अचेत होकर गिर जाती है।

एकाँकी का कथानक बहुत ही चुस्त तथा सशक्त है। बीच-बीच में गीतों की योजना से कथानक रसात्मक तथा मार्मिक हो जाता है। उल्लास एवं राग-रंग के बीच से फूटती हुई करुणा एकाँकी को अत्यंत प्रभावशाली बना देती है। इसमें घटना दो स्थानों में घटित होती है।

बिहारीलाल

बिहारी रीतिकाल के रीतिसिद्‌ध कवि हैं। इनका जन्म 1575 में ग्वालियर में हुआ था। इनका अधिकांश जीवन मथुरा में व्यतीत हुआ। यहाँ उनका ससुराल था। बिहारी के गुरु बाबा नरहरिदास कहे जाते हैं जो कि वृंदावन में बाबा नागरिदास की कुटी में रहते थे। सन् 1619 में

जहाँगीर अपने पुत्र शाहजहाँ के साथ वृंदावन गए थे। उस समय बिहारी भी वहाँ थे। शाहजहाँ उन्हें अपने साथ आगरा ले आए। आगरा में बिहारी ने फारसी-उर्दू का भी अध्ययन किया और उनकी भेंट कविवर रहीम से हुई। फिर वे आगरा छोडकर आमेर आ गए। आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह के यहाँ एक बार बिहारी पहुँचे। राजा अपनी नवेली दुल्हन के प्रेम में बुरी तरह आसक्त था। इन्होंने उस समय अपने काव्य-कौशल से काम लिया और निम्नलिखित दोहा लिखकर भेजा-

नहिं पराग नहिं मधुर-मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली-कली ही सो बाँध्यो, आगे कौन हवाल।।

राजा को होश आया। खुश होकर उन्होंने बिहारी को अपना दरबारी कवि नियुक्त किया। इसप्रकार बिहारी का जीवन बुंदेलखंड, मथुरा, आगरा और जयपुर में व्यतीत हुआ और इनका देहावसान सन् 1663 ई के आसपास हुआ। बिहारी एक सजग कलाकार हैं। वे अनुराग के कवि हैं। वे संयोग श्रृंगार में जितने रमे उतने वियोग श्रृंगार में नहीं। उन्होंने स्वच्छंद रूप के अलंकारों का प्रयोग किया। प्रायः उनके प्रत्येक दोहे में शक्ति वैचित्र्य के साथ अलंकार का इंद्रधनुषी योजना हुई है। छोटे-छोटे आकार के छंदों में बड़े-बड़े भावों को भर देने के कारण कह जाता है कि वे गागर में सागर भरते हैं। बिहारी की भाषा चलती हुई ब्रज भाषा का साहित्यिक रूप है।

एस.आर. हरनोट

हिंदी कथासाहित्य के लिए हिमाचल पहाड़ी ग्रामांचल का एक वरदान है एस. आर. हरनोट। पहाड़ी गाँवों के परिवेश में लिखी गई उनकी कहानियों में पर्वतांचल के आवरण में संपूर्ण भारतीय जीवन के किसी न किसी विषय पर विचार है। दरअसल हरनोट एक ओर हिमाचल

संस्कृति के चितेरे हैं। तो दूसरी ओर पोस्टमॉर्डन कल्चर के। दारोश, जानकाठा, एम. डॉट. कॉम, मोबाइल, सवर्ण देवता दलित देवता, माँ पढ़ती है, मिट्‌टी के लोग, अ-मानव, दीवारें आदि हरनोट की प्रमुख कहानियाँ हैं। पर्वतांचल की रूढ़ियों, परंपराओं और अंधविश्वासों में आबद्‌ध होकर आसुरी संस्कृति की उपासना करनेवाली जनजाति की कथा दारोश में कही गई है।एम. डॉट. कॉम में पहाड़ी इलाकों में अपना झंडा फहरानेवाली उत्तराधुनिक मशीनी संस्कृति का अनावरण है। 'मोबाइल' कहानी में हमारी बहु-बेटियों को भी खरीदने को तैयार खड़े भूमंडलीकृत उपभोक्ता विज्ञापनबाजी संस्कार का पर्दाफाश है।

हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी इलाके में रहनेवाली एक माँ के जीवन की एक घटना के सहारे अविकसित गाँवों में भी टेक्नोलाजी की घुसपैठ और हुकूमत की कहानी कही गई है एम. डॉट. कॉम में। माँ विधवा थी, दो बेटे थे, दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त करके शहर में नौकरी कर रहे हैं। गाँव की गंध उन्हें पसंद नहीं, फिर भी कभी कभार गाँव आया करते हैं। माँ अकेले घर का सारा काम संभालती थी। एक दिन माँ अत्यंत उदास दिखने लगी क्योंकि उसने अपनी गोशाला में एक भैंस की लाश देखी। माँ के सामने अब उस लाश को निकालने की समस्या आई। परंपरागत रूप से ऐसा काम चमार करता था। माँ के यहाँ भी परसा नाम का एक चमार आया करता था, अब उसको आए अनेक वर्ष बीत गए। वर्षों पहले माँ एक बार परसा के घर गई थी। माँ बस पकड़कर परसा के घर पहुँच गई। उस गाँव में, वहाँ के निवासियों और उनके निवास स्थानों में आए बदलाव का माँ ने साश्चर्य अनुभव किया। परसा बाहर निकल आया, बुढ़ापे ने उसकी क्षमता पर लगाम डाल रखा था। उसने सादर माँ के बुलावे का तिरस्कार किया और कहा कि चौराहे में उसके बेटे महेंद्र की दूकान है, वह सहायता करेगा। पूर्व परिचित नाई बुधराम की सहायता से माँ महेंद्र की दूकान पहुँच गई। युवा महेंद्र ने माँ पर ध्यान नहीं

दिया। बुधराम के कहने पर महेंद्र ने कंप्यूटर में कुछ ढूँढ़ा और कहा कि माँ का नाम और जानवरों की संख्या उस कंप्यूटर में अंकित नहीं। माँ को अपने जानवरों का विवरण कंप्यूटर में रजिस्टर करना है। फिर अपने कंप्यूटर के माध्यम से ई-मेल करना है ताकि महेंद्र के लोग भैंस को निकाल देंगे। माँ ने कुछ समझा नहीं, सड़क पर खड़ी निराश माँ की नज़र दूकान पर पड़ी। नाम लिखा था - एम.डॉट कॉम।

अरुण कमल

अरुण कमल तीव्र अनुभूतियों और अनुभूत सच्चाइयों के कवि हैं। आज हम जिस परिवेश में, जिस जीवन को जी रहे हैं, उस परिवेश एवं जीवन के विभिन्न आयामों और विसंगतियों को कवि ने कलात्मक रूप प्रदान किया है, अपनी कविताओं के ज़रिए। अरुण कमल की कविताएँ चाहे किसी भी विषय की हो, संपूर्ण मानव स्थिति और नियति से संचालित है। इसलिए उनकी छोटी कविताओं का अंतर्पाठ भी व्यापक एवं सार्थक है। अरुण कमल की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता उसमें अंतर्निहित नैतिकता है। उनकी कविता में बदलती दुनिया आई है। साथ साथ इन बदलाओं के कारण खोए मूल्यों के प्रति अकुलाहट भी। अरुण कमल की कविता में अभावग्रस्त मध्यवर्ग की त्रासदी की उरस्पर्शी अभिव्यक्ति भी है। समय की निसंगता एवं अमानवीयता पर विरोध एक ओर है तो दूसरी ओर छली राजनीति का पर्दाफाश। सार्वभौमिकता अरुण कमल की कविता की और एक खासियत है। वे अपनी पुतली में संपूर्ण संसार को समेटना चाहते हैं। अतः अरुण कमल की कविता में अपने समाज को लगातार खोजते, उद्घाटित करते, सामाजिक विसंगतियों को जानने-पहचानने की कोशिश है।

नए इलाके में

इस उत्तराधुनिक ज़माने में विकास के नाम नई नई बस्तियों, इमारतों और लंबी-चौड़ी सड़कों का निर्माण किया जा रहा है। गाँव शहर बनते चले जा रहे हैं। इस द्रुत-परिवर्तन में चिरपरिचित जगहें भी हमें अपरिचित लग जाती हैं। कवि अपने पुराने दोस्त से मिलने उसके घर के पास पहुँच गया जिस घर में वह अनेक बार आया करता था। लेकिन द्रुत विकास में वह 'पुराना इलाका' नया इलाका हो गया और कवि रास्ता भूल जाता है। उस घर को पहचानने में जो पुराने निशान थे, विकास प्रक्रिया में अदृश्य हो गए। क्योंकि वर्तमान भूमंडलीकृत उत्तराधुनिक युग में रोज़ कुछ बन रहा है और कुछ घट रहा है। इस मोबाइल युग में स्मृतियों का कोई भरोसा नहीं। कवि को यहाँ आए घंटे बीत गए, चारों ओर काले काले बादल छा गए थे, वर्षा होने की संभावना थी। कवि असमंजस में पड़ गया। विकास के नाम पर आई भूमंडलीकृत उत्तराधुनिक विसंगतियों ने, सुख-सुविधाओं ने पुराने मूल्यों की तिलांजली की कि सुपरिचित इलाके भी हमारे लिए अपरिचित हो जाते हैं और हम पथ भ्रष्ट।

⌘⌘⌘⌘